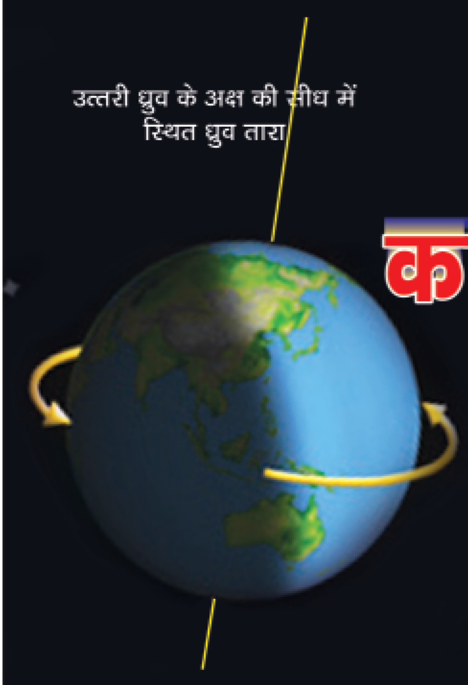

ॐ

कान्यकुब्ज वाणी

2016

जुड़ने और जोड़ने के लिए

।। नटराज स्तुति।।

सत सृष्टि तांडव रचयिता
नटराज राज नमो नमः।।।
हेआद्य गुरु शंकर पिता
नटराज राज नमो नमः।।।
गंभीर नाद मृदंगना
धबके उरे ब्रह्मांडना
नित होत नाद प्रचंडना
नटराज राज नमो नमः।।।
शिर ज्ञान गंगा चंद्रमा
चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां
विषनाग माला कंठ मां
नटराज राज नमो नमः।।।
तवशक्ति वामांगे स्थिता
हे चंडिका अपराजिता
चंहु वेद गाए संहिता
नटराज राज नमोः।।।।

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी (अ.प्र.)
६/१६६ विनीत खन्ड, गोमती नगर
लखनऊ-२२६०१०

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी
(अ०प्रा०)

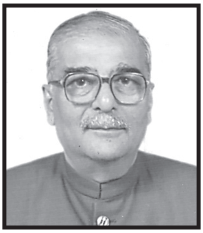

सन्देश

कान्यकुब्ज सभा एक आदर्श संस्था के रूप में स्थापित हो चुकी है । इस संस्था के सभी सदस्य जिस प्रेमभाव तथा एक जुटता के साथ मिल कर आदर्श समाज स्थापित करने तथा समाज के सभी वर्गो के उत्थान के लिये निरन्तर प्रयासरत है। इसके लिय सभी सदस्य बधाई के पात्र है। मै संस्था के सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करते हुए आवाहन करता हूँ कि इसी तरह अपनी संस्कृति तथा कान्यकुब्ज सभा का उद्देश्य को ध्यान में रखकर देश के विकास, एकता एवं अखण्डता के लिये अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करते रहें ।

मैं इस बात से परचित हूँ कि आप सभी संस्था के प्रति चिन्तित हैं। परन्तु सत्यता यह भी है कि प्रगति की दौड़ में तीव्रता की बहुत कमी है। इसके कई कारण हैं, जिसमें से एक मुख्य कारण आर्थिक साधनों का अभाव है, क्योंकि हमारे सदस्यों की संख्या कम है। अतः हम सभी को नये सदस्यों को भी संस्था के साथ जोड़ने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। संस्थान को समाज की गरीब लड़कियों को शिक्षा के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। उनका उचित मार्ग-दर्शन भी करना होगा, जिससे कि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

अन्त मे आप सभी को सम्वतसर की शुभकामना।

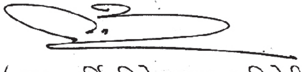

(न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी)

देवेन्द्र नाथ दुबे
आई.ए.एस. (से.नि.)

20/31 इन्दिरा नगर,
लखनऊ-226016
मो० : 09415408018
फैक्स : 0522–2349593
ई-मेल : dubey_dn31@yahoo.co.in

दिनांक : 18-01-2015

प्रिय डॉक्टर शुक्ल जी,

आपके स्नेह पूर्ण आग्रह के वशीभूत होकर मैंने ''अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा, लखनऊ'' तथा ''कान्यकुब्ज वाणी'' की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। आपके आग्रह का उल्लेख इसलिए आवश्यक है क्योंकि आपके आग्रह का प्रकार ऐसा था मानो आप स्वयं के लाभ के लिए कुछ कह रहे हों। समाज की भलाई के लिए निस्पृह भाव से किये जाने वाले कार्य के प्रति इतना समर्पण कम ही दृष्टिगोचर होता है और आपका यह भाव अनुकरणीय और अत्यन्त सराहनीय है। संस्था से जुड़ने के पश्चात, इसके कार्यक्रमों में सहभागिता करने और ''कान्यकुब्ज वाणी'' के कतिपय अंकों के पाठन के उपरान्त आपके प्रति मेरा यह भाव और प्रबल हुआ है।

प्रजातन्त्र के नाम पर जिस ''वोट तंत्र'' ने व्यवस्था पर कब्जा कर लिया है उसमें ऐसी भावना पनपने के पूर्ण अवसर हैं कि मानो ब्राह्मण कुल में जन्म होना पाप और दोष है। ऐसे वातावरण में हमें बहुत गम्भीरता के साथ संगठित रहते हुए अपनी अस्मिता बनाए रखनी है केवल स्वयँ के लिए नहीं अपितु उससे भी अधिक आवश्यक है समाज और देश के लिए क्योंकि हमारे ''जींस'' में समाज कल्याण की भावना ''स्वयं-कल्याण'' से पहले स्थान पाती है और इतिहास गवाह है की हमने सदैव समाज को उचित राह दिखाई है। इस दृष्टि से ''वाणी'' की सामग्री का संग्रह और प्रस्तुतीकरण दोनो ही लाघनीय हैं, विशेष रूप से हमारे सीमित संसाधनों के मद्देनजर।

सम्मान के साथ आपको, सभा को और पत्रिका को शुभकामनाएँ।

सादर,

करेषु,
डॉक्टर डी० एस० शुक्ला

डा० आर.के. त्रिपाठी
डेंटल-सर्जन
आजीवन सदस्य 'कान्यकुज-वाणी'

प्रिय डॉ० शुक्ला,

मुझे खोज कर 'कान्यकुब्जवाणी' भेजने के लिए धन्यवाद।

सीमित संसाधनों में पत्रिका का कलेवर, उसमें दी गई कहानियाँ, लेख-खासकर स्वास्थ्य संबंधी लेख पत्रिका को एक स्तर प्रदान करते हैं। अद्ययतन अंक में तिलक शुक्ल, रायबरेली की रचना 'शिखंडी' दिल को छू गई। शास्त्रों में वर्णित अर्ध-नारीश्वर की परिकल्पना को अन्तःस्राव (हार्मोन्स) के प्रभाव द्वारा पुष्ट किया गया है। युद्ध की कूटनीति, बहन की राजनीतिक महत्वाकांक्षा के बीच सुकोमल भावनाओं वाला शिखंडी कितना मानसिक त्रास झेलता है, का सुंदर चित्रण है।

इस संदर्भ में मुझे एक अन्य पौराणिक पात्र राजा 'इल' का स्मरण होता है जो कुछ समय स्त्री रूप 'इला' में भी रहा। इसके पीछे भी संभवतः हार्मोन्स का केमिकल लोचा रहा होगा।

सद्‌भावनाओं सहित

C-206 Aditya Doonshire Sailok
GMS Road, Deharadoon
Mob. 9761174062
Uttara Khand-248001

❍❍❍

सम्पादकीय

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

एक विचार जो बहुत दिनों से मन को साल रहा था– 'कहीं कान्यकुब्ज व अन्य ब्राह्मणों की अलग सभाये समाज में अलगाव की प्रक्रिया तो नहीं है....?' अगले ही क्षण समाधान मिला 'माला का हर मनका यदि स्वयं को सुंदर बनाने का प्रयास करे तो पूरी माला सुंदर होगी।' 'जुड़ने और जोड़ने के लिए' बनी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा पूरी तरह से सांस्कृतिक और सामाजिक संस्था है जिसके मुख-पृष्ठ के रूप में 'कान्यकुब्ज वाणी' पत्रिका प्रकाशित की जाती है। यह सभी ब्राह्मणों के एकजुट करने का एक प्रयास है। अब कान्यकुब्ज से इतर कई ब्राह्मण महानुभाव इस सभा व 'वाणी' के सक्रिय सदस्य हैं।

'वाणी' के प्रकाशन में मेरे एकल प्रयास को देख कर श्री डी० एन० दुबे जी ने श्री कुमार सौवीर को पत्रिका को सँवारने का दायित्व सौंपा। ऐसी सकारात्मक सोंच, और सहयोग के लिए श्री दुबे जी व कुमार सौवीर को कोटिशः साधुवाद। इस अंक में एकलव्य और दहेज पर लीक से हट कर चर्चा पर सुधी पाठकों के विचारों का स्वागत है। गत वर्ष हमारे लिए बहुत अच्छा नहीं रहा। इस वर्ष हमने कई विभूतियों को खो दिया। इनमे हमारे सम्माननीय परम आदरणीय 'कन्याकुब्ज शिरोमणि' व 'पद्म-विभूषण' पं० रामकृष्ण त्रिवेदी जी, वयोवृद्ध साहित्यकार 'कान्यकुब्ज-रत्न' पं गंगरत्न पांडे, 'कान्यकुब्ज-रत्न' डॉ० सरला शुक्ल, डॉ० विमल भट्टाचार्या, 'कान्यकुब्ज-वाणी' के 'विशिष्ट सदस्य' पं० विनोद बिहारी दीक्षित जी (दीक्षित जी होली-मिलन कार्यक्रम हेतु प्रतिवर्ष आर्थिक योगदान देते थे), पं० अश्वनी कुमार बाजपेयी व श्रीमती सुधा बाजपेयी का देहांत बहुत दुखी कर गया। श्री विनोद कुमार दीक्षित 'बिन्नू' के युवा पुत्र एस विपिन दीक्षित (जो हाल में ही सी० एस हुए थे), का असमय निधन हृदय को विदीर्ण कर गया। बाजपेयी दंपति ने दधीचि की परंपरा पर चलते हुए चिकित्सा छात्रों के अध्ययन हेतु अपना शरीर दान कर, तथा विपिन दीक्षित ने मृत्योपरांत अपने नेत्र-दान कर एक मानवीय परंपरा की नीव रखी। गत वर्ष हम सबकी ही नहीं पूरे विश्व की एक महान विभूति भी प्रयाण कर गई। आधुनिक समय के महर्षि माने जाने वाले, अब्दुलकलाम जी भी हमारे बीच नहीं रहे। हम इन सभी को नमन करते हैं और अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सुख और दुख ऋतुओं की भांति आते और जाते रहते हैं। अतएव हमें वर्तमान में रहते हुए भविष्य की ओर सकारात्मक भाव रखना चाहिए। इसी शुभेक्षा के साथ 'कान्यकुब्ज-वाणी' का अद्यतन अंक आपको समर्पित है।

• डॉ डी०एस० शुक्ला
18/378, इन्दिरा नगर, लखनऊ
मो० 9415469561
ई-मेल : dsumeshdp@rediffmail.com

❍❍❍

क्यों आते हैं भूकम्प

प्रो० (डा०) पी० पी० त्रिपाठी,
इमेरिटस प्रोफेसर, बलरामपुर।

लीजिये! अब मणिपुर में भी विनाशलीला मच गयी भूकम्प में लोग मारे गये और हजारों बेघर हो गये।

दूसरा- आखिर क्यों डोलती है धरती....?

पूर्व नेपाल में भी तहस-नहस कर दिया था भूकम्प ने जहां दस हज़ार से ज़्यादा लोग मारे गये और पूरा देश उलट-पलट गया। आइये, अब देखते हैं कि आखिर धरती क्यों इस कदर हाला डोला मचाती है।

हमारी धरती मुख्य तौर पर चार परतों की बनी हुई है। आन्तरिक भाग इनर कोर कहलाता है तथा इसे चारों तरफ से घेरे हुए भाग को आउटर कोर कहते है। इन भागों के चारों तरफ मेंटल ओर कस्ट पाया जाता है। इनर कोर और मेंटल की परतें एक गाढ़े तरल पदार्थ जिसे मैग्मा कहते हैं तैरती रहती है। क्रस्ट तथा आऊटर मेंटल को लिथोस्फंमर कहते है। लिथोस्फेयर लगभग **50** Km (पचास किलोमीटर) की मोटी परत, वर्गो में बंटी हुई है, जिन्हे टेक्टोनिक प्लेट्स कहा जाता है। आउटर कोर और मेंटल में कई टुकड़ों में टूटी हुई प्लेटें भी होती हैं जो तैरती रहती है। सामान्य रूप से ये प्लेटें **10—40** मिलीमीटर प्रति वर्ष की गति से गतिशील रहती हैं हालांकि इनमें कुछ की गति **160** मिलीमीटर प्रति वर्ष भी होती है। जब भी ये प्लेटे गतिशील होती हैं तो आपस में टकराती है। इन प्लेटों के टकराने से ही तरंगे पैदा होती हैं। यही नही इन्ही प्लेटों के एक दूसरे से टकराने के बाद यह एक दूसरे के ऊपर चढ़ने लगती है। जिसके परिणाम स्वरूप ज्वालामुखी उत्पन्न होता हैं जिसके फलस्वरूप तरल पदार्थ मैग्मा लावा में ऊपर में बड़े वेग से पृथ्वी के बाहर निकालने लगता है जिसका तापक्रम बहुत ही अधिक होता है।

सामान्यता इन प्लेटों में बड़ी प्लेटों की संख्या सात मानी जाती है। ये प्लेट्स मुख्य रूप से अफ्रीकी प्लेट्, यूरेशिमाई प्लेट्, उत्तर अमेरिकी प्लेट् दक्षिण अमेरिकी प्लेट्, प्रशांत प्लेट्, हिन्द-आस्ट्रेलियाई प्लेट् और अंटार्कटिक प्लेटस्।

भूकम्प पृथ्वी की परतों के आपस में टकराने से उत्पन्न हुई ऊर्जा के कारण आता है। उन प्लेटों के टकराने से सिस्मिक तरंगे उत्पन्न होती है, जो भूकम्प का मुख्य कारण है। इसी के चलते भूकम्प को रिकार्ड करने के लिए सिस्मोमीटर का इस्तेमाल किया जाता है इसलिए भूकम्प के अध्ययन को सीस्मोग्राफी कहते है। भूकम्प को मापने के लिए रिक्टर स्केल का प्रयोग किया जाता है। तीन या इससे कम रिक्टर स्केल का अक्सर कोई नुकसान नही होता है। लेकिन सात के ऊपर के **09** तीव्रता के भूकम्प

तबाही ला सकते है, जैसा कि हाल ही में नेपाल में देखा गया। वही जब प्लेटें समुद्र तल के नीचे या समुद्र तल के पास में टकराती है, तो सुनामी जैसे भीषण आपदा को उत्पन्न करती है, जैसा कि जापान में हुआ।

भूकम्प के कारण होने वाले नुकसान के लिए कई कारण जिम्मेवार हो सकते है। जैसे घरों की खराब बनावट, खराब संरचना, भूमि का प्रकार, जनसंख्या बसावट आदि।

भारतीय उपमहाद्वीप में भूकम्प का खतरा हर जगह अलग अलग है। भारत को भूकम्प के क्षेत्र के आधार पर चार हिस्सों जोन 2, जोन 3, जोन 4, तथा जोन 5, में बाँटा गया है। जोन 2, बहुत कम खतरे वाला जोन तथा जोन 5 को सर्वाधिक खतरनाक जोन माना जाता है। उत्तर -पूर्व के सभी राज्य जम्मू - कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड के कुछ भाग जोन 5 में आते है। उत्तराखण्ड के कम ऊँचाई वाले हिस्से से लेकर उत्तर प्रदेश के ज्यादातर हिस्से तथा दिल्ली जोन 4 में आते है। मध्य प्रदेश कम खतरे वाले हिस्से जोन 3 में आता है अबकि दक्षिण के ज्यादातार हिस्से सीमित खतरे वाले जोन 2 में आतें है। राजधानी दिल्ली में कई इलाके जोन 5 में हो सकते है। भारत में लातूर (महाराष्ट्र), कच्छ (गुजरात), जम्मू कश्मीर में बेहद भयानक भूकम्प आ चुके है। इसी तरह इंडोनेशिया और फिलीपींस के समुद्र में आये भयानक भूकम्प से उठी सुनामी भारत, श्रीलंका, और जापान तक लाखों लोगो की जान ले चुकी है।

भूकम्प की तीव्रता का अंदाजा उसके केन्द्र (एपीसेंटर) से निकलने वाली ऊर्जा की तरंगो से लगाया जा सकता है। सैकड़ों किलोमीटर तक फैली इस लहर से कंपन होता है। और धरती में दरारे तक पड़ जाती है। अगर भूकम्प की गहराई उथली हो तो इससे बाहर निकलने वाली ऊर्जा सतह के काफी करीब होती है जिससे भयानक तबाही होती है। लेकिन जो भूकम्प धरती की गइराई में आते है। उनसे सतह पर ज्यादा नुक्सान नही होता है। समुद्र में भूकम्प आने पर सुनामी उठती है। पिछले दिनों जापान के नजदीक समुद्र आये भूकम्प से उठी सुनामी ने भयानक तबाही मचाई थी।

भारत में भूकम्प आने का कारण यूरेशियन प्लेट तथा भारतीय (हिन्द) प्लेट के टकराने से होता है।

❍❍❍

भूकम्प क्यों आते है की निरंतरता से...

EARTHQUAKE RISK REDUCTION

❑ Er. A.K. Misra

PREVENTIVE AND MITIGATION MEASURES

When earthquake strikes a building is thrown mostly from side to side, and also up and down along with the building foundation the building structure tends to stay at rest, similar to a passenger standing on a bus that accelerates quickly. Building damage is related to the characteristics of the building, and the duration and Severity of the ground shaking. Larger earthquakes tend to shake longer and harder and therefore cause more damage to structures.

Pre- Disaster Preventive Measures

Long-term Measures

- Re-framing buildings codes, guidelines, manuals, and bylaws and their strict implementation. Tougher legislation for highly seismic areas.
- Incorporating earthquake resistant features in all buildings at high-risk areas.
- Making all public utilities like water supply systems, communication networks, electricity lines etc.Earthquake-proof. Creating alternative arrangements to reduce damages to infrastructure facilities.
- Constructing earthquake-resistant community buildings and buildings (used to gather large groups during or after and earthquake) like schools, dharamshalas hospitals, prayer halls, etc. especially in seismic zones of moderate to higher intensities.

Medium term Measures

- Retrofitting of weak structures in highly seismic zones.
- Preparation of disaster related literature in local languages with dos and don'ts for construction.
- Getting communities involved in the process of disaster mitigation through education and awareness.

- Networking of local NGOs working in the area of disaster management.

Post-Disaster Preventive Measures

- Maintenance of law and order, prevention of trespassing, looting etc.
- Evacuation of people.
- Recovery of dead bodies and their disposal.
- Medical care for the injured.
- Supply of food and drinking-water.
- Temporary shelters like tents, metal sheds etc.
- Repairing lines of communication and information.

Do's and Don't

Before an Earthquake

- Know well seismic zonation of our area, get your house evaluated for retrofitting (If any) and ensure expert civil engineer's help in making your house earthquake resistant .
- Pick couple of safe meeting places that are easy to reach. Practice Drop ,Cover and Hold on in each safe place at least once a month .
- Prepare and emergency kit and place it in a safe place .It should contain all necessary items for your protection and comfort, sufficient for at least three days .
- Till date prediction of earthquake is not possible .Don't listen to or spread rumours .

During an earthquake

- Don't panic; stay calm and keep others clam, take necessary action .
- Protect yourself, drop to the floor, take cover under a sturdy desk or table and hold on it so that it doesn't move away from you .Wait there until the shaking stops .
- Stay away from glass windows ,heavy furniture and anything that could fall, such as lighting fixtures or other similar items .

- If you are on the upper floor of the building ,don't jump from windows or balcony .Do not try and run out of a building ,you may be hit by falling debris .Stay inside till the shaking stops and check if it is safe to go outside .
- If you are outdoors ,find a clear spot away from buildings, trees ,electrical lines and narrow streets .Drop to the ground and stay there until the shaking stop .
- If you are in a vehicle, pull over to a clear location, stop and stay there with your seatbelt fastened until the shaking stops. Avoid bridges, flyovers or ramps that might have been damaged by earthquake .
- If in costal area ,move to higher ground and check tsunami warning .
- If you are in a hilly areas be alert and move away from slopes in case of landslides and falling rocks .

After an earthquake

- Check up : Radio, TV, online updates, social network for emergency information and safety guidance .
- Watch out for fallen power lines or broken gas lines and stay out of damaged areas .
- Don't enter partially damaged buildings. Strong aftershocks can cause further damage to the buildings and weak structures may collapse .
- Don't use your two-wheeler/car to drive around the area of damage. Rescue and relief operations need the road for mobility.
- Anticipate aftershocks ,if shaking lasts longer than usual .
- Leave a message stating where you are going if you must evacuate your residence .
- Evaluate damage and repair any deep cracks in ceiling, beam, column and foundation with the advice of an expert.

❍❍❍

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं० 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

आवरण-कथा

ध्रुव-तारा

एक खगोलीय तथ्य या मात्र गल्प?

हम सभी ने अपने बचपन में ध्रुव की कथा अवश्य सुनी होगी। बालक ध्रुव अपने पिता राजा उत्तानपाद की गोदी में बैठना चाहता था परंतु विमाता सुरुचि की भर्तस्ना से आहत हो जाता है। उसकी माँ सुनीति उसे बताती है की राजा की गोद से भी उच्च स्थान भगवत-कृपा से प्राप्त किया जा सकता है। श्रेष्ठ लोग अपमानित और आहत हो कर किंकर्तव्य-विमूढ़ हो कर हताश होकर नहीं बैठते। वह उद्यम कर उस स्थिति से आगे बढ़ते हैं और महान हो जाते।

ध्रुव अपनी माँ के कहने से तप करने के लिए वन को निकल तो पड़े, पर किसकी उपासन करें यह उस नन्हे बालक को ज्ञात ही नहीं था। महान तपस्वी देवर्षि नारद से उसकी मुलाकात होती है। पहले वह ध्रुव की अल्प आयु देख कर उसको इस भीषण साधना से विरत करने का प्रयत्न करते हैं, परंतु ध्रुव की दृढ़-शक्ति देख कर उसे भगवान नारायण के द्वादशाक्षर मंत्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करने को कहते हैं।

नारद तो हरिनाम जप करते निकल लिए मगर बालक ध्रुव तपस्या में लीन हो गये। आँधी तूफान शीत, ग्रीष्म ऋतु का सामना करते वह तपस्या करने लगे। उन्हें तपस्या से विमुख करने के लिए व परीक्षा लेने के लिए तमाम प्रलोभन देवताओं ने दिये, पर ध्रुव अटल रहे। कुछ समय बाद ध्रुव एक पैर पर खड़े होकर तपस्या करने लगे। कहते हैं कि उनका तप इतना भयानक था कि इनके पैर के अंगूठे के दबाव से धरती अपनी धुरी पर एक ओर झुक गई। ध्रुव की तपस्या से पृथ्वी और असंतुलित न हो जाय, भगवान विष्णु प्रकट हुए। ध्रुव को नारायण ने चक्रवर्ती सम्राट होने का आशीर्वाद दिया और कहा मृत्योपरांत तुम्हें आकाश में सबसे ऊंचा और अटल स्थान मिलेगा। चंद्रमा और सूर्य के साथ समस्त तारा-मण्डल तुम्हारी प्रदक्षिणा करेगा। ध्रुव धन्य हो गये; नारायण अन्तर्धान हो गये।

आगे का इतिहास सभी को ज्ञात है। ध्रुव चक्रवर्ती सम्राट हुए, उनकी राजधानी काशी हुई। काशी ध्रुव के समय और आने वाली कई पीढ़ियों तक वैष्णव रही।

आधुनिक पीढ़ियाँ पौराणिक कथाओं को 'गल्प' मानतीं हैं। कुएं में रहने वाले मेढ़क को सूर्य की ज्योति का भान नहीं होता। वह अपने अंधकार में ही गर्वान्वित रहता है। वास्तव में प्रत्येक पौराणिक कथा किसी न किसी सत्य को उजागर करती है। या उसकी व्यवस्था अपना इशारा करती है। जनसाधारण को समझाने और विश्वास करने के लिये देवी-देवताओं के माध्यम से बताया जाता है।

उपरोक्त ध्रुव-कथा द्वारा एक महत्वपूर्ण खगोलीय तथ्य बताने का प्रयास किया

गया है–

पृथ्वी अपनी ऊर्ध्वाधर धुरी पर २३ डिग्री पर झुकी है। उत्तरी ध्रुव के सीध में ही 'ख'(व्योम) में ध्रुव तारा स्थित है। अतः पृथ्वी के सापेक्ष उत्तर दिशा की ओर हमको ध्रुव हमेशा स्थिर दिखाई देता है। यह ध्रुव तारा हमारी आकाश–गंगा का केन्द्र है। इसके चारों ओर समस्त सौर मण्डल क्या पूरी आकाश–गंगा घूम रही है। जहां कही स्थिरता, दृढ़ता या सत्य–संकल्प होने का ज़िक्र होता है, ध्रुव का उद्धरण दिया जाता है। पति–पत्नी का संबंध अटल हो इसलिए वैवाहित कृत्यों में ध्रुव तारे के दर्शन की वैदिक परम्परा है।

संक्षेप में इस कथा के माध्यम से जनसाधारण को कितने महत्वपूर्ण खगोलीय तथ्य से परिचित कराया गया है कि 'पृथ्वी अपनी धुरी पर एक ओर झुकी है; सभी ज्योतिष और खगोलीय गणनाओं के लिए ध्रुव तारा वास्तव में ध्रुव (अटल) है, और सभी आकाशीय खगोल–पिंडों की परिक्रमा की धुरी है।'

ध्रुव तारे को इस प्रकार पहचाने–

उत्तर के आकाश में सप्तऋषि और लघु–ऋक्ष या छोटे भालू तारा मण्डल को लगभग सभी पहचानते हैं। गाँव में इन्हें क्रमशः बड़ा खटोला और छोटा खटोला भी कहते हैं। यह दोनों तारा–मण्डल उत्तरी आकाश में ध्रुव की परिक्रमा करते रहते हैं। सप्तऋषि के खाट के चार पाये सद्रश चार तारों के आगे की ओर के दो तारे ऋत और अत्रि कहलाते हैं। ऋत से अत्रि को मिलते हुये एक सीधी रेखा में आगे देखने पर एक साधारण प्रकाश का तारा दिखेगा, जो कि लघु ऋक्ष या छोटे खटोले की पूंछ के दोनों तारों की सीध में है, यही हमारा अटल ध्रुव है।

पृथ्वी के धरातल से ध्रुव की ऊंचाई से बने कोण को उस स्थान का अक्षांश कहलाता है। इस प्रकार रात्रि में दिशा ज्ञान के अलावा ध्रुव स्थान का अक्षांश पता करने के काम आता है।

- आधुनिक खगोलशास्त्र (astronomy) में हमारी आकाश–गंगा का केंद्र एक 'अजदहा या ड्रैगन' नाम का तारा माना गया है, जिसके चारों ओर हमारी आकाशगंगा घूम रही है। यह ड्रैगन तारा ध्रुव तारे के बहुत समीप है, परंतु दूरी के कारण हमें दिखाई नहीं देता।

❍❍❍

दहेज-अभिशाप या अभिशप्त?

❑ तिलक शुक्ल, रायबरेली

चौथी कक्षा पास करने के बाद गौरी को बेहतर शिक्षा का वातावरण मिले इसलिए वह रायबरेली से लखनऊ आ गए। रायबरेली के कालेज के ब्रहमदत्त की प्रिंसिपल शिप के दौरान अच्छे परीक्षाफल कि वजह से उन्हे वहाँ भी इंटर कालेज में वरिष्ठ अध्यापक की जगह मिल गई। शीघ्र ही प्रबंधन ने उन्हें प्रिंसिपल बना दिया। उस विद्यालय में सह-शिक्षा (को-एजुकेशन) थी इसलिए गौरी को भी उसी कालेज में दाखिला मिल गया। संभवतः ब्रहमदत्त के लखनऊ आने के पीछे एक मकसद यह भी था कि गौरी भी उन्हीं के विद्यालय में पढ़े और सह-शिक्षा में पढ़ कर मात्र 'लड़की' होने की झिझक मिट जाये। गौरी मेधावी थी, खेलकूद में भी भाग लेती थी। अच्छे कंठ होने के कारण सुबह की प्रार्थना सभा (एसेम्बली) में प्रार्थना भी लीड करती थी।

ब्रहमदत्त प्रशासनिक कार्यों के अलावा अपने विषय की कक्षाएं लेने के साथ ही यदि किसी कक्षा का कोई पीरियड खाली होता तो उसमें भी पहुँच जाते और सामान्य ज्ञान, नीति और नैतिक शिक्षा के अलावा ज्वलंत विषयों पर सरल और मनोरंजक शब्दों में छात्रों से चर्चा करते। इसके कारण वह छात्रों में भी लोकप्रिय थे। इन्हीं चर्चाओं पर साल में एक बार निबंध प्रतियोगिता होती, जिसमें बच्चे जोर शोर से भाग लेते।

ज़ाहिर है कि गौरी भी इनमें भागीदारी अवश्य करती। अपने पढ़ने के शौक की वजह से और कुशाग्र, विवेचक बुद्धि की वजह से हमेशा वह ही प्रथम आती। हांलाकि कुछ दिल-जले दबे स्वर उसके अव्वल आने का कारण प्रिंसिपल की पुत्री होना कहने से नहीं चूकते थे। इसीलिए कभी-कभी वह स्वयमेव ही प्रतियोगिता में भाग नहीं लेती। परंतु यह निर्णय उसका स्वयं का होता था। कोई उसे इसके लिए बाध्य नहीं करता था। ब्रहमदत्त बेटी के इस विवेक पर मन ही मन प्रसन्न होते थे, पर कभी मुंह से कहा नहीं।

धीरे धीरे गौरी आगे बढ़ती गई। शिक्षा के अलावा उसकी पहचान अब स्पोर्ट्स व डिबेट में जिले स्तर पर होने लगी थी। ग्रेजुएशन के लिए विश्वविद्यालय में दाखिले कोई अड़चन नहीं आई।

वार्षिकोत्सव और कन्वोकेशन के दिन तो 'गौरी बाजपेयी' के नाम कि धूम रहती थी। पुरुस्कारों की झड़ी लग जाती थी। पढ़ने की मेरिट, स्पोर्ट्स, वाद-विवाद प्रतियोगिता के जीते लोगों में उसका नाम बार-बार पुकारा जाता। हाल में बैठे सभी अभिभावक तथा शिक्षक दिल से ताली बजाते।

यहाँ तक तो भगवान का किया सभी कुछ अच्छा ही अच्छा था। पर बेटी के बड़े होते ही पिता के माथे पर चिंता की रेखायें अपने आप उभरने लगती हैं। सब कहते थे और जिसे ब्रहमदत्त स्वयं मानते भी थे कि ऐसी सुंदर और गुणवान बेटी की शादी में कोई झंझट न होगी।

बहुधा देखा गया है की ज्ञानी और ईमानदार व्यक्ति व्यावहारिक नहीं होते। शायद जाने अनजाने में वह अहंकारी हो जाते हैं और मानने लगते हैं कि उनको छोड़ बाकी सभी बेईमान हैं। वह यह भूल जाते हैं कि दुनियादारी भी एक कला है। अन्य ललित कलाओं की भांति यह भी एक कला ही है। इसे ही आज कल 'भावनात्मक परिपक्वता' 'इमोशनल कोटेंट' या ई. क्यू. कहते है, जिसे ज़्यादा वरीयता दी जाती है। ईमानदार व्यक्ति यदि व्यावहारिक भी हो तो सोने में सुहागा होता है। पर ऐसे लोग बहुत कम पाये जाते हैं। ब्रहमदत्त इस ग्रंथि के अपवाद नहीं थे।

परम आदर्शवादी ब्रहमदत्त के पास जब रिश्ता आता तो वह पहली ही मुलाकात में साफ कर देते थे कि वह दहेज प्रथा के विरुद्ध हैं उनसे इसकी आशा न की जाय। वर पक्ष को उनकी यह साफगोई अहंकार लगती थी। वह स्वयं को अपमानित महसूस कर लौट जाते और पलट कर कोई बात न करते। धीरे धीरे वह अपने 'अहंकार' के लिए बदनाम हो गये। रिश्ते आने बंद हो गये। उनके हितैषियों ने बताया कि विवाह में इतनी स्पष्टता ठीक नहीं है। पहले आप बात तो करें। जब दहेज की बात उठे तभी अपना मंतव्य बताये।

इस बात की गांठ बांध कर ब्रहमदत्त ने योग्य वरों कि तलाश प्रारम्भ कर दी। उनका मानना था कि ऐसी कन्या के लिए वर कम से कम डाक्टर, इंजीनियर, अथवा क्लास टू का प्रशासनिक अधिकारी तो होना ही चाहिये। परंतु कहीं ऐसे उच्च पद बेटे का पिता इंटर कालेज के प्रिन्सिपल के यहाँ रिश्ता नहीं करना चाहता, तो कहीं इतनी लंबी डिमांड होती कि ब्रहमदत्त स्वयं ही मना कर देते। ब्रहमदत्त यह सोच कर 'वर-अन्वेषण' में सतुआ बांध कर लगे रहे कि ऐसी गुणवंती कन्या के लिए विधाता ने कोई अतुलित वर तो रच ही रखा होगा। और रत्न ढूढ़ने में भारी मशक्कत तो लगती ही है।

ठोकरें खा-खा कर तथा बेटी की बढ़ती उम्र से ब्रहमदत्त में व्यवहारिकता की अकलदाढ़ निकलने लगी। अब वह दहेज का विरोध नहीं करते थे। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। पूरी पूंजी लगाने के बाद भी वह चार-पाँच लाख से अधिक जुगाड़ नहीं कर सकते थे। पर इतने में प्रशासनिक अधिकारी, डाक्टर या इंजीनियर कहाँ मिलता। कुछ लोग बहाना बना देते तो कुछ खुले दिल वाले मुँह पर ही मना कर देते। कुछ बदतमीज हद तक के मुँहफट हैसियत की याद दिला देते थे।

अपने परिवेश में सफल माने जाने वाले ब्रहमदत्त ने इतनी ज़लालत कभी नहीं झेली थी। सो उनका डिप्रेशन में जाना अनुचित नहीं ठहराया जा सकता था। वह अब शादी के नाम पर पूर्ण रूप से अव्यवहारिक हो चुके थे। शादी का ज़िक्र आते ही वह ब्राह्मणों को ऊलजलूल बोलने लगते। कुछ लोग उन्हें समझाते कि यह बुराई तो सभी वर्णों में है। यहाँ तक कि अब तो मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं रह गया। **28** वर्ष की दहलीज पार करते करते गौरी को भी लगने लगा कि उसका ईमानदार पिता उसका कन्यादान नहीं कर पायेगा।

राजकीय विद्यालय में अब गौरी शिक्षक बन गई थी। उसने अपना सारा ध्यान पढ़ने और पढ़ाने पर केन्द्रित कर दिया। गौरी ने परिवार से जो संस्कार पाये थे, नूतन परिवेश के झोंकों से उनका बासीपन काफी कुछ खत्म हो चुका था। संस्कार को वह विरासत और संस्कृति की निरंतरता मानती थी। उसका भी सोचना था कि समाज का एक पैर यदि परंपरा है तो दूसरा पैर नवीनता दोनों पैरों के बगैर गति नहीं हो सकती, जो किसी भी समाज के लिए अत्यंत आवश्यक होती है। हाँ प्रत्येक गति, प्रगति नहीं होती कभी-कभी अधोगति की ओर भी ले जा सकती है। फिर भी 'जीवन चलने का नाम'। प्रयास और गति ही जीवन है। परंपरा और प्रगति ही आने वाली पीढ़ियों के लिए संस्कृति हो जाती है। अपने पिता की तरह वह मात्र इंटर कालेज की अध्यापक बन कर वह संतुष्ट नहीं थी। पीएचडी के बाद उसने एनआईईटी भी निकाल लिया था और यूनिवर्सिटी या किसी भी डिग्री कालेज में उसका चयन हो सकता था।

वह अपने पिता की 'सयानी कुवांरी पुत्री' की व्यथा से खुद व्यथित रहती थी। पर उसका मानना था कि बेटी के जीवन का उद्देश्य मात्र उसका विवाह ही नहीं है।

तभी उसने महादेवी वर्मा की पालतू हिरनी की कहानी पढ़ी। एक निश्चित वय प्राप्त कर लेने के बाद वह हिरनी किसी 'ऋतु विशेष' में अन्यमनस्क हो जाती थी। सिर उठा कर हवा में किसी खुशबू को ढूंढ़ती रहती। जिसे महादेवी जी ने नारी होने के नाते समझा। गौरी भी समझ रही थी कि सृजन प्रकृति की निरंतरता के लिये आवश्यक है। मूक हिरनी को प्रकृति सृजन हेतु उत्प्रेरित कर रही थी। उसे समझ आया कि पितृ-ऋण से उऋण होने को 'धर्म' क्यों कहा गया है।

लखनऊ अपने 'लखनऊ महोत्सव' के लिये भी जाना जाने लगा था। इसमें युवाओं के लिये कुछ शैक्षणिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते थे, जिसके तहत एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन होता था। इसमें आयु के अनुसार वर्ग बना दिये जाते थे और उसी आयु वर्ग के लोग आपस में प्रतियोगिता करते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम आना गौरव पूर्ण माना जाता था। इस वर्ष सीनियर ग्रुप की प्रतियोगिता का विषय था ''दहेज एक सामाजिक

अभिशाप''।

प्रतिभागियों में युवक और युवतियाँ दोनों थे, परंतु विपक्ष में बोलने के लिये मात्र एक ही नाम था। नाम भी एकदम अलग सा था-'सोऽहं'। आयोजकों ने कुछ और प्रतिभागियों को विपक्ष में बोलने को प्रेरित करना चाहा। गौरी से भी कहा ''तुम तो प्रतिभाशाली हो। किसी भी विषय उतने ही अधिकार से बोल सकती हो।" गौरी ने कहा कि जिस बात पर मैं विश्वास नहीं करती उस पर केवल विवाद हेतु बोलना उचित नहीं है। विषय के प्रति मैं न्याय नहीं कर पाऊँगी।

प्रतियोगिता से पहले की रात पता नहीं क्यों गौरी को नींद नहीं आई। बार-बार सपने में सिर उठाए किसी गंध को ढूंढ़ती मूक हिरनी ध्यान आती रही। वह जल्दी ही उठ गई और तैयार हो कर रसोई में माँ का हाथ बटाने पहुँच गई। माँ ने आश्चर्य से पूछा ''आज तुम्हारी प्रतियोगिता है। तुम्हें तैयारी नहीं करनी?''

''नहीं माँ, मन नहीं लग रहा है इसीलिये आपकी मदद के लिये आ गई''

प्रतियोगिता की शाम प्रतिभागियों को मंच के ही किनारे पक्ष और विपक्ष में अलग अलग बैठाया गया। सभी विस्मित थे, विपक्ष में मात्र एक ही प्रतिभागी क्या बोलेगा... बिचारा? सभी उत्सुक थे।

मंच-संयोजक ने भी कहा कि पक्ष में बोलने वालों की संख्या ज़्यादा होने के कारण पहला मौका उन्हीं को दिया जाएगा, बीच में ही विपक्ष के वक्ता को आमंत्रित किया जाएगा। जैसा कि होता है सबसे अच्छे वक्ता को सबसे अंतिम रखा गया था। गौरी का नाम सबसे आखिरी था।

'दहेज एक सामाजिक अभिशाप' के पक्ष में वक्ता आए और अपना अपना पक्ष रखा। कुछ ने बहुत ही रूटीन बातें, रूटीन तरीके से रखी, कुछ ने उन्हीं बातों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। श्रोताओं की तालियाँ भी मिलीं। किसी को ज़्यादा किसी को कम। गौरी ने नोटिस किया की कुछ साथी वक्ता, (क्रिकेटर सिद्धू की भाषा में) ताली 'ठोंकने' के लिये अपने तमाम समर्थकों को लाये थे। पर क्या सफलता ऐसी प्रायोजित तालियों पर मिलती है...?

गौरी ने अपनी नोट-बुक में प्रतिभागियों द्वारा रखे बिन्दुओं को नोट किया-

दहेज पित्र-सत्तात्मक व्यवस्था का नारी को शोषित व उत्पीड़ित करने का षड्चंत्र है-गौरी ने अपना विचार बिन्दु नोट किया...परंतु वास्तविक शोषण तो लड़की के पिता का होता है।

-लड़के के विवाह के नाम पर लड़के का विक्रय अथवा नीलामी की जाती है।

दहेज प्रथा समाज का नासूर है।

दहेज हेतु बहू पर अत्याचार।

बेटे की दूसरी शादी में पुनः दहेज के लालच से बहू की हत्या।

यह प्रथा केवल हिन्दू समाज में ही है। किसी ने रामायण के सीता विवाह में दिये विपुल दहेज का भी उद्धरण देकर बताया की उक्त प्रथा हजारों सालों से चली आ रही है....आदि।

गौरी के अलावा विपक्ष वार्ताकार सोहं भी प्वाइंट्स नोट कर रहा था।

फिर उद्घोषक ने विपक्ष में बोलने हेतु एकलौते प्रतिभागी को माइक पर आमन्त्रित किया। अकेला प्रतिभागी होने के नाते श्रोताओं से उसका मनोबल बढ़ाने हेतु जोरदार तालियाँ बजाने का भी आग्रह किया। परंतु गौरी के अलावा ताली बजाने वालों की संख्या बहुत कम थी। सभी ताली बजाने वाले प्रायोजित जो थे। दूसरे के लिये कैसे ताली बजाएँ?

माइक पर आकर सोहं ने विशिष्ट अतिथियों के अलग अलग संबोधित करने के बजाय ''मेरा सभी को नमन'' कह अपनी वार्ता पर आ गया।

उसने प्रारम्भ किया ''पता नहीं क्यों मुझे इस विषय पर विपक्ष-वार्ताकार के रूप में क्यों प्रोजेक्ट किया गया। मैं भी 'दहेज एक सामाजिक अभिशाप' के पक्ष में ही बोलूंगा।"

श्रोताओं, आयोजकों में फुसफुसाहट हुई यह अंतिम समय में पक्ष क्यों बदल रहा है?

कुछ देर नाटकीय अंदाज में रुक कर फिर एक मुस्कान के साथ बोला ''जी हाँ मैं इसी पक्ष में बोलूँगा परंतु 'दहेज एक सामाजिक अपराध' के आगे एक प्रश्न-वाचक या विस्मय बोधक चिह्न के साथ।''

अब सभी को सोहं की वाक-पटुता समझ में आई। कुछ ने ताली बजाकर व कुछ ने केवल मुस्कुरा कर ही उसे सराहा।

गौरी भी प्रभावित हुई। उसने सोंचा की पहले ही वाक्य में इसने स्कोर (Score) कर लिया।

सभी ध्यान लगा कर सुन रहे थे

''जी हाँ, मैं मानता हूँ की यह सामाजिक अभिशाप है। परंतु आने वाले थोड़े समय में मैं अपने विचार आपसे साझा करूंगा कि इसका वास्तविक अपराधी है कौन?

तमाम काले, सफेद और गोल पत्थर नदियों के किनारे पड़े रहते हैं। हम उनपर ध्यान नहीं देते। परंतु जब हम उन्हें उठा कर शिव या सालिगराम का विग्रह

बना कर उन्हें बाजार में सजा देते हैं तो हमारी ही श्रद्धा की वजह से उनका मूल्य बढ़ जाता है। हम अपनी आर्थिक हैसियत के अनुरूप विग्रह खरीद कर घर लाते हैं। पत्थर तो वही हैं जिन्हें हम ऐसे ही नदी के किनारे से उठा सकते थे। परंतु नहीं हम अपने अहं को तुष्ट करने के लिये उनकी ओर तब आकर्षित होते हैं जब बाज़ार में उन पर मूल्य की 'बार कोडिंग' हो आती है। जितना दुर्लभ पाहन उतना ज़्यादा दाम हम खुद ही चुकाते हैं। इसके लिये दुकानदार को क्यों कोसें?''

कुछ रुक कर ''आप सोंच रहे होंगे मैं मूर्ति बाजार का अनावश्यक ही जिक्र क्यों कर रहा हूँ। यह मात्र उदाहरण है कि पत्थर तो वही है जिसे हम ऐसे ही उठा सकते थे पर....जब वह बाजार में आ गया तब ही लोग उसकी ओर आकर्षित होते हैं और वह पत्थर मूल्यवान हो जाता है। बाजार का नियम है कि डिमांड ही मूल्य तय करता है। जितना योग्य वर लोग उसका उतना ही मूल्य लगाते हैं। इसलिए यह कहना कि लड़के वाले वर का विवाह नहीं विक्रय या नीलामी करते हैं सही नहीं है। क्योंकि बाजार तो ग्राहकों से चलती है विक्रेताओं से नहीं।

अपनी पुरानी गाड़ी को बेचते वख्त हम चाहते हैं कि हमें ज़्यादा से ज़्यादा दाम मिले। वहीं हम अगर सेकेंड हैंड कार खरीदने निकलते हैं तो चाहते हैं कि कम से कम दाम में हमें ऊंचा से ऊंचा माडल मिल जाए। इसी प्रकार कौन पिता अपनी बेटी के लिए अच्छा से अच्छा वर नहीं ढूँढ़ना चाहता? लाभ का सौदा लालच नहीं एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है। परंतु वर ढूंढ़ते समय यदि हम समकक्ष परिवारों में ही रिश्ते देखें कन्या के ही अनुरूप वर देखें तो इतनी मुश्किल नहीं होगी। दहेज की व्यवस्था समकक्ष परिवारों में संबंध करने के लिए ही बनाई गई है। दोनों परिवारों के स्तर में यदि असमानता होती है तो भी पारिवारिक जीवन सफल नहीं रहता।

दहेज की प्रथा इस्लाम धर्म में भी है। परंतु वहाँ इस व्यवस्था को ऐसे लागू किया गया है जिससे रिश्ते समकक्ष परिवार में ही हो सके। इस्लाम में नियम है कि वर पक्ष कि हैसियत का आधा मेहर होनी चाहिए और मेहर का आधा ही दहेज होगा। इस व्यवस्था से आदमी अपने समान के स्तर में ही शादी करने को बाध्य है।

परेशानी तब होती है जब हम अपने स्तर से काफी ऊंचे परिवार या वर की आकांक्षा करते हैं।

पता नहीं क्यों सोहं के इस वाक्य को सुनकर गौरी असहज हो गई, सोचा क्या यह वाक्य उसी को संबोधित था....? उसने कुर्सी पर अपनी पोजिशन बदली।

सोहं बोलता गया- ''देखा गया है कि लड़कियां भी हमेशा अपने से श्रेष्ठ

(सुपीरियर) वर चाहती हैं। यदि लड़की पीसीएस है तो आईएस वर चाहती है, यदि ग्रेजुएट है तो पोस्ट-ग्रेजुएट चाहती है, गाँव की ही लड़की गाँव में शादी नहीं करना चाहती। कोई भी कमाती हुई लड़की न कमाते हुए लड़के से शादी नहीं करेगी, क्यों...?

ज़्यादातर घरों में केवल पति ही कमाता है पत्नी नहीं। फिर यदि कमाती हुई लड़की न कमाते हुए लड़के से शादी क्यों नहीं कर सकती। आप कहेंगे होम-मेकर पत्नी घर संभालती है। पति होम-मेकर नहीं होता, तो यहाँ आप भ्रम में हैं या वास्तविकता नहीं स्वीकार रहे हैं। आधे से ज़्यादा मध्य वर्गीय पति व्यवसाय से लौटने के बाद पत्नी का गृह-कार्य में हाथ बटाते हैं। यह बात दीगर है कि मेहमानों व रिश्तेदारों के सामने पत्नियाँ ही उन्हें काम नहीं करने देती, जिससे उनका 'आदर्श नारी' की छवि बरकरार रहे। हाँ हो सकता है कि कुछ परिवारों में बेरोजगार पति गृह कार्य करने में अपनी हेठी समझे पर, धीरे-धीरे यह मानसिकता भी बदल रही है। यदि लड़की वाले खास कर कमाती हुई लड़की खुद बेरोजगार युवक से संबंध कर ले तो दहेज प्रथा स्वतः खत्म हो जाएगी और बेरोजगारी भी समाप्त हो जाएगी।

मैं अपना स्वयं का उदाहरण देता हूँ। मैं विज्ञान से पोस्ट-ग्रेजुएट व पीएचडी हूँ, हमेशा मेरिट में रहा हूँ। मेरे पिता विद्यालय में क्लर्क हैं। मेरे पास ऊंची सिफारिश या रिश्वत के लिए पैसे भी नहीं हैं इसलिए बेरोजगार हूँ। तीस का हो गया हूँ पर कोई अशिक्षित, असुंदर कन्या का पिता भी मेरे यहाँ प्रस्ताव लेकर नहीं आया, क्योंकि मैं नदी के किनारे का मात्र वह पत्थर हूँ अभी मार्केट में मुझे देवत्व प्राप्त नहीं हुआ। अतएव कोई खरीदार नहीं। यहाँ तो दहेज नहीं है परन्तु कोई रिश्ता भी नहीं है।

वास्तव में दहेज अभिशाप नहीं। 'अंगूर खट्टे हैं' की तरह ही दहेज भी दिलजलों द्वारा अभिशप्त है।

यह कहने के बाद सोहं थोड़ा रुका। लोगो ने समझा उसकी वार्ता खत्म हो गई कि उसके चेहरे पर शरारत भरी मुस्कान आई। वह बोला "मैं निर्णायकों का कार्य हल्का करना चाहता हूँ। मैं सोहं अवस्थी दहेज को वाकई अभिशाप मान लूँगा यदि सामने बैठी मेरी प्रतिभागी लड़कियों में से कोई मुझ से शादी को तैयार हो जाय, या मुझ बेरोजगार का विवाह किसी कमाती हुई लड़की से कराने का वायदा करें। मैं वचन देता हूँ गृहकार्य की जिम्मेदारी मेरी" यह कह कर सोहं सभी को विनम्रता से प्रणाम करके अपनी सीट पर चला गया।

सभी चुप थे, कोई प्रतिक्रिया नहीं, सिवाय कुछ फूहड़ों के जो हो-हो-हो करके हंस पड़े और बेहयाई से लड़कियों को चौलेंज करने लगे।

पहले तो गौरी को सोहं का यह मात्र मसखरापन लगा परंतु तत्काल ही उसे समझ आया की यह एक अप्रिय सत्य है। किसी ने भी इस तथ्य पर विचार ही नहीं किया। विचार आया भी हो तो स्वीकार नहीं करना चाहता, इसीलिए आज तक यह बात उठी ही नहीं। दहेज को कोसने वाले लोग भी विवाह के दौरान कितनी फिजूलखर्ची करते हैं? उसे लगा की उसके पिता और वह स्वयं इसी ग्रंथि से पीड़ित थे। दोष समाज में न होकर लोगों की सोंच में है। उसके मन में यह प्रश्न चल रहा था की सोहं में यह विलक्षण विचार आए कैसे? वह कैसे प्रथा के मूल तक पहुँच गया, जो सत्य के काफी नजदीक है। फिर एकाएक उसे ध्यान आया की बेरोजगार होने से वह मूल्यहीन है, इसीलिए अविवाहित है। इस पीड़ा ने ही उसे यह भान कराया।

सबसे पहले व्यवस्थापकों ने तालियाँ बजाईं, गौरी ने भी साथ दिया फिर पूरा हाल तालियों से गूंज उठा।

उद्घोषक ने अंतिम परंतु सबसे मेधावी वक्ता कह कर गौरी को बोलने को आमंत्रित किया।

वह स्टेज की ओर चली परंतु उसके मस्तिष्क में तैयार किए बिन्दु नहीं थे। वह सोच रही थी की वह स्वयं भी तो कमाती है, परिवार का बोझा उठाने में सक्षम है, तो भी उसके पिता डाक्टर इंजीनियर क्यों ढूंढ रहे हैं...? क्यों दहेज को कोसते हुए डिप्रेशन में चले गए। २८ की उम्र में वह भी महादेवी जी की हिरनी सी अपने पिता के ही घर पड़ी है।

माइक पर आकर बगैर किसी भूमिका के वह बोली ''मैं पूर्व वक्ता सोहं जी से पूर्ण रूप से सहमत हूँ कि दहेज उतना बड़ा अभिशाप नहीं है जितना कि अभिशप्त। शेक्सपियर के शाइलक की भांति में 'मोर आफ सिन्ड दैन सिनर'। मैं सोहं जी के तर्कों से पूरा सहमत हूँ इसलिए मेरे पास प्रतियोगिता में बोलने को कुछ भी नहीं बचता। धन्यवाद''

सभी आश्चर्यचकित थे।

निर्णायकों ने एकमत से सोहं को विजयी घोषित किया। अध्यक्ष ने सोहं को लीक से अलग सोंच के व अप्रिय सत्य बोलने के साहस को सराहा।

परंतु सोहं से भी अधिक प्रशंसा गौरी के उस कथन को मिली कि 'जिस बात पर विश्वास नहीं उस पर मात्र प्रतियोगिता हेतु बोलना उचित नहीं'। जब तक उसकी धारणा विषय के पक्ष में थी उसने विपक्ष में बोले को मना किया और जब उसकी धारणा बदल गई तो पक्ष में बोले से इंकार कर दिया। ऐसा कथनी और करनी में फर्क न करने वाले बहुत दुर्लभ हैं। उनका सम्मान होना चाहिए।

मंच से उतर कर सभी प्रतिभागी विजयी सोहं को बधाई दे रहे थे पर, गौरी थोड़ी दूर चुपचाप खड़ी थी। सोहं स्वयं गौरी के पास आया और विनम्रता से बोला ''आज मैं आपकी वार्ता सुनने से वंचित रह गया''

गौरी ''आपकी नई सोंच के बाद कुछ बोलना बेमानी था। यह सोंच आपको कहाँ से मिली?''

''मेरे पिता का मानना है की अंधेरी गुफा से बाहर निकलने के लिए दीपक जला कर ही रोशनी का रास्ता खोजा जा सकता है''

आपके पिता?

श्री रामानुज अवस्थी.....

गौरी ''तुम रामानुज चाचा के बेटे हो! गौरी ने इस नये परिचय से प्रसन्न होते हुआ कहा ''तब तो महोत्सव में एक कप चाय तो बनती है''

सोहं ने हँसते हुए कहा ''एक शर्त है.....पेमेंट आप करेंगी। मैं तो..... आपको तो मालूम है''

गौरी हँसते हुए सोहं को हाथ से पकड़ कर टी स्टाल ले गई। उसके निश्छल व्यवहार से गौरी अभिभूत थी।

घर पहुँचने पर गौरी को प्रसन्न देख कर माँ ने पूछा ''लगता है बिटिया आज फिर जीत कर आई है''

गौरी ने कहा नहीं आज लीक पीटने वालों पर यथार्थ की विजय हुई। रामानुज चाचा का बेटा बहुत अच्छा बोला इसलिए मैंने उसके पक्ष को मान कर वाकआउट दे दिया''

रामानुज का बेटा इतना बड़ा और विद्वान हो गया

हाँ माँ आपको और पिता जी को प्रणाम कहा है।

''वह खुद क्यों नहीं आया?''

आने को कहा है कह कर खुशी में गौरी हाथ मुंह धोने चली गई।

माँ भी आज गौरी की खुशी देख कर गदगद हो गई।

गौरी उस रात बहुत आराम से सोई। हवा में मुँह उठाए हिरनी स्वप्न में नहीं आई।

अगले दिन शाम को कालेज से लौटते समय सोहं से फिर भेंट हो गई। गौरी अनजाने में ही रुक कर उसके साथ होली। दोनों पुरानी पारिवारिक बाते करते रहे। सोहं ने बताया कि उसके पिता श्री ब्रहमदत्त को अपना आदर्श मानते हैं, पर

माँ मेरे पिता की विपन्नता का कारण आपके पिता के प्रभाव को मानती है। परन्तु पिताजी अपनी विपन्नता में भी संतुष्ट हैं।

घर लौटने के बाद गौरी ने हमेशा की तरह सारी बातें माँ से शेयर करीं। माँ ने अनुभव किया कि सोहं के जिक्र आने पर गौरी के चेहरे पर अतीव... उत्साह आ जाता है। माएं अपनी बेटियों को ज़्यादा समझती हैं।

रात भर गौरी उस हिरनी से अपनी तुलना करती रही। कभी-कभी कुछ कहानियाँ जीवन को कितनी नजदीकी से छू जाती हैं। शायद महादेवी जी भी इसी वजह से हिरनी के भाव समझ सकीं। सोहं की प्रतियोगिता में लड़कियों को दी गई चुनौती गौरी को बार-बार याद आ रही थी। फिर एकाएक उसने उस चुनौती को स्वीकार करने का निर्णय लिया और आराम से सो गई।

अगले दिन सुबह सोहं तैयार हो रहा था कि फोन की घंटी बजी। दूसरी तरफ से गौरी की खनकती हुई आवाज थी ''सोहं प्रतियोगिता में दी तुम्हारी चुनौती को मैं स्वीकार करती हूँ। बोलो तुम तैयार हो?''

सोहं इसके लिए तैयार नहीं था वह तत्काल कुछ सोंच नहीं पाया। तभी गौरी की आवाज आई ''बेहोश हो गए क्या?''

अबकी सोहं भर्राए गले से बोला ''आर यू सीरिअस गौरी''

गौरी ''कोई शक?''

नहीं मुझे तुम पर कोई शक नहीं। थोड़ा सा रुक कर। ''क्या आज हम लोग मिल सकते हैं?''

''क्यों नहीं, आज मैंने कालेज से अवकाश ले लिया है, और तुम तो फुर्सत में ही होगें''

यह शब्द किसी और ने कहे होते तो सोहं को चुभ जाते पर कहने-कहने में और कहने वाले में फर्क होता है। शब्द अच्छे या बुरे नहीं होते, हमारी खुद कि प्रतिक्रिया ही उन्हें अच्छा या बुरा बनाती है। क्योंकि यह शब्द गौरी ने कहे थे सोहं ने बिल्कुल बुरा नहीं माना।

दोनों सारे दिन साथ रहे। सोहं ने अपने पिता से बात करने के बाद ही निर्णय लेने को कहा वहीं गौरी निर्णय ले चुकी थी। गेंद सोहं के पाले में थी।

घर आ कर गौरी ने माँ को बताया कि वह बेरोजगार परंतु प्रतिभाशाली सोहं से विवाह करने जा रही है। माँ पहले तो हतप्रभ हुई मगर जल्दी ही सहज स्त्रीबोध से उसे गौरी के निर्णय सही मानने में देर नहीं लगी। परंतु....

ब्रहमदत्त को जब पता चला कि किसी क्लर्क के बेरोजगार बेटे से उनकी बेटी

शादी करना चाहती है तो उन्हें यह रिश्ता हजम नहीं हो रहा था। लोग क्या कहेंगे क्लर्क का बेटा.... वह भी बेरोजगार आखिर सामाजिक प्रतिष्ठा भी कोई चीज होती है और फिर बेटी के लिए सँजोये खुद उनके सपने

उस रात सारा परिवार चैन की नींद सोया, सिवा ब्रहमदत्त के। रात भर उनके मन में दो ही विचार घुमड़ते रहे सामाजिक प्रतिष्ठा भी कोई चीज है....तथा अपने पिता के वाक्य ''बगैर संतोष के सुख कहाँ?''

सामाजिक प्रतिष्ठा या संतोष....?

संतोष करना कितना कठिन हो सकता है उन्होंने आज ही जाना।

अगले दिन पूजा में भी उनका मन नहीं लगा। वह यंत्रवत केवल जल छिड़क कर, मंत्र पढ़, घंटी बजा कर बैठक चले आए। बाहर के बैठक में अनमने बैठे ब्रहमदत्त ने सुबह की चाय को हाथ भी नहीं लगाया था। उनके मस्तिष्क में केवल दुविधा ही घूम रही थी कि-

''नरवरश्रेष्ठों दातारम अभिकांक्षते''

बड़ी जानी-पहचानी आवाज में ब्रहमदत्त को 'वाल्मीकिरामायण' के राम-सीता विवाह के समय दशरथ द्वारा जनक से यज्ञशाला में प्रवेश करने की याचना का श्लोक सुन कर अभिभूत हो गये। दरवाजे से रामानुज अवस्थी ने प्रणाम करते हुए प्रवेश किया। रामानुज ब्रहमदत्त के लिपिक रह चुके थे और स्नेहपात्र भी। इस श्लोक से ब्रहमदत्त समझ गये रामानुज ही सोहं के पिता है। वह इतनी तत्परता से रामानुज का स्वागत करने उठे कि उनका चश्मा नीचे गिर कर टूट गया। उन्होंने रामानुज का हाथ पकड़ कर माथे से लगाते हुए कहा ''रामानुज आपके पास आना मेरा धर्म बनता था। आपने कष्ट क्यों किया''

रामानुज ने हाथ पकड़े पकड़े विनम्रता से कहा ''बाजपेयी जी प्रतिग्रहीता (दान ग्रहण कर्ता) को ही दाता के पास जाने का निर्देश है। थोड़ा रुक कर रामानुज ने ब्रहमदत्त का टूटा चश्मा उठाते हुए कहा ''आपका चश्मा टूट गया''

ब्रहमदत्त ने रामानुज को गले लगाते हुए कहा ''पुराने चश्मे को कबका बदल देना चाहिए था। अच्छा हुआ आज टूट गया।''

❍❍❍

नवसंवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : **9336666322, 0522-6568011**

पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

"If Dara Shukoh Were the King!"*

Lecture Delivered in Commemoration Celebrations:
Dara Shukoh- Four Hundredth Birth Anniversary
(Friday, the 20th March, 2015)

R.C. Tripathi

I am greatly honored and humbled by the invitation of the Fraternity to Inculcate Vedic Erudition & Sciences (FIVES) to be here, with you all on this occasion of the 400th Birth Anniversary of Prince Dara Shukoh and pay my tribute to Prince Dara Shukoh, (b.20/ 03/ 1615 d.30/08/1659), a great son of India. The FIVES have chosen to commemorate Prince Dara Shukoh on his 400th birthday, a prince from the Mughal dynasty, who is remembered for his erudition, vast knowledge and deep religious, philosophical and literary interests and a harmonious and Sufi approach to religions of his times.

Born on 20th March, 1615 to Prince Khurram (later Emperor Shah Jahan) and Mumtaz Mahal as the eldest son. Dara Shukoh was a handsome, dignified, energetic, graceful and confident young person with an aristocratic and academic bent of mind possessing attitude to learn, discuss and deliberate, as depicted in the Mughal paintings. Enjoying complete affection of his father, Shah Jahan, Dara stayed mostly with his father and at the Mughal court, unlike his other brothers, particularly Aurangzeb, who occupied positions of responsibility, power and administration in the field. Dara had an unquenchable thirst for knowledge. His teacher, Mulla Abdul Latif Saharanpuri inspired his quest for learning and influenced him with the Sufi thought, understanding, practices and philosophy. Prince Khurram had unsuccessfully revolted against his father, Emperor Jahangir. He was pardoned but had to leave Dara Shukoh & his third son, Aurangzeb with Jahangir as hostages. Shah Jahan had ascended the throne in 1628. He doted on Dara and conferred upon Dara honors, titles and military powers in quick succession. Dara was made (10 Septeber,1642) heir apparent with the title, 'Shahzada-e- Buland Iqbal'(Prince of High Fortune), with 20,000 foot & 20,000 horses to

command; was made Governor of subah Allahabad (1645); Governor of Gujarat (1648); Governor of Multan & Kabul (1652); conferred upon the title of 'Shah-e- Buland Iqbal' (King of High Fortune),' (15, Feb.1655)', commanding now 40,000 foot & 20,000 horses. This was increased to 50,000 foot &40,000 horses in September, 1657, a force that exceeded the combined force of the other three brothers. This obviously made the siblings envious and anxious of Dara about their own fortunes.

Dara Shukoh administered his provinces mostly through agents and representatives, spending his hours at the royal court and the royal library in pursuit of his academic and philosophical interests. The Italian merchant, Niccolao Mannucci and the French traveler, François Bernier, both opine that Dara Shukoh had developed an irascible, stubborn and vain temperament. Bernier felt that Dara was too self-opinionated and presumed that Dara could accomplish anything alone with the powers of his own mind. Bernier served both, Dara & Aurangzeb, but the later for a longer period. Perhaps, he could be biased but there is no denying the fact that Dara certainly lacked field experience and military tactics and strategy in comparison to Aurangzeb.

Shah Jahan fell ill in September, 1657. Dara assumed command. However, Shah Jahan recovered and travelled to Agra to be near his wife' Tomb, Taj Mahal. The war for succession triggered (1658) with Prince Mohd Shuja crowning himself King in Bengal and he marched towards Agra. But Shuja was defeated by Sulaiman Shukoh, son of Dara & Raja Jai Singh. Shuja flees to Monghyr. Aurangzeb negotiated with his brother, Prince Murad, governor of Gujarat, and marched north and joined Murad at Dharmat, near Ujjain. The imperial army under Jaswant Singh Rathor was defeated at Dharmat. Dara moved towards Gwalior to check advance of the combined army of Aurangzeb & Murad. Aurangzeb bypassed Gwalior and descended near Agra, at Samugarh, (29 May, 1658). Dara was defeated and he fled the field for Agra and, even without meeting his doting father at Agra, left for Delhi & then to Lahore (and not eastward to support and regroup

with his victorious son, Sulaiman Shukoh). Aurangzeb besieged his father in the Agra Fort, withheld waters of the Yamuna River to the Fort, compelling Shah Jahan to open the gates on the third day. Aurangzeb deposed Shah Jahan, who was now a prisoner of his son, in the Agra Fort. Aurangzeb held his coronation as Emperor on the 21 July 1658 at Delhi and a second one, on more auspicious time, on June, 5, 1659 in the Diwan-i-Aam, the Red Fort, Delhi.

While proceeding to Delhi, Aurangzeb got suspicious of Murad, got him arrested and sent to Salimgarh and then to Gwalior, where he was tried for murder of Naqi Khan of Surat and beheaded. Sulaiman Shukoh found his westwards path blocked, his disheartened followers deserted, he took refuge in Garhwal. He was captured and sent to Gwalior, where in May, 1662 he was put to death by overdoses of opium. Meanwhile, Shuja, taking advantage of absence of Aurangzeb at Agra, advanced up to Khjuha (Fatehpur- UP). The imperial army defeated Shuja and fled to Bengal and then to Arakan, where he was slain(February, 1661).

The forces of Aurangzeb hotly pursued Dara. Bernier opines that Dara was destined to fail due his want of strategy and ground politics. Forces of Dara were defeated in mid-March, 1659 at Deorai near Ajmer. Dara was compelled to move towards Persia via Bolan and Qandahar. His wife, Nadira Banu died at Dadar near Bolan pass. The Chief of Dadr Malik Jiwan had played host to the fugitive Dara. The corpse of Nadira Banu was sent for burial at Lahore in the Tomb built for her. Dara had saved once Makil Jiwan from death sentence and wrath of Shah Jahan. But Malik Jiwan cheated and handed over once his savior, Dara, Dara's son, Sipahr Shukoh and two daughters to Bahadur Khan, the general of Aurangzeb. Brought to Delhi, Dara and his son, Sipahr Shukoh were paraded with ignominy in the streets of Delhi. Dara was charged with heresy and was put to death on 30 August, 1659. Sipahr Shukoh was imprisoned in the Gwalior Fort and eliminated.

In the short span of a life of forty-five years, Dara vigorously pursued intellectual, philosophical and religious activity and

disciplines and accomplished substantial work. He patronized art, architecture, literature, languages including Sanskrit, and painting. He was liberal and believed in harmony of religions and the practice of mutual respect to all religions. Dara was an anti-thesis to Aurangzeb's Sunni Muslim orthodoxy. Dara had presented a stone carved railing to the Keshab Rai Temple at Mathura. This was taken away by Abdul Nabi Khan, the Faujdar of Mathura, in 1666. The Tomb of Nadira Banu at Lahore, the Tomb of Hazrat Mian Mir at Lahore, Dara's Library at Delhi, the Pari Mahal at Srinagar,(Jammu & Kashmir) are some of the examples. His Diwan, 'Iksiri-i-Azam', is a collection of his poems evincing Sufi leanings. Dara authored 'Majmul Bahrain', (The Mingling of Two Oceans) as an collection of imagery dialogue and correspondence of Sufi and Hindu cosmologists, their beliefs and practices. He got the Bhagwad-Gita and the Yog-Vashishtha translated into Persian. His 'Safinat al-Auliya' is a well illustrated biographical account of Muslim saints; and 'Sakinat al-Auliya', an account of his spiritual guide and master, Hazrat Mian Mir. In the book, 'Makalma Baba Lal wa Dara Shukoh' is contained the account of seven discourses Dara had with Baba Las Das Bajrangi. His crowning work appears to be the translation of some fifty Upanishads into Persian, titled, Sirr-e-Akbar (The Great Secret) completed in 1657. Dara described in the introduction these works as the 'Kitab-al-Maknun', the Hidden book that has been mentioned in the Holy Quran. Dara was all the time investigating common elements between Hinduism and Islam. Bernier took a copy of 'Sirr-e-Akbar' to France where it was translated into European languages. The philosophy of Upanishads reached the Western world through this work and influenced Victor Cousin, Friedrich von Schilling, Schopenhauer, Paul Deusssen. For this work, humankind will remain to Dara Shukoh) and through their works to Emerson and Thoreau in America.

What would have been the history of India if Dara had succeeded! There are many 'ifs' in history. If Dara were king of Delhi, it is possible religious bigotry would have ebbed out of India

and harmony amongst communities and religions would have been created for long time to come. In the event of Dara becoming a king, the first happy result would have been the fulfillment of the fond desire of a doting father to witness his favorite son as emperor. The Mughal throne did not go by the right of primogeniture. Babar had told Humayun to be kindly to his brothers. But Humayun's brothers were not so inclined towards Humayun. Probably, Dara would not have been so harsh and cruel to his brothers as Aurangzeb. Dara's human compassion is seen in the case of Malik Jiwan. If Dara were king, the magnificent Emperor Shah Jahan would not countenance humiliation of imprisonment at the hands of his son, Aurangzeb, during the sun-set years of his life.

Dara Shukoh is closer in his religious approach and policy to Akbar, the Great. Like Akbar, he would have strengthened the foundations of the Mughal Empire. Dara would not have alienated the Hindus, the Rajputs, the Sikhs and the Marathas and antagonized even the Shia Muslims by annexing the Deccan kingdoms in his zeal to promote Sunni orthodoxy. He ruled India as a pious ruler of an Islamic state rather than as a capable Muslim monarch of a mixed Hindu-Muslim empire. Aurangzeb revived zaziya (1679) or poll tax on non-Muslims. These communities became second rate citizens and subordinates and not colleagues. Hindus were still in service but were losing their heart and enthusiasm to work for the Mughal Empire. This situation could probably have been averted if Dara became a king. Perhaps the precipitous fall after 1707 of the Mughal Empire would not have been so precipitous. India perhaps would have escaped being a British colony! There would have been no Partition of 1947 and perhaps there would not have been two separate countries with so much trust deficit like India and Pakistan.

But all these are speculations and wishful thinking. The fact is that Dara Shukoh lost. With his defeat receded the spirit of 'Sulah-kul'(universal peace) and Din-i-Ilahi (Syncretic religion), the cherished dream of Akbar, the Great. Dara's defeat signaled decline and recession of Sufi pronouncement, belief in diversity,

pluralism and the concept of unity and diversity.

Dara and his life have been fascinating minds of men and historians. His spirit is alive and source inspiration, debate and discussions. Shahid Nadeem , a Pakistani play-write has written a play, 'Dara' and this has been played on stage widely. Akbar S. Ahmad wrote, The Trial of Dara Shikoh'. Gopal Krishna Gandhi has written a play in verse on Dara Shukoh. There is a novel, 'Shahjada Dara Shikoh' by Shyamal Gangopadyaya. For some, Dara and Aurangzeb's rivalry and struggle for power is merely a story of a dysfunctional family. It is equally a violent tale of rapacity for power and throne.

Humankind is a prisoner of history. Despite secular pronouncements, the politics and public life is dominated by considerations of religious and sectional considerations, impinging on growth and progress. Dara is still alive.

History has recorded wars fought on religious grounds but of little avail. Guns, germs and steel do not determine growth of human spirit and culture overtime and continents. Human culture and civilization are constant reminders the values of compassion, liberalism, justice and welfare of all. Lurking fear and mistrust do not remove wars from the world. Dara Shukoh and his syncretic approach to religions remain valid for humankind. India has believed since hoary past, in the concept of 'the whole world is a family' (vasudhaiva kutumbakam) and 'welfare of all' (sarve bhavantu sukhinah). These sayings conceive 'mutual respect' as a pre-condition. In the absence of mutual respect, there can be no meaningful dialogue. Dara is close to the concept of mutual respect amongst religions and their practices.

There should also be some constant reminders for average individuals regarding Dara Shukoh. One could be a prominent road or street in Delhi named after Prince Dara Shukoh. Another befitting would be to have a Commemorative Postage Stamp released during the 400^{th} Birth Centenary Year of Dara Shukoh.

We would pay our best tribute by imbibing the best in the

philosophy of Dara Shukoh and create a peaceful world, a world free from want, disease and fear of any kind, making the planet a safe place for posterity to live and flourish. This can be possible with trust, fearlessness and nobler instincts of humankind. I am reminded of Mahatma Gandhi's statement made in the backdrop of the San Francisco Conference that lurking fear and mistrust might not be able to deliver to the Allies countries of the Second World War the desired results. We are aware the United Nations have not been able to so far establish a world free of wars, strife and violence in the world! Wars would recede if freedom and fearlessness grow in human minds. I conclude with a Vedic verse:

Abhayam mitraat abhiyam amitraat, abhayam gyaataat abhayam parokshaat;

Abhayam naktaam abhayam diva nah, sarvaa aashaa mam mitram bhavantu.

(O Lord of the Universe! May we have no fear from our friends; may we have no fear from our foes; may we be not afraid of the past (known, and of the future which is invisible; may we be free from fear during the day and may we have no fear during the night. May all the directions be without fear for us!)

I congratulate the FIVES, its office bearers and members, for this timely initiative and wish them and their projects all success. I thank the organizers for giving me an opportunity to pay my homage to Dara Shukoh; and also to you all, ladies and gentlemen for patient hearing. With these words I conclude and pay my homage to Prince Dara Shukoh who will be beacon light for long time to come.

* Former Secretary-General, Rajya Sabha
A -1055, Lekhraj Marg, Indira Nagar,
Lucknow-226016 (UP)

❍❍❍

गीत

❑ डॉ० सुशील अवस्थी

बाँसुरी बन गई हूँ तुम्हारे लिए,
तुम अधर पर धरो,
प्रीति के स्वर भरो,
मंत्र जीवित करो,
जो तुम्हारा हो मन ।
तुम मिलो श्याम बन,
तुम मिलो श्याम घन ।

पाँखुरी बन गई हूँ, तुम्हारे लिए,
शीश माथे धरो,
वक्ष में तुम भरो,
या तिरोहित करो,
जो तुम्हारा चयन ।
तुम मिलो श्याम घन,
तुम मिलो श्याम बन ।

चातकी बन गई हूँ, तुम्हारे लिए,
चन्द्रमा तुम बनो,
या गगन बन तना,
आ मिलो स्वाति क्षण ।
तुम मिलो श्याम घन,
तुम मिलो श्याम बन ।

राधिका बन गई हूँ, तुम्हारे लिए,
पीत अम्बर धरो,
बाँसुरी स्वर भरो,
कुछ जतन तो करो,
कैसे होगा मिलन।
तुम मिलो श्याम घन,
तुम मिलो श्याम बन।

○○○

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष

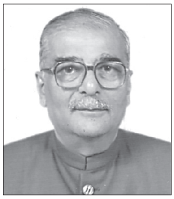

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

महासचिव

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

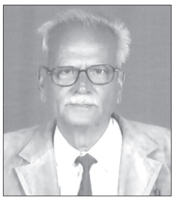

जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष

पी०एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा० आर०के०मिश्रा
आर्थो सर्जन

उप मंत्री

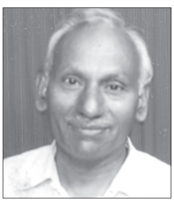

के० एस० दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक

एस० एन० दीक्षित
इंजी० लेसा

सह-सम्पादक

डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

संरक्षक–	अनुदान रु. 10,000.00
न्यायमूर्ति पं. डी.के. त्रिवेदी (अ.प्र.)	
कान्यकुब्ज वाणी पुत्र–	अनुदान रु. 5000.00
१. डा० यू०डी० शुक्ल	
२. डा० वी.के. मिश्रा (आई सर्जन)	मो० 9415020426
३. इं एस एन मिश्रा (चीफ इं)	मो० 9453945490
४. ललित कुमार बाजपेई रायबरेली	मो० 9415034367
विशिष्ट सदस्य–	अनुदान रु. 2000.00
१. श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी, लखनऊ	मो० 9335159363
२. श्री उपेन्द्र मिश्र, लखनऊ	मो० 9415788855
३. डा० आर.एस. बाजपेयी, लखनऊ	
४. प्रो० पी.पी. त्रिपाठी, बलरामपुर	मो० 9450551394
५. डा० आर के मिश्रा (अर्थों सर्जन), लखनऊ	मो० 9415012333
६. विनोद बिहारी दीक्षित (स्व) लखनऊ	मो० 9335908081
७. पं विजय शंकर शुक्ल (स्व), लखनऊ	मो० 9415309840
८. इं देवेश शुक्ल, लखनऊ	मो० 9450591538
६. डा प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर	मो० 9919879799
१०. डा० निधि त्रिपाठी, बलरामपुर	
११. श्री डी.के. बाजपेयी, लखनऊ	मो० 9621479044
१२. श्री बी.एन. तिवारी, आई.ए.एस., लखनऊ	
१३. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली	मो० 9450558657
१४. श्रीमती रोली तिवारी, लखनऊ	मो० 9839882747
१५. श्री रामजी मिश्र, खैराबाद, सीतापुर	मो० 9450379054
आजीवन सदस्य	अनुदान रु० 1000.00
१. श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, लखनऊ	मो० 9307222027
२. पं० भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर	मो० 9451194337
३. श्री राधा रमण त्रिवेदी, सीतापुर	मो० 0586–2247929
४. श्री के०के त्रिवेदी, लखनऊ	मो० 9415020510
५. श्री आर.सी. त्रिपाठी, आई.ए.एस. लखनऊ	मो० 9415012040
६. श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ	मो० 9450666731
७. श्रीमती मीनू द्विवेदी, कानपुर	मो० 9336166380
८. इं बसंत राम दीक्षित, लखनऊ	मो० 9335075482
६. श्री सुधीर कुमार पांडे, लखनऊ	मो० 9415521031
१०. श्रीमती मनोरमा तिवारी, लखनऊ	
११. एडवो कु प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा	मो० 9415026087

१२.श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, सीतापुर	मो० 9415524848
१३.ब्रिग शीतांशु मिश्र, लखनऊ	मो० 9454592411
१४. श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ	मो० 9455713711
१५.डा अनुराग तिवारी, कानपुर	मो० 9415735630
१६.श्री आर के शुक्ल, लखनऊ	मो० 9415735630
१७.डा आर.सी. मिश्र, लखनऊ	मो० 0522–6521353
१८.श्री विनोद कुमार मिश्र, फतेहपुर ८४, उन्नाव	मो० 9919740633
१९.श्री राजकिशोर अवस्थी, लखनऊ	मो० 9956084970
२०.डा० पी.एन. अवस्थी, लखनऊ	मो० 9415308555
२१.श्री कौशल किशोर शुक्ल	मो० 9335968454
२२.श्री विनय कुमार शुक्ल, रमा बाई नगर	मो० 9450350878
२३.श्री मनी कान्त अवस्थी, लखनऊ	
२४.श्रीमती अनुराधा शुक्ला, पत्नी पं० त्रयम्बकेश्वर प्रसाद शुक्ल खाली सहाट, लखनऊ	
२५.इं श्री के.बी. शुक्ल, लखनऊ	मो० 9415004466
२६.श्रीमती हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ	मो० 9721975102
२७.श्री ब्रह्म शक्ति दीक्षित, लखनऊ	मो० 9415049660
२८.श्रीमती सुमन शुक्ला, कल्याणपुर, लखनऊ	मो० 9838005179
२९.श्री शंभु प्रसाद पाण्डे, मलिहाबाद, लखनऊ	मो० 9456717711
३०.इं एस.एस. शुक्ल, लखनऊ	मो० 9450761403
३१.प्रवीण कुमार द्विवेदी, लखनऊ	
३२.श्री ज्ञान सिंधु पाण्डे, लखनऊ	मो० 8765531281
३३.श्री डी.एन. दुबे, आई.ए.एस., लखनऊ	मो० 9415408018
३४.श्री श्रीकांत दीक्षित	मो० 09415766901
३५.उमेश चंद्र मिश्र	मो० 9305224559
३६.श्री ओंकार नाथ मिश्रा, लखनऊ	मो० 9415022957
३७.अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर	मो० 9415171833
३८.श्री राघवेन्द्र मिश्र, लखनऊ	मो० 9918001628
३९.प्रफुल्ल कुमार पाठक, बछरावाँ, रायबरेली	
४०.मीरा शिवेन्दु शुक्ल, कानपुर	मो० 9721756269
४१.आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ	मो० 9415018200
४२.श्री समीर बाजपेयी, नैनी, इलाहाबाद	मो० 9145306363
४३.श्री राकेश कुमार मिश्रा, लखनऊ	मो० 9335209896
४४.डा० एस०के० त्रिपाठी, लखनऊ	मो० 9335917261
४५.श्री सोम दत्त पाण्डे, लखनऊ	मो० 9452378967
४६.श्री राजेश नाथ मिश्रा, लखनऊ	मो० 9454292354
४७.श्री कृष्ण नारायण शुक्ल	मो० 9454670529
४८.मालती विजय शंकर मिश्रा, लखनऊ	मो० 9336744017

बाहरी प्रान्तों के सदस्य–

१. डा० आर.के. त्रिपाठी, देहरादून, उत्तराखण्ड	मो० 09935478815
२. श्री यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली	मो० 09818434377

३. श्री श्रीराम अवस्थी, ट्रांबे, मुम्बई मो० 09820026914
४. श्री नीरज त्रिपाठी, हरिद्वार, उत्तराखंड मो० 09837077546
५. श्री अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर, मध्य प्रदेश मो० 09300104481
६. श्री अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद मो० 09407290639
७. वैज्ञानिक अल्का दीक्षित, दिल्ली
८. श्रीमती सविता दुबे, धारवाड़, कर्नाटक मो० 09845280950
९. श्री देवेन्द्र कुमार शुक्ल, जयपुर, राजस्थान मो० 09414075174
१०. पं० शिव शंकर तिवारी, सिंकदरबाद, आंध्रप्रदेश
११. श्री शिशिर कुमार बाजपेयी, फरीदाबाद, हरियाणा मो० 09899041178
१२. श्री प्रदीप चन्द्र तिवारी, उदयपुर, राजस्थान मो० 09414097679

दूरस्थ देश के सदस्य-
श्री विजय शुक्ल, सिडनी, आस्ट्रेलिया

साहस और मानव जीवन

❑ मीनू द्विवेदी

संसार एक अनन्त जीवन संग्राम है। इसमें पग-पग पर विघ्न बाधाएं आती हैं। इन पर विजय पाने के लिए साहस की जरूरत है। सच पूछो तो साहस ही जीवन है। साहसी मनुष्य की जिन्दगी ही वास्तविक जीवन है।

किसी ने सत्य ही कहा है - ''जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।'' जो कर्त्तव्य की पूर्ति में जी जान पर खेल जाता है, वही असल में जिन्दा दिल है। ऐसे ही मानव रत्न इतिहास को सजाते हैं। भगवान श्री राम, श्री कृष्ण, महात्मा ईसा, हजरत मुहम्मद के जीवन चरित्र जो भव-सागर में दीप स्तम्भ बन कर, आज भी मानव जाति का पथ प्रदर्शन करती है, यह साहस की जीती-जागती परिभाषाएँ हैं।

साहस ही सफलता की कुंजी है। इसी के बल पर मनुष्य ने जल-थल और आकाश पर विजय पाई है। साहस की जरूरत हर एक क्षेत्र में होती है। साहस में असीम शक्ति है। इस गुण के सामने असम्भव कुछ नहीं। साहस में विवेक बना रहता है। वहाँ शारीरिक बल की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत है चरित्र की दृढ़ता की। जिससे प्रत्येक कार्य मंगलकारी होता है।

साहस मानव जाति को प्रगति की नई दिशा देता है। साहस का द्वार सबल और निर्बल दोनों के लिए खुला रहता है। साहस न होने से बलवान व्यक्ति भी कर्त्तव्य से विमुख हो सकता है। जब कि दुर्बल व्यक्ति अपने साहसी आचरण से कीर्ति प्राप्त कर सकता है।

मंच पर दी जाने वाली पारितोषिक/छात्रवृत्ति
वर्ष 2015–16

१. कु० दीप्ती दुबे, पुत्री श्री विश्वामित्र दुबे, कक्षा XI, बी.एस.एन.वी.,जी.आई.सी 3000

स्व० पं० आर०के० मिश्र 'मान भाई' परितोषिक प्रदत्त ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र (अ.प्रा.)

२. कु० अंशिका बाजपेई, पुत्री श्री संजय बाजपेई, बी.काम. II, ए.वी.एम.डिग्री कालेज 3000

स्व० कु० सोनल मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थो सर्जन राजेश कुमार मिश्र

३. कु० नीहारिका बाजपेई, पुत्री श्री दीपक बाजपेई, कक्षा XII, ए.वी.एम. इं० कालेज 1500

स्व० श्री राज किशोर तिवारी पारितोषिक प्रदत्त श्री राम कृपाल त्रिपाठी

४. कु० श्वेता मिश्रा, पुत्री श्री दीपक मिश्र, कक्षा X, नवीन पब्लिक स्कूल, मोहनलालगंज 1500

स्व० श्रीमती कृष्णा तिवारी पारितोषिक, प्रदत्त श्री रामकृपाल त्रिपाठी

५. कु० नीहारिका मिश्रा, पुत्री श्री वेद रत्न मिश्र, कक्षा X, आर.टी.बी., इं० का० इटौंजा 1100

स्व० रायबहादुर उदित नारायण पाठक आफ सिसेन्डी पा० प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई

६. कु० कशिश मिश्रा, पुत्री श्री शैलेश कु० मिश्र, कक्षा X, वी.एस.एन.वी.जी.आई.सी. 1100

स्व० श्री ग्यानेन्द्र प्रसाद शुक्ल आफ सरकुटिया स्टेट पा० प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई

७. कु० आकांक्षा तिवारी, पुत्री श्री राजेश तिवारी, कक्षा VIII, वी.एस.एन.वी.जी.आई.सी. 1100

स्व० श्री उमाशंकर बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री आशुतोष बाजपेई

८. कु० कोमल झा, पुत्री श्री सुशील झा, कक्षा IX, वी.एस.एन.वी.जी.आई.सी. 1100

स्व० श्रीमती शैल शुक्ला पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती दिव्या बाजपेई

९. कु० रुचि पाण्डेय, पुत्री श्री दुःखहरण पाण्डेय, कक्षा XI, वी.एन.एस.एन.क.इं० कालेज 1100

स्व० श्रीमती विनोदिनी बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त श्री आशुतोष बाजपेई

१०. कु० जया मिश्रा, पुत्री श्री श्याम बिहारी मिश्र, कक्षा VII, बी.वि.सी.से.डे स्कूल 1100

स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक-II प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

११. कु० प्रगति त्रिपाठी द्वारा श्री गोविन्द प्रसाद मिश्र, कक्षा IV ग्रीन फील्ड जू.हा.स्कूल 1100

स्व० श्रीमती रामा देवी पारितोषिक-I प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र

१२. कु० रोली शुक्ला, पुत्री श्री रविशंकर शुक्ल, कक्षा XII, सिन्धी जी.आई.सी. 2200

ब्रिगेडियर श्री छंगा लाल पान्डे (अ०प्रा०) द्वारा विशेष अनुदान

१३. कु० साक्षी मिश्रा, पुत्री श्री अशोक मिश्र, कक्षा IX, के.बी.वी.आई.सी. 1000

स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक-I प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी

१४. कु० आकांक्षा तिवारी, पुत्री श्रीमती स्वर्ण लता तिवारी, कक्षा X, के.बी.वी.आई.सी. 1000
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक-I प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१५. कु० दिव्या तिवारी पुत्री श्री परमेश्वर दत्त तिवारी, कक्षा X, के.बी.वी.आई.सी. 1000
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र(पितामह)पारितोषिक प्रदत्त डा० एल.पी.मिश्र, सीनियर एड०

१६. कु० आकांक्षा तिवारी, पुत्री श्री पुनीत तिवारी, कक्षा X, के.बी.वी.आई.सी. 1000
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त डा० एल.पी. मिश्र, सीनियर एड०

१७. कु० वैष्णवी बाजपेई, पुत्री श्री संतोष, कुमार बाजपेई, कक्षा X, के.बी.वी.आई.सी. 1000
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक प्रदत्त डा० एल.पी. मिश्र, सीनियर एड०

१८. कु० कोमल शुक्ला पुत्री श्री लल्लू लाल शुक्ल, कक्षा XI, वी.एन.एस.एन.क.इं०का. 1000
स्व० श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१६. कु० नेहा अवस्थी पुत्री श्री विनोद कुमार अवस्थी, कक्षा X, के.बी.वि.इं. कालेज 750
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक-II प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई

२०. कु० कौशिकी मिश्रा पुत्री श्री शरद कुमार मिश्र कक्षा IV के.वि., सेक्टर-J, अलीगंज 600
स्व० पं० जयशंकर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त सुश्री प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा, एडवोकेट

○○○

साइकिल व पुरुस्कार पाने वाली छात्राएं एवं छात्र

साइकिल

1. कु लक्ष्मी त्रिवेदी पुत्री शैलेश कुमार त्रिवेदी ब्राइट आदर्श स्कूल, मवइया, लखनऊ
2. कु शलिनी उपाध्याय पुत्री सोनू उपाध्याय, दयानन्द कालेज, लखनऊ
3. कु अनन्या शुक्ल पुत्री विजय शुक्ल, सेंट यामि कालेज, सदर, लखनऊ
4. ज्योति शुक्ला पुत्री जय प्रकाश शुक्ल, दयानन्द कालेज, लखनऊ
5. कु प्रिया मिश्रा पुत्री आदर्श कुमार, डिग्री कालेज खैराबाद, सीतापुर
6. गीता मिश्रा पुत्री शिव कुमार मिश्रा, दयानन्द कालेज, लखनऊ
7. कु दामिनी द्विवेदी पुत्री स्व मधुसूदन द्विवेदी, माखूपुर सीतापुर
8. कु सुप्रिया तिवारी पुत्री राम दस तिवारी, इंटर कालेज हरचंदपुर, रायबरेली
9. कु शिप्रा तिवारी पुत्री स्व छगन लाल तिवारी, स्कालर होम स्कूल, लखनऊ
10. कुशाग्र मिश्र पुत्र श्री पंकज मिश्र, राजाजी पुरम, लखनऊ

नगद पुरुस्कार

11. ईशान पुत्र विवेक प्रदत्त माता-पिता की स्मृति में श्री गंगा नारायण तिवारी रु० 5000=00

सहयोग के लिए जिनके हम आभारी हैं

1. न्यायमूर्ति श्री डी के त्रिवेदी	नई वेबसाइट हेतु	रु 5000=00
2. इं० देवेश शुक्ल	नई वेबसाइट हेतु	रु 2000=00
	साइकिल हेतु	रु 1000=00
3. श्री गंगा प्रसाद तिवारी, भारत मेडिसिन माता-पिता की स्मृति में	साइकिल हेतु	रु 6000=00
	छात्रवृत्ति हेतु	रु 5000=00
4. श्रीमती मीनू द्विवेदी	साइकिल हेतु	रु 5000=00
5. इं० अनिल कुमार मिश्रा	,,	रु 5000=00
6. एडवोकेट श्री गोनिन्द शरण निगम	,,	रु 5000=00
7. श्रीमती शैल मिश्रा अपने पति स्व जी पी मिश्र की स्मृति में	,,	रु 3000=00
8. श्रीमती रोली तिवारी	,,	रु 2000=00
9. श्री अखिलेश पाठक मलीहाबाद, लखनऊ	,,	रु 2000=00
10.डॉ० परेश शुक्ल, अनुप्रिया क्लिनिक, आशियाना लखनऊ	,,	रु 2000=00
11.डॉ० डी एस शुक्ल अपनी मौसी स्व० उर्मिला मिश्रा की स्मृति	श्रद्धांजलि हेतु	रु 2000=00
	वेब साइट हेतु	रु 870=00

अखिल भारतीय
कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा
और
कान्यकुब्ज वाणी

को
होली एवं नवसंवत्सर
की
हार्दिक शुभकामनायें

कान्ट्रेक्टर : राजकुमार

मो0 : **9839993100**

प्रधानमंत्री जी ! शिक्षा में विवेक का अभिलेख अनिवार्य

देवेन्द्र नाथ दुबे

किसी भी राष्ट्र के लिये जो सबसे महत्वपूर्ण है वह है- शिक्षा आज की शिक्षा का अधोमुखी स्तर देख श्री दुबे जी का P.M. को लिखा पत्र।

परम आदरणीय प्रधानमंत्री जी,

आपके शासन के या सेवा के जैसा आप कहते हैं, एक वर्ष पूरा होने की हार्दिक बधाई कृपया स्वीकार करें वर्तमान जनादेश के चार वर्ष अवशेष हैं और पूर्ण बहुमत वाली सरकार के लिए दृढ़ निश्चय के साथ काम करके परिणाम देने के लिए कुछ समय अवश्य है, परन्तु देश की ठोस प्रगति के लिए शायद यह आवश्यक है कि कुछ प्राथमिकताएं तय की जाएँ जनसँख्या की वृद्धि एक बहुत बड़ी समस्या है परन्तु उस पर कोई क्रांतिकारी निर्णय लेना संभवतः राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में संभव नहीं होगा, परन्तु आंकड़े बतलाते हैं कि जो प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में आगे रहा है उसकी जनसँख्या वृद्धि भी उसी अनुपात में नियंत्रित रही है केवल जनसँख्या के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सभी क्षेत्रों में शिक्षा मूलभूत आधार है और यदि सरकारों ने स्वतन्त्रता के पश्चात इस पर गंभीर ध्यान दिया होता तो संभवतः यह देश चीन से आगे ही होता इस विषय पर मेरे सुझाव संक्षेप में निम्न प्रकार हैं

१. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रसार अविलम्ब रोक दिया जाए तथा नए-नए संस्थानों, चाहे वह सरकारी क्षेत्र में हों या निजी क्षेत्र में, को खोलने के बजाय पहले से अवस्थित शिक्षा संस्थानों को मजबूत किया जाए, हो यह रहा है कि पहले से काम कर रही उच्च शिक्षण संस्थाएं आवश्यक धन तथा सहायता के अभाव में जर्जर होती जा रही हैं जिनको पुनः सुद्रढ़ करने में नयी संस्थाओं के सृजन में होने वाले व्यय की तुलना में अपेक्षोंत काफी कम धन, शक्ति एवं समय लगेगा।

२. उच्च शिक्षा में केवल गुणवत्ता तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता के साथ संख्या यह हमारा सूत्र वाक्य होना चाहिए

३. भारत के प्रत्येक बच्चे को समान अधिकार प्राप्त हैं परन्तु जन्म के क्षण से ही उसके साथ इस तथा कथित समाजवादी देश में भेद-भाव प्रारम्भ हो जाता है जिसमें उसका कोई दोष नहीं केवल सरकारी नीतियाँ ही जिम्मेदार हैं, क्योंकि यहाँ पर हम शिक्षा की बात कर रहे हैं इसलिए वहीं सीमित रहते हुए यह अत्यंत

आवश्यक है कि ''नेबरहुड स्कूल'' की व्यवस्था लागू की जाए, यदि उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री के बच्चे भी उसी स्कूल में पढ़ेंगे जहाँ पर उनके आउट हाउस में रहने वाले बच्चे पढ़ते हैं तो निश्चित रूप से उस विद्यालय का शैक्षणिक तथा अन्य स्तर अपने आप सुधर जाएगा इसका दूसरा सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह होगा कि सब बच्चे जिन्दगी की दौड़ एक ही तथा समान प्रारम्भिक बिंदु से प्रारम्भ करेंगे और यह देश कह सकेगा कि वह प्रत्येक बच्चे को समान अवसर दे रहा है इसके बाद वह बच्चा क्या कर पाता है यह उसके परिश्रम और उसकी मेधा पर निर्भर करेगा

४. शिक्षा के अधिकार अधिनियम, बाल श्रम अधिनियम तथा समान प्रकार के अन्य अधिनियमों के अंतर्गत इस प्रकार की व्यवस्थाएं होना आवश्यक है जिसमें बच्चे यदि विद्यालय ना जाएँ और/या कहीं मजदूरी करें तो उसके लिए उसके माता-पिता, शिक्षक तथा नियोक्ता, तीनों के ही विरुद्ध कार्यवाही की जाए न कि केवल नियोक्ता के विरुद्ध, क्योंकि सत्य यह है कि ऐसे अधिसंख्य माताओं/पिताओं के लिए बच्चा उनकी पारिवारिक आमदनी बढ़ने का साधन है और उनकी सोच इसके आगे नहीं जाती है।

५. कक्षा आठ तक शिक्षा सभी के लिए एक सी हो और सबके लिए अनिवार्य हो । कतिपय राज्यों में आज कल सभी छात्रों को उत्तीर्ण करने का जो चलन हो गया है उसको तत्काल प्रभाव से समाप्त करने की आवश्यकता है क्योंकि वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य तब तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक बच्चों की प्रतिभा तथा रुझान की कड़ी परीक्षा न ली जाए। कक्षा आठ की परीक्षा यह बतलाएगी कि कौन से बच्चे शिक्षा में रूचि नहीं रखते और उनका साक्षर होना ही पर्याप्त है यदि ऐसे बच्चे अन्यथा प्रयत्न नहीं करते हैं तो वह अकुशल श्रमिक के रूप में अपना भविष्य तय कर सकते हैं

६. कक्षा नौ और दस की पढ़ाई में यह ध्यान दिया जाना है कि अब बच्चों को साक्षरता से आगे ले जाना है और इसके लिए उनकी कड़ी परीक्षा लेने के साथ साथ उनके रुझान को समझने की प्रक्रिया भी चालू करनी होगी ताकि वह यह समझना प्रारम्भ कर सके कि वास्तव में वह क्या बनना चाहता है कक्षा दस की परीक्षा पुनः यह तय करेगी कि विद्यार्थी अग्रिम शिक्षा के योग्य है अथवा नहीं, यदि वह अग्रिम शिक्षा के योग्य है तो अपनी रूचि तथा परीक्षाफल के आधार पर कक्षा ग्यारह में प्रवेश पायेगा अन्यथा आई टी०आई० जैसे पाठ्यक्रमों में प्रवेश

लेकर कुशल श्रमिक या मैकनिक बन सकता है। फौज में सिपाही के लिए भी कैरियर यहीं तय हो जाएगा।

७. कक्षा बारह की परीक्षा के पश्चात विद्यार्थी को यह तय करना होगा कि वह भविष्य में क्या बनना चाहता है-डाक्टर, इन्जीनियर, प्रशासक, वकील, फौजी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक आदि सभी व्यवसाय या जीवन के समस्त क्षेत्रों में से कोई एक यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक क्षेत्र के लिए पाठ्य अवधि समान होगी तथा सभी प्रतियोगी परीक्षाओं का स्तर एवं उच्च शैक्षणिक कक्षाओं की प्रवेश परीक्षाओं का स्तर एक समान ही होगा, इसमें विषयवार अथवा प्रतियोगी परीक्षाओं के सन्दर्भ में क्षेत्रवार कोई भी अंतर नहीं होगा महत्वपूर्ण यह है कि सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों जैसे बी०ए०, बी०एससी०, बी० काम० आदि का स्तर भी वही होगा जो एम०बी०बी०एस० या बी० टेक० आदि का है। अर्थ यह है कि यह नहीं माना जाना चाहिए कि ये पाठ्यक्रम दोयम दर्जे के हैं और क्योंकि इंजीनीयरिंग में नहीं आ पाए इसलिए बी.एससी. कर रहे हैं तथा इसी प्रकार क्योंकि इन्ही सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों में आने वाले विद्यार्थी ही सभी विधाओं के शिक्षक बनेंगे और इसलिए वस्तुतः उनका बौद्धिक स्तर लगभग सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए, अर्थ यह है कि स्नातक सभी बराबर योग्यता के हों, चाहे एम० बी०बी०एस० हों या बी०एससी० ।

८. कुछ व्यवसायिक पाठ्यक्रम ऐसे हो सकते हैं जैसे बी०एड०, एम०एड० जिनमें प्रवेश इन्टर के बाद संभव नहीं है। उसके लिए स्नातक या स्नातकोत्तर परीक्षा के बाद ही चयन किया जाना उचित एवं संभव होगा परन्तु यह शिक्षा का क्षेत्र है और हमको सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क चाहिए जो शिक्षा के क्षेत्र में आयें और अपने को उतना ही सम्मानित और गौरवान्वित अनुभव करें जिसके वे हकदार हैं ।

९. अपने अपने क्षेत्रों में स्नातकोत्तर तथा शोध एवं आविष्कार की व्यवस्था इसी प्रक्रिया का अंग होगी

१०. इस पूरी प्रक्रिया में पुनर्परीक्षा की व्यवस्था सदैव और प्रत्येक स्तर पर रहेगी अर्थात यदि कोई कक्षा आठ के बाद कक्षा नौ में प्रवेश के योग्य नहीं पाया जाता है तो वह सदैव के लिए मजदूरी करने के लिए अभिशप्त नहीं हो जाएगा। वह जब तक चाहे कक्षा आठ, दस, बारह की परीक्षाएं यथा स्थति देता रह सकता है परन्तु उसके लिए परीक्षा के स्तर में कोई ढिलाई नहीं की जायेगी। आज-कल जो

व्यवस्था है उसके अंतर्गत एम०ए० की डिग्रीधारक की वास्तविक योग्यता कभी-कभी हाई स्कूल भी नहीं होती है, उद्देश्य यह है कि जिसके पास जो डिग्री या प्रमाण पत्र है वह वास्तविक रूप में उसके योग्य हो

११. इस पूरी प्रक्रिया में क्षैतिज प्रवेश की व्यवस्था सदैव रहेगी क्योंकि ऐसा न करना संविधान के विपरीत होगा, परन्तु यह गंभीर विचार का बिंदु है कि क्या एक प्रशासनिक अधिकारी और एक पुलिस अधिकारी या एक न्यायाधीश या एक औद्योगिक प्रबंधक बनने के लिए एक ही प्रकार की अभिरुचि और योग्यता चाहिए ? प्रश्न यह है कि क्या यह उचित है कि आई०ए०एस० नहीं बन पाए तो आई०पी०एस० बन गए जबकि दोनों क्षेत्रों के लिए मानसिक और वैचारिक संरचनाओं की अपेक्षाएं पूर्णतः पृथक-पृथक हैं एम० टेक० किया या एम०बी०ए० किया और आई० आई० टी० या आई०आई०एम० से किया और फिर बाद में आई०ए०एस० बने, ऐसा व्यक्ति मन लगा कर के क्या काम करेगा जब उसे अभिरुचि का ही ज्ञान नहीं है तो वह न अपने साथ न्याय कर रहा है न अपने कार्य के साथ वस्तुतः जो व्यवस्था और दर्शन एम०डी०ए० की परीक्षा में है वही दर्शन सभी क्षेत्रों में होना चाहिए, केवल अच्छी मेधा होना ही अच्छे वकील, अच्छे जज, अच्छे प्रशासक, अच्छे वैज्ञानिक, अच्छे शिक्षक होने की गारंटी नहीं है मेधा और परिश्रम के साथ रुझान भी होना चाहिए जिसको जांचने परखने की व्यवस्था कक्षा नौ, दस, ग्यारह, बारह की पढ़ाई के दौरान प्रस्तावित की गयी है

१२. राजनीति के क्षेत्र में आने के लिए कोई परीक्षा आज तक कहीं भी तय नहीं की गयी है और न की जानी चाहिए परन्तु राजनीतिक दल अगर यह तय कर लें कि उपरोक्त कठिन शिक्षा प्रणाली के अनुसार स्नातक व्यक्ति ही किसी राजनीतिक पद पर आ सकता है और सक्रिय राजनीति में रहने की अधिकतम आयु, जैसा आपने किया है, सभी दल तय कर लें तो राजनीतिज्ञों का सम्मान भी बढ़ेगा और देश की जनता का उन पर विश्वास भी बढ़ेगा, शिक्षक और राजनीतिज्ञ दो ऐसे क्षेत्र हैं जिसमें पर्याप्त गरिमा और स्तर के बगैर देश में बहुत बड़े सुधार की आशा नहीं की जानी चाहिए, यदि गौर किया जाए तो पाया जाएगा कि ‘‘सकल घरेलू उत्पाद’’ या ‘‘प्रति व्यक्ति आय’’ ही देश की उन्नति का मापदंड नहीं है ‘‘असली मापदंड है जनता की सोच जिसको प्रभावित करने और बनाने में शिक्षक और राजनीतिक व्यक्ति का सर्वाधिक महत्त्व है।

१३. जो शिक्षक, चाहे वे किसी भी स्तर के हों, राजकीय कोष से अपना वेतन प्राप्त करते हों, उन पर राजनितिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए वही आचरण संहिता लागू होनी चाहिए जो राजकीय सेवकों पर लागू होती है

यह एक बहुत ही संक्षिप्त रूपरेखा है जिसको लागू करने के लिए केवल दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता है जो प्रधानमन्त्री जी आप में है इसके लिए यह भी आवश्यक होगा कि इसके क्रियान्वयन की रूपरेखा में सहभागिता उनकी हो जो जमीनी स्तर पर समस्याओं से जूझ रहे हैं और अंतिम रूप बेशक बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों द्वारा दिया जाए, इससे कोई असहमत नहीं होगा कि शिक्षा के क्षेत्र में यदि दस प्रतिशत का भी सुधार होता है तो अन्य क्षेत्रों में इसका परिणामी सुधार कई गुना होता है अगर हम शिक्षा को शिक्षा के क्षेत्र को संवार लें और प्रत्येक बच्चे को समान अवसर देना सुनिश्चित कर सकें तो तमाम राजनितिक और सामजिक कुरीतियों को यदि शून्य न भी कर पायें तो भी उनकी तीव्रता में कमी अवश्य आ जायेगी आरक्षण, लिंग-भेद, जाति, सम्प्रदाय के आधार पर भेद-भाव, दहेज प्रथा अत्यधिक जनसँख्या वृद्धि जैसे तमाम मुद्दों की धार स्वयमेव कुंद हो जायेगी

एक बिंदु और, जो सबसे महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र होते हुए भी भारत में कदाचित शासक वर्ग ऐसे वर्ग को पसंद करता रहा है जो बगैर सोचे समझे उनका अनुसरण करें और धीरे-धीरे व्यवस्था व्यक्ति-केन्द्रित होती जा रही है। अब राजनीतिक दल सिद्धांतों के आधार पर नहीं, व्यक्तिगत लाभ-हानि के आधार पर चलने लगे हैं और व्यक्ति से दल की पहचान होने लगी है न कि दल से व्यक्ति की यह इसलिए हुआ है क्योंकि ऐसा चाहा गया है अन्यथा क्यों डिग्री धारक वास्तविक रूप से पढ़े लिखे नहीं हैं क्योंकि पढ़े लिखे होने की पहचान है विवेकशक्ति का होना और विवेकशील व्यक्ति पूर्णतः अंधभक्त नहीं हो सकता है कदाचित इसी आधार पर तय हुई है शिक्षा के प्रति सरकार की गंभीरता।

निवास : 20 / 31, इंदिरा नगर, लखनऊ-2260106
मो० : 09415408018 । फैक्स : 0522–2346563
ई-मेल : dubey_dn31@yahoo.co.in

OOO

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow.

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon

Dr. V. K. Mishra

ड्राइंग रूम वार्ता - एकलव्य

❑ सम्पादक

प्रस्तुत वार्तालाप ड्राइंग रूम में न होकर कोर्ट परिसर में हुई थी परन्तु इसकी विषय वस्तु पौराणिक घटनाओं को सकारात्मक दृष्टि से देखते हुए उस समय की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ही विवेचना करने की सीख देती है। अतः इस वार्ता को इसी शीर्षक के अंतरगत दिया जा रहा है।

पृष्ठ भूमिः– *आज आचार्य द्रोण शिष्यों को अस्त्र विद्या के प्रायोगिक अनुभव के लिये आखेट हेतु वन ले गये। शिष्य कदाचित अनुभव रहित थे अतएव गुरू के साथ कुछ कुत्ते भी थे जो मात्र सूँघ कर किसी जन्तु के होने की चेतावनी दे सकते थे। एक कुत्ता आगे आगे भौंकता चल रहा था। एकाएक सभी ने एहसास किया कि आगे वाले कुत्ते की आवाज बन्द हो गई। किसी बड़े हिंस्र जन्तु की आशंका से सभी सतर्क हो गये। सबने देखा वह कुत्ता दुम दबा कर उनकी तरफ आता दिखा। कुत्ते का मुँह तीरों से भरा था वह भौंकने में असमर्थ था। अर्जुन आगे बढ़े, वह ही सबसे भावुक व सहृदय थे, उन्होंने कुत्ते के मुँह से तीर निकाले। सब लोग आश्चर्य चकित थे क्योंकि कुत्ते के शरीर में या मुँह में कोई घाव नहीं था। फिर कैसे इसका मुँह तीरों से भर गया? यह किसी अद्वितीय धनुर्धर का ही चमत्कार हो सकता है। अर्जुन की संकुचित दृष्टि गुरू की ओर गई जिन्होंने उसे विश्व का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होने का आशीष दिया था। गुरू ने आशय समझते हुए कहा चलो देखते हैं कौन है।*

एक समतल स्थान पर एक वनवासी गुरू द्रोण की प्रतिमा के समक्ष धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था। उसका हस्त लाघव, लक्ष्य भेद आश्चर्यजनक था। गुरू द्रोण को देख उसने आचार्य को साष्टांग प्रणाम किया। आगे क्या हुआ यह सभी जानते हैं।

परन्तु क्या द्रोण ने सचमुच इतना घृणित कार्य किया? भरद्वाज गोत्र का होने नाते यह बात मुझे हमेशा सालती रहती थी (आचार्य द्रोण महर्षि भरद्वाज के पुत्र थे जिनके नाम से गोत्र विख्यात हुआ)

बात उन दिनों की है जबकि मैं सर्जन बलरामपुर अस्पताल के पद से सहायक निदेशक के रूप में स्वास्थ्य महानिदेशालय में तैनात किया गया। निदेशालय का कार्य मेरी विशेज्ञता और रूचि के अनुरूप नहीं था, फिर भी पद का दायित्व तो था ही जिसका निर्वहन मैं कर रहा था। एक दिन एक सिपाही कोर्ट का सम्मन लेकर आया। चलते समय उसने कहा ''डॉ० साहब पूरी तैयारी के साथ और टाइम से ही आने का प्रयास करियेगा सम्भवतः आपको सुबह से शाम तक कोर्ट में बैठना पड़े।

निश्चित दिन मैं सुबह १०:३० पर कोर्ट पहुँच गया और शाम तक बैठा रहा परन्तु गवाही नहीं हुई। जज साहेब ने शिष्टाचार वश दो तीन बार मुझे सांत्वना देते हुए और इन्तजार करने का आग्रह किया। मैंने कहा कि मैं किताब लेकर आया हूँ इन्तजार करने में ज्यादा कष्ट नहीं होगा। उस दिन गवाही नहीं हुई। अगले दिन मैं फिर १०:३० बजे कोर्ट पहुँच गया। लन्च के समय जज साहेब ने चैम्बर में बुला कर चाय-पानी कराया

और बताया कि मा० उच्च न्यायालय ने केस की सुनवाई की समय सीमा निर्धारित कर दी है, बचाव पक्ष के अधिवक्ता किसी कारण से या किसी प्रयोजन वश उपस्थित नहीं हो पा रहे हैं। अतः आपका बयान नहीं हो पा रहा है। आपको व अन्य गवाहान को भी कोर्ट में उपस्थित रहना पड़ रहा है कि ऐसा न हो कि आपके जाते ही अधिवक्ता आ जायें। जज साहेब बड़ी कृपा करके मुझे चैम्बर में बैठ कर इंतजार करने की अनुमति दे दी। तीसरे दिन सुबह वकीले सरकारी ने मेरा बयान लिख दिया और क्रासएग्जामिनेशन के लिये फिर इन्तजार करने को कहा। लन्च के समय जज साहेब के साथ दो वकील सहबान भी चैम्बर में आये। वकील साहेब द्विज थे परन्तु अतिआधुनिक विचारधारा के थे। उनके सर्वजन हिताय धारणा के चश्में से हमारे पूर्वजों के सभी कृत्य निन्दनीय लगते थे। चैम्बर में बैठते ही उन्होंने जज साहेब को इगिंत करते हुए कहा कि यदि एकलव्य अपना मुकदमा आपके सामने लाता तो आप क्या निर्णय देते?

जज साहेब ने मुस्कराते हुए कहा वकील साहेब आप तो ज्ञाता हैं आप कैसे बगैर दूसरा पक्ष सुने बगैर निर्णय देने को कह रहे हैं?

वकील साहेब कुछ असहज हुए। जज साहेब ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा ''ठीक है आपने अभियोजन का पक्ष रखा, मैं बचाव का पक्ष रखता हूँ उसके बाद डॉ० साहेब निर्णय देंगें। मैंने प्रतिवाद किया कि मैं कानून के बारे में तो जानता नहीं, मैं निर्णय कैसा दूँगा। जज साहेब ने सांत्वना दी'' डॉ० साहेब कानून ज्यादातर व्यवस्थायें प्रचलित सामाजिक रीतियों और ''लोजिक'' पर आधारित होती हैं। कुछ विशेष तकनीकी बिन्दुओं को छोड़ सभी सहजबुद्धि से ही निर्णीत होती हैं और यही वजह है कि बदलते समय के अनुसार विधायिका और मा० उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालय देश के कानूनों में परिवर्तन करते रहते हैं।

वकील साहेब ज्ञानी थे। बोले इसीलिए वेदों के बाद वक्त-वक्त पर तमाम स्मृतियाँ लिखी गई। जज साहेब ने कहा ''जी हाँ आज भी २१ स्मृतियों के नाम गिनाये जा सकते हैं।''

मैंने आश्चर्य से कहा ''२१ स्मृतियाँ तो इनमें बहु चर्चित 'मनुस्मृति' का स्थान कहाँ है?

वकील साहेब ने बताया कि हम लोग वैवस्त मनु के युग में चल रहे हैं अतः हमारे पूर्वज वैवस्त मनु की स्मृति से गाइड होते थे।

जज साहेब ने मुझसे कहा डॉ० साहेब नोट किया जाये कि हमारे पूर्वज मनुस्मृति से गाइड होते थे। ''मैंने हँसते हुए कहा ''प्वाइन्ट नोटेड''

जज साहेब ने कहा वकील साहेब याद होगा कि पंजाब में कुछ वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को गलत ''जाति प्रमाण-पत्र'' देने के कारण निलम्बित कर दिया गया था।

वकील साहेब ने हाँमी भरी ''जी हाँ याद है। वह अभ्यर्थी जो अधिकारी न होते

हुए भी गलत जाति प्रमाण–पत्र के कारण आरक्षण पा कर चयनित हुए थे उनका चयन रद्द कर दिया गया और साथ ही साथ उन पर धोखा धड़ी का मुकदमा चला।

जज साहेब ने पूँछा ''क्यों''

वकील साहेब आवेश में ''अगड़े यदि पिछड़े बन कर लाभ उठाने की हिमाकत करेंगे तो उन्हें दडिंत किया ही जायेगा।

जज साहेब ने फिर पूँछा ''क्यों''

इस बार वकील साहेब कुछ झुंझलाते हुए अंग्रेजी में बोले ''दिस इज़ ला अप द लैन्ड''

इस पर जज साहेब अत्यंत संयत स्वर में बोले ''वकील साहेब आचार्य द्रोण का कृत्य भी उस समय के कानून के अनुरूप था''

वकील साहेब को झटका लगा। पता नहीं ला ऑफ द लैन्ड कहने का पछतावा था या वाकई उन्हें जज साहेब की बात अपील की। बोले ''क्या मतलब''

जज साहेब ''उन दिनों धनुर्वेद का अध्ययन और अभ्यास ब्रह्मण और क्षत्रियों के अलावा वर्जित था तथा दंडनीय अपराध था।

बात बहुत ही शांत स्वर में कही गयी थी परन्तु उसका असर सबके कानों और मस्तिष्क में घन के प्रहार के समान था।

जज साहेब ने फिर कहना शुरू किया ला ऑफ द लैन्ड के तहत ही मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को भी शम्बूक और सीता पर निर्णय लेने पड़े''।

थोड़ी देर तक सभी चुप रहे। फिर वकील साहब कुछ सोचते हुए बोले ''क्या यह जन साधारण को दबा कर रखने वाला कानून नहीं था''।

जज साहेब ने मुझे देखते हुए कहा" जी नहीं। आत्मरक्षा के लिये तो धनुष बाण समुचित है परन्तु धनुर्वेद का ज्ञान . . . . . समाज और देश के लिए खतरा हो सकता है। जितना ही शक्तिशाली अस्त्र हो उसे देते समय शिष्य की पात्रता का ध्यान रखना चाहिये अन्यथा अनर्थ हो सकता है। राम और लक्ष्मण युद्ध में कई बार मर्मान्तक रूप से घायल हुए फिर भी उन्होंने रावण या मेघनाथ पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नही किया। द्रोणाचार्य स्वयं अपने पुत्र को ब्रह्मास्त्र नहीं देना चाहते थे परन्तु पत्नी के हठ के चलते उन्हे अश्वत्थामा को यह विद्या सिखानी पड़ी पर वह ब्रह्मास्त्र को शांत करना नहीं सीख सका। उसने मात्र अपनी सुरक्षा में ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जिसे कि कृष्ण और वेदव्यास ने शांत किया वरना प्रकृति का विनाश हो चुका होता''।

दूसरे वकील साहब जो अभी तक मात्र श्रोता ही थे बोले ''यह बात बिल्कुल न्याय संगत है। ए के ४७ रायफल केवल सेना और विशेष सुरक्षा कर्मियों को ही अनुमन्य है परन्तु साधारण नागरिक यदि यह हथियार रखता है तो दंड का भागी होगा। संजय दत्त जो कि एक मशहूर कलाकार थे ओर उनका कोई अपराधिक रिकार्ड भी नहीं था फिर भी उन्हें टाडा और सुरक्षा अधिनियम में सालों जेल रहना पड़ा''।

पहले वकील साहब ने भी कहा कि संजय दत्त के पिता सुनील दत्त अपने जमाने के महान नायक थे सांसद थे और उनकी देश भक्ति प्रमाणित थी फिर भी संजय चार साल जेल में रहे''।

जज साहेब ''सजा सुनाने के बाद न्यायाधीश ने संजय दत्त को चैम्बर में बुलाकर बताया कि वह स्वयं संजय के बहुत बड़े प्रशंसक हैं और वह भी व्यक्तिगत रूप से विश्वास करते हैं कि प्रतिबंधित हथियार रखने के पीछे उनकी कोई अपराधिक भावना नहीं रही होगी, मगर देश के कानून के अनुसार उन्हें यह सजा सुनानी पड़ी''।

द्रोणाचार्य ब्राह्मण थे गुरू थे दयालु थे इसलिये एकलव्य को बहुत छोटी सजा दी और गुरू भक्ति पर आशीर्वाद भी दिया। यदि वह उसे दंडाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करते तो दंड और भी भीषण हो सकता था।

वाक्य खत्म करने के बाद जज साहेब ने मेरा निर्णय जानना चाहा। मैंने सादर उनसे निवेदन किया कि आपके इतने विस्त्रत व्याख्यान के बाद शायद अभियोजन स्वयं अपना वाद वापस लेना चाहेगा। सभी ने सहमति में सिर हिलाया।

इसके साथ ही जज साहेब उठ खड़े हुए और गाउन पहनते हुए बोले . . . वकील साहब एकलव्य की गुरू भक्ति अद्वितीय थी। शायद इसीलिये वह कहानी का विलेन होते हुए भी हीरो बन गया।

हम सभी ने इशारा समझा और चैम्बर से निकल कर कोर्ट आ गये।

आधिवक्ता अभी भी क्रास करने नहीं आये थे अतः जज साहेब ने गवाही बन्द कर दी और मुझे जाने की अनुमति दे दी।

घर जाते वख्त मैं सोच रहा था इस चर्चा से एक सीख मिली कि किसी व्यक्ति या घटना पर निर्णय देने के पहले उस समय की परिस्थितियों प्रचलित धारणायें और कानून का ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

❍❍❍

चक्र-व्यूह

अर्जुन अजेय थे। अर्जुन के अजेय होने से ही चक्र-व्यूह की नींव पड़ी। अर्जुन से द्वेश ही अर्जुन पुत्र अभिमन्यु की मृत्यु का कारण बनी। एक-एक करके अभिमन्यु को कोई न जीत पाया तो सभी ने मिल कर प्रहार किया। भाई, गुरु और चाचा ही अभिमन्यु के हन्ता थे। अभिमन्यु का बध कर उन सबने अर्जुन से ही प्रतिशोध लिया।

क्या ऐसे चक्र-व्यूहों की रचना आज भी नहीं हो रही है?

जैविक शौचालय-कार्यविधि एवं उपयोगिता

❑ डा० अनुराग तिवारी

जैविक शौचालय समान्यता निर्जल शौचालय होते है, जिसमें जल की आवश्यकता नही होती है। इन शौचालय के माध्यम से घर में उपयोग होने वाले साफ पानी को बचाया एवं उसका इस्तेमाल कम किया जा सकता है। जैविक शौचालय का इस्तेमाल ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यानों एवं ऐसे स्थानो के लिये किया जाता है जहाँ जल की उपलब्धता कम है एवं उन स्थानों के लिये भी किया जाता है़ जहाँ सीवर निकासी की व्यवस्था नही है जैविक शौचालय सेप्टिक टैक की आवश्यकता को कम कर देने के साथ-साथ विभिन्न प्राकृतिक अपदाओं से पर्यावरण को बचाते है।

एक अध्यन के अनुसार भारत मे लगभग 78% ग्रामीण जनसंख्या के पास शौचालय नही है । भारत वर्ष में लगभग 24 लाख ग्राम पंचायतों में से केवल 10% ग्राम पंचायतो को निर्मल पंचायत का दर्जा प्राप्त है एवं 24% शहरी आबादी के पास शौचालयों का अभाव है संयुक्त राष्ट्र द्वारा सितम्बर 2000 में सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य के अनुसार भारत को स्वच्छ एवं निर्मल भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु सन् 2015 तक 115 लाख शौचालयों का निर्माण करना है जो कि वर्तमान मे एक मुश्किल कार्य है।

केन्द्रीय सीवर प्रणाली द्रारा सीवर व्यवस्था एवं सीवर निकासी केवल शहरी क्षेत्रों के लिये ही उपयोगी है ग्रामीण क्षेत्रों में सीवर निकासी की कोई कारगर व्यवस्था ना होने के कारण लोग सैप्टिक टैक का इस्तेमाल, निर्माण एवं खुले में शौच करने को विवश है ऐसे में जैविक शौचालयों का इस्तेमाल शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिये बहुउपयोगी है।

कार्य विधिः

जैविक शौचालय दो तरह के होते है प्रथम जिसमें मल को एक विशेष प्रकार के पात्र में इकट्ठा करते है, द्वितीय प्रकार के जैविक शौचालय मानव मल एवं मूत्र दोनों को अलग अलग पात्रों में इकट्ठा करते है, घरों में उपयोग होने के बाद उत्पन्न होने वाले जैन निम्नीकारकों को भी इस पात् में मिला दिया जाता है इसके बाद इसका विघटन शुरू हो जाता है एवं जैविक खाद का निर्माण होता है।

प्रथम प्रकार के जैविक शौचालयों में एकत्रित ठोस अपशिष्ट कार्बनिक पदार्थ का विघटन कार्बनिक थर्मोफिलिक (एरोबिक) बैक्टीरिया द्वारा किया जाता है जिसके फलस्वरूप विशिष्ट पात्र का तापमान 50 डिग्री तक पहुँच जाता है एवं रोजजनकों का भी तेजी से विनाश होता है। इस तापमान को प्राप्त करने हेतु कुछ विस्तारक तत्वों **(Bulking Agents)** के अलावा उचित वेटिलेशन, नमी (50-60%) एवं कार्बन - नाइट्रोजन अनुपात (30-55) की भी आवश्यकता होती है जो कि पात्र में एकत्रित ठोस पदार्थ का जैविक तरीके से विघटन करने में सहायक होते है। पात्र में एकत्रित मल मूत्र

अथवा ठोस पदार्थ बिना विस्तारक तत्वो **(Bulking Agents)** के इस तापमान को प्राप्त नही कर सकते ये विस्तारक तत्व **(Bulking Agent)** जिसमें मुख्यतः पेड की छाल, राख, **saw dust** एवं कागज के टुकड़े इत्यादि नमी को सोख कर उचित वातन को बढ़ाते है। इन विस्तारक तत्वों **(Bulking Agents)** को नियमित रूप से जैविक शौचालयों में लगे विशिष्ट पात्र में मिलाना पड़ता है क्योंकि ये नमी को अवशोषित कर दुर्गन्ध को कम करते है ।

विघटन क्रिया के दौरान एकत्रित ठोस अपशिष्ट पदार्थ के द्रव्यमान (मास) में कमी (लगभग **90%**) आती है जिसके फलस्वरूप उसकी भंडारण क्षमता बढ़ती है कम्पोस्टिग के दौरान उत्पन्न इस खाद को बगीचे अथवा खेत में डाल कर उस मिट्टी की उर्वरक क्षमता को बढ़ा सकते है।

आजकल जैविक शौचालय के कई तरह के डिजाइन एवं माडल उपायोगिता के आधार पर उपलब्ध हैं। जैविक शौचालयों की कीमत उनके डिजाइन, तकनीक एवं उपयोगिता के आधार पर निर्धारित की जाती है सामान्यतः दो वयस्क एवं दो बच्चों के परिवार वाले घर के लिये जैविक शौचालय की कीमत **1200-6000 US dollar** के बराबर होती है जबकि बड़े पैमाने पर जन सुविधा वाले स्थानों के लिये जैविक शौचालय की कीमत **20,000 US dollar** के आस पास होने का अनुमान है।

जैविक शौचालय का इस्तेमाल हर जगह एवं विषम परिस्थितियों (आपदा ग्रस्त क्षेत्रों) में भी किया जा सकता है। इनका इस्तेमाल दूरस्थ क्षेत्रों में जहाँ फ्लश प्रकार के शौचालयों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता वहाँ पर भी इसका उपयोग कर सकते है।

सभी जैविक शौचालयों की अलग विशेषता होती है जिसके अर्न्तगत;

- जैविक शौचालयों प्रभावी लागत वाले जिनमें मानव जनित मल का निस्तारण एवं कम्पोस्टिंग एक ही स्थान पर होता है इसके लिये केन्द्रीय सीवर प्रणाली का उपयोग नही करना पड़ता है ।
- जैविक शौचालयों में पानी का इस्तेमाल फ्लश करने के लिये नही होता है ।
- जैविक शौचालयों में पोषक तत्वों प्रमुखतः (नाइट्रोजन एवं फास्फोरस) को तंग जैविक चक्र के अर्न्तगत रखा जाता है जिससे कि वह पर्यावरण में नुकसान न पहुँचाये ।
- जैविक शौचालय पोषक तत्वों एवं रोग जनित जीवाणु को सीधे मृदा, सतही एवं भूगर्भ जल में मिलने से रोकते है ।

भारत वर्ष में जहाँ एक और अधिकाशंतः लोग शौचालयों की उपलब्धता न होने के कारण खुले में शौच करने को विवश है जिसके कारण कई प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त हो जाते है एवं अनेक प्रकार की परेशानियों का भी सामना करते है जिनमें

मुख्यतः बच्चों में कुपोषण एवं महिलाओं के साथ हिंसा भी शामिल है भारत सरकार भी हर वर्ष इन समस्याओं के निराकरण हेतु एक बड़ी राशि खर्च करती है।

ऐसे मे जैविक शौचालयों का इस्तेमाल इन सभी परशानियों से छुटकारा दिलाने के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ाता है एवं सरकार के स्वच्छ भारत-निर्मल भारत अभियान के लक्ष्य को भी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पताः अजीवन सदस्य कान्यकुब्ज सभा, लखनऊ
सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग पी.एस.आई.टी.
कालेज आफ इंन्जीनियरिंग, भौंती, कानपुर- 208309
मो०- 9415735630
E-mail: 7071@rediffmail.com

ooo

इन्डियन मिल्कमैन

किताबों में पढ़ा था भारत में दूध और दही की नदियाँ बहती थीं। परन्तु हमारे बचपन ने तो वह भारत देखा है जिसमें दोपहर के नाश्ते में सरकारी स्कूल के बच्चों को अमरीका से आये दूध पावडर से बना दूध दिया जाता था। दूध ड्रम में बनाया जाता था। लकड़ी पर गर्म किया जाता था और कभी-कभी जली लकड़ी से चलाकर पावडर से दूध बनता था। बच्चे चुल्लू लगा कर पीते थे। ७० के दशक में गर्मी के दिनों में खोया, पनीर, रबड़ी बनाने पर मनादी लग जाती थी जिससे बच्चों को पीने के लिये दूध उपलब्ध रहे। ऐसे में एक महापुरुष विदेश से लौटता है....अपमानित होकर। विदेश में किसी ने उससे कहा कि तुम्हारे भारतीय दूध से लन्दन के सीवर का पानी ज्यादा साफ है।

भारत आकर उसने दुग्ध उत्पादन में अग्रणी संस्था ''नेस्ले'' से दुग्ध तकनीक माँगी। नेस्ले ने यह कह कर मना कर दिया कि अशिक्षित ग्रामीणों को दुग्ध तकनीक ऐसी संवेदन ील तकनीक नहीं दी जा सकती। श्री कुरियन जो मूलतः केरल के निवासी थे, ने गुजरात के ''आणंद'' जिले में 'सहकारी दुग्ध उत्पादन' शुरू किया। स्वदेशी तकनीक का प्रयोग कर भारत में ''श्वेत-क्रान्ति'' का सूत्रपात किया।

इस धवल क्रान्ति के प्रणेता ''श्री कुरियन वर्गिस'' आज के ***Milk man of India*** *को हिन्दी में भारतीय ग्वाला न कह कर ''भारतीय दुग्ध वैज्ञानिक'' कहा जाता है। श्री कुरियन को आधुनिक भारत के निर्माताओं के रूप में याद किया जायेगा।*

भारत के प्रत्येक नागरिक के साथ कान्यकुब्ज सभा और ''वाणी'' अपने सभी पाठकों के साथ उनको नमन करती है।

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

**एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए.एल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522-2344328**

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवम यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

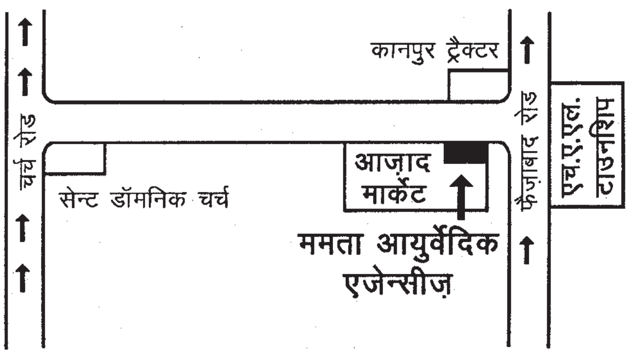

भारतीय दर्शन में योगसाधना

❑ महेश चन्द्र द्विवेदी

योग का शाब्दिक अर्थ होता है जोड़ एवं भारतीय दर्शन में इसका प्रयोग मायाजनित अंधकार में फंसे हुए जीव को मुक्त कर परमात्मा से जोड़ने हेतु किया गया प्रतीत होता है। योग का उद्देश्य निश्काम भाव से कर्तव्य करते हुए उनसे पूर्ण निर्लिप्तता एवं निःस्पृहता प्राप्त करना है, क्योंकि यही माया के बंधन तोड़कर मोक्ष प्राप्ति का उपाय है। इस सम्बंध में व्यास के पुत्र शुकदेव की कथा बड़ी समीचीन है। ऋषि व्यास ने अपना सम्पूर्ण ज्ञान शुकदेव को प्रदान करने के उपरांत उन्हें कर्मयोगी राजा जनक के पास आगे ज्ञानार्जन हेतु भेजा। राजा जनक को शुकदेव के आने की सूचना मिलने पर उन्होंने अपने महल के कर्मचारियों को समुचित निर्देष दे दिये। शुकदेव ने द्वारपाल को जब अपना नाम बताया एवं राजा जनक से मिलाने का अनुरोध किया, तो उसने उनकी बात पर कोई ध्यान न देकर उन्हें द्वार के बाहर ही तीन दिवस तक बिठाये रखा। शुकदेव तीनों दिन बिना कोई क्रोध, क्षोभ, लज्जा अथवा ग्लानि का अनुभव कर शांतिपूर्वक बाहर बैठे रहे। चौथे दिवस राजा के विशेष अनुचर उन्हें बड़े आदरपूर्वक अंदर ले गये एवं वहां उन्हे साग्रह स्नान, भोजन आदि कराया गया। शुकदेव के मन में इस आदरभाव से किसी विशेष प्रसन्नता अथवा अहम् का भाव नहीं आया। फिर उन्हें राजा जनक की नृत्यशाला में उनके समक्ष नृत्य प्रस्तुत किया गया। वहां अनेक वादक वाद्ययंत्र बजा रहे थे एवं एक से एक सुंदर नर्तकियां नृत्य एवं गायन कर रहीं थीं। राजा जनक ने एक पूरी तरह भरा हुआ दूध का लोटा मंगाया एवं शुकदेव से कहा कि वह उस लोटे को एक हाथ में लेकर सम्पूर्ण नृत्यशाला में वादकों एवं नर्तकियों के बीच घूमकर आयें। शुकदेव ने ऐसा ही किया। अपने कार्य में पूर्णतः दत्तचित्त रहने के कारण इस क्रिया में लोटे से एक भी बूंद दूध नहीं गिरा। तब जनक जी शुकदेव से बोले, 'तुम्हें अब मुझसे कोई और योगसाधना सीखने की आवश्यकता नहीं है।' और उन्हें ससम्मान वापस कर दिया।

यद्यपि योगसाधना के अनेक भाग-उपभाग गीता में वर्णित हैं, परंतु इसके चार भाग प्रमुख हैं: कर्मयोग, ज्ञानयोग, राजयोग, एवं भक्तियोग। ज्ञानयोग को सांख्ययोग भी कहा गया है एवं राजयोग को अभ्यासयोग एवं हठयोग का नाम भी दिया गया है। योगों का उद्देश्य सांसारिक सुख, सम्पत्ति अथवा यश अर्जित करना नहीं है और न स्वर्ग में अपना स्थान सुनिश्चित करना है इन समस्त योगों का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति अर्थात परमात्मा से एकाकार होकर आवागमन के भवबंधन से मुक्त होना है। कर्मयोग, ज्ञानयोग, एवं राजयोग लौकिक क्रियायें बताई गई हैं जब कि भक्तियोग भगवन्निष्ठ क्रिया बताईं गई है। कर्मयोग एवं राजयोग में जगत प्रधान है, ज्ञानयोग में जीव प्रधान है एवं भक्तियोग में भगवन्लीनता प्रधान है। समस्त योगों में भक्तियोग को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

कर्मयोगः

कर्मयोग का अर्थ है मनसा, वाचा, कर्मणा अनासक्त रहकर अपना कर्तव्य करते

रहना।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने प्रमादरत अर्जुन को कर्तव्य पथ पर प्रेरित करने हेतु जो उपदेश दिया था, उसमें तृतीय अध्याय में कर्मयोग का सविस्तार वर्णन किया है। इसके मुख्य अंश निम्नवत हैं:

अ. 'कर्मेंद्रियैः कर्मयोगमअसक्तः स विशिष्य ते'- अर्थात जो आसक्तिरहित होकर कर्मयोग का आचरण करता है, वही श्रेष्ठ है।

आ. प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है-अन्न वर्षा से-वर्षा यज्ञ से यज्ञ कर्मों से कर्म वेद से वेद अक्षर ब्रह्म से, अतः परमात्मा यज्ञ/कर्म/ में नित्य स्थित है।

इ. इंद्रियों से परे मन है, मन से परे बुद्धि है, बुद्धि से परे काम है। रजोगुण से उत्पन्न काम ही पाप का कारण है एवं यही क्रोध उत्पन्न करता है।

ई. जो कर्मेंद्रियों को हठपूर्वक रोककर विषयों का चिंतन करता है, वह मिथ्याचारी है। विषयों का चिंतन करने वाला पतन को प्राप्त होता है।

उ. जो मनुष्य अपने आप में ही रमण करने वाला और अपने आप में ही तृप्त एवं संतुष्ट है, उसके लिये कोई कर्तव्य नहीं है, अर्थात विदेह समान अनासक्ति की प्राप्ति होने पर मोक्ष प्राप्त करने हेतु कोई कर्तव्य नहीं रह जाता है।

राजा जनक जैसे महापुरुष कर्मयोग द्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार हमारी समस्त शारीरिक एवं मानसिक क्रियायें कर्म हैं एवं वे सब अपनी स्थायी छाप हम पर छोड़ जातीं हैं। हमारे सभी कार्य एवं सभी विचार हमारे मानस में संग्रहीत होते रहते हैं। योगियों के अनुसार सुखकारक अथवा दुखकारक समस्त विचार एवं क्रियायें अंत में पीड़ादायक होतीं हैं; समस्त इंद्रियजनित सुख अंत में पीड़ा पहुंचाते हैं। परंतु यदि हम अपने शरीर को अन्यों की सेवा हेतु निर्मित मान लेते हैं, तो हम स्व को विस्मृत कर देते हैं; तथा यह अनुभव करने लगते हैं कि हम समस्त प्राणियों एवं वस्तुओं में विद्यमान हैं और यह अपनी आत्मा को मायामुक्त कर देने का साधन बन जाता है।

इसी बात को बुद्ध ने निम्न प्रकार कहा है-

मुझे ईश्वर के विषय में आप की विभिन्न मीमांसाओं के जानने की इच्छा नहीं है। आत्मा के विषय में गूढ़ अवधारणाओं पर वाद-विवाद करने का क्या लाभ है? भले बनो और भला करो और यह स्वयं तुम्हें मुक्ति एवं सत्य की ओर ले जायेगा।

अतः कर्मयोगी को 'कर्मण्येवु अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' को याद रखकर एवं स्व को विसार कर सदैव परसेवा में लगे रहना चाहिये।

ज्ञानयोगः

जीव, संसार, माया, आत्मा, परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर परमतत्व की प्राप्ति हेतु प्रयास करना ज्ञानयोग है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग के विषय में कहा गया है:

अ. इस मनुष्यलोक में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कोई दूसरा साधन नहीं है।

ब. अगर तू सब पापियों से भी अधिक पापी है, तो भी तू ज्ञानरूपी नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पापसमुद्र से अच्छी तरह तर जायेगा।

स. हृदय में स्थित अज्ञान से उत्पन्न अपने संशय का ज्ञानरूप तलवार से छेदन कर योग में स्थित हो जा और युद्ध कर।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास ने ज्ञानयोग के विषय में लिखा हैः

'ज्ञान पंथ कृपान कै धारा, परत खगेस होइ नहिं बारा।'

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ज्ञानयोग माया, आत्मा एवं परमात्मा को जानने एवं क्षणभंगुर/संसार तथा स्थायी/मोक्ष का अंतर समझकर परमतत्व से एकाकार होने का साधन है।

राजयोग/अभ्यासयोगः

गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा हैः

यदि तू मन को मुझमें अचलभाव से स्थिर करने में असमर्थ है, तो अभ्यास योग कर।

स्वामी विवेकानंद के मतानुसार राजयोग में साधक स्वयं सत्य की खोज करके ही उस पर विश्वास करता है। यदि ध्यान की शक्ति को अंदरूनी संसार पर केंद्रित कर दिया जाय, तो मन प्रकाशित हो जाता है एवं सत्य स्वयं हमारे समक्ष प्रकट हो जाता है। राजयोग द्वारा हम अपने विचारों का दूसरे के विचारों से अ श्य आदान प्रदान कर सकते हैं। सत्य की खोज हेतु साधक को निम्नांकित मार्ग का अनुसरण करना पड़ता हैः

१. यम/वाह्य बुरे विचारों का त्याग कर मन पर नियंत्रण
२. नियम/अपने विचार, बोली एवं कर्म में पवित्रता
३. आसन/शारीरिक स्वास्थ्य एवं शुद्धि हेतु अभ्यास
४. प्राणायाम/ श्वासक्रिया पर नियंत्रण
५. प्रत्याहार/इंद्रियों को उनके आकर्षण से मुक्त रखने का अभ्यास
६. धारण/ध्यान का केंद्रीकरण
७. ध्यान/संसार को विस्मृत कर परमतत्व मात्र का ध्यान
८. समाधि/परमतत्व की अनुभूत्रि

समाधि की अवस्था में स्थित हो जाने पर योगी पराचेतना प्राप्त कर लेता है।

श्रीकृष्ण ने अभ्यासयोग को उसी अवस्था में अपनाने को कहा है जब साधक अन्य योग अपनाने में अपने को असमर्थ पाता हो, क्योंकि अभ्यास से शास्त्र ज्ञान श्रेष्ठ है, शास्त्र ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है, और ध्यान से कर्मों की इच्छा का त्याग श्रेष्ठ है।

भक्तियोगः

अपने सर्वस्व को परमात्मा के अधीन करके उसमें पूर्णतः रम जाने को भक्तियोग कहा गया है।

गीता में भक्तियोग को सर्वश्रेष्ठ योग बताया गया है। यद्यपि परमात्मा के निर्गुण एवं सगुण दोनों प्रकार में किसी में भी भक्तियोगी अपने को रमा सकता है, तथापि

सम्भवतः सहजता को ध्यान में रखकर/सगुण उपासना को प्रधानता दी गई हैः

अ. जो भक्त परमश्रद्धायुक्त होकर मेरी सगुण उपासना करते हैं, वे मेरे मत से सर्वश्रेष्ठ योगी हैं।

ब. ज्ञानमार्ग पर चलने वाला साधक अपना उद्धार स्वयं करता है, जबकि भगवान में आविष्ट भक्तिमार्गी का उद्धार स्वयं भगवान करते हैं।

स. जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है और जो शुभ अशुभ कर्मों से ऊपर उठा हुआ है, वह शक्तिमान मनुष्य मुझे प्रिय है।

द. जो मेरे लिये ही कर्म करने वाला, मेरे ही परायण और मेरा ही परम भक्त है, तथा सर्वथा आसक्तिरहित और प्राणिमात्र के साथ वैरभाव से रहित है, वह भक्त मुझे प्राप्त होता है।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास ने भक्तियोग का वर्णन इस प्रकार किया हैः

'प्रबल अविद्या तम मिट जाई, हारहिं सकल सलभ समुदाई।

खल कामादि निकट नहिं जांहीं, बसइ भगत जाके उर माहीं।'

अर्थात जिसके हृदय में भक्ति का वास होता है, उसमें प्रबल अविद्या का अंधकार मिट जाता है, उसमें अविद्या लाने हेतु मदादि पतंगों का सारा समूह हार जाता है, एवं काम, क्रोध, लोभ आदि दुष्ट उसके पास भी नहीं आते हैं।

'भगतहिं, ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा, उभय हरहिं भवसम्भव खेदा।' पंक्ति में तुलसीदास ने ज्ञानयोग एवं भक्तियोग दोनों को भव के दुखों का विनाशक बताया है, परंतु उन्होंने इसके साथ यह भी कहा है,

'ज्ञान पंथकृपान कै धारा, परत खगेस होइ नहिं बारा।

जे निर्बिघ्न पंथ निर्बहईं, सो कैवल्य परमपद लहईं।।'

अतः उन्होंनें स्वयं के लिये भी भक्तिमार्ग ही चुना था।

स्वामी विवेकानंद के मतानुसार राजयोग से पराचेतना प्राप्त कर लेने के उपरांत भी योगी पुनः परमभक्ति की अवस्था में ही उतर आता है। जब ईश्वर की भक्ति का साक्षात्कार हो जाता है, तब यह संसार/सागर में/एक बूंद के समान प्रतीत होने लगता है। भक्ति में धर्म विद्यमान है, कर्मकांड में नहीं।

अतः यदि सामर्थ्य हो तो योगियों को शुद्ध एवं निष्छल भक्ति का मार्ग अपनाना श्रेयस्कर है।

'ज्ञान प्रासार संस्थान'
1/137, विवेकानन्द, गोमतीनगर, लखनऊ
मो०: **9415063030**

❍❍❍

औषधं मात्र गंगोदकम् से भी आगे...

डाक्टर पं० मुबारक प्रसाद

(इलेक्शन के समय जब सभी राजनैतिक दल समाज को हिन्दू मुसलमान में बाँट कर, दंगे करा कर अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए सांप्रदायिक हिंसा कराने से भी नहीं चूक रहे हैं, प्रस्तुत संस्मरण 50वें दशक की गंगा जामुनी संस्कृति की छटा दिखाती है।)

सन 1958 मे हम लोग गाजीपुर में थे। मैं ग्यारह प्लस का था और आठवीं कक्षा मे पढ़ता था। पिता डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग आफिसर थे। मई के महीने मे लेडी डाक्टर ने माँ को कैंसर डाइग्नोज किया। तब कैंसर के बारे मे इतना ज्ञान नहीं था। ज्ञानी लोगों ने कहा कैंसर धूम्रपान करने से होता है। आजकल डाक्टर भी जाने किसी को क्या बता दें। बात हंसी मे टल गई। हम लोग गर्मी की छुट्टियों मे अपनी ननिहाल उन्नाव आए। मगर फिर माँ वापस गाजीपुर वापस नहीं जा पायीं। लखनऊ के डाक्टर ने तय कर दिया की माँ को कैंसर ही है और इस कैंसर का धूम्रपान से कोई संबंध नहीं होता है। उस समय कैंसर के इलाज के लिए आगरा मेडिकल कालेज के डाक्टर नवल किशोर का बहुत नाम था। डॉ० नवल किशोर तथा डॉ० टी.पी. वाही का नाम कैंसर की मेडिकल की किताबों में भी आ गया था। वहाँ बड़े चाचा सिविल जज थे। भगवान की बड़ी कृपा। हम लोग इलाज के लिए आगरा आ गए। परंतु आगरा में एक हकीम साहेब ने बगैर ऑपरेशन के ही ठीक करने का दावा किया। सो दो महीने उसमें खराब हुये। जब मेडिकल कालेज पहुंचे तो डाक्टरों ने बताया की अब बहुत देर हो चुकी है। ऑपरेशन होना अब संभव नहीं है। शायद मुंबई (तब बम्बई) टाटा अस्पताल में शायद कुछ हो सके। सब टाटा अस्पताल मुंबई भागे। पर वहाँ भी वही जवाब। दो महीने मे उन्होंने पैलिएटिव रेडियोथिरेपी (हल्की कामचलाऊ बिजली की सिकाई) जो एड्वान्सेड कैंसर में मन बहलाने भर का फायदा करती है देकर इसके बाद ''औषधं मात्र गंगोदकम्'' (अब मात्र गंगाजल ही औषधि है) समझाकर टाटा अस्पताल से वापस कर दिया गया। माँ चलती-फिरती बात करती थी। सब प्रकार से सामान्य दिखती थी। केवल कमजोर होती जा रहीं थी। समझ मे नहीं आ रहा था या हम समझना नहीं चाहते थे की ऐसे कैसे वह ठीक नहीं होंगी। सुना मेडिकल कालेज पटना में एक डाक्टर इस मर्ज के माहिर हैं। हम सब माँ को लेकर पटना पहुंचे। वह सर्जन ऑपरेशन करने को तैयार हो गए। परंतु पूर्ण रूप से ठीक होने के लिए ईश्वरीय चमत्कार चाहिए। हमलोगों के पास कोई और चारा नहीं था। ऑपरेशन के लिए हाँ कर दी गई।

ऐसी कठिन परिस्थितियों मे हमारी कहानी के नायक डाक्टर पं मुबारक प्रसाद की एंट्री होती है। वह मूलतः बहराइच के रहने वाले थे और पटना मेडिकल कालेज मे फाइनल ईयर पढ़ रहे थे। फाइनल ईयर में काफी कुछ डाक्टरी आ जाती है। डाक्टरों और नर्सों से भी अच्छी जान-पहचान हो जाती है। इसलिए इस अंजान देश में डाक्टर मुबारक प्रसाद देवदूत से कम नहीं थे। सुंदर, गोरे चेहरे पर गोल्डेन फ्रेम का चश्मा, कुल मिलकल आकर्षक व्यक्तित्व। जब माँ की तबीयत खराब होती तो वही दौड़भाग करते (होपलेस केसेज में डॉक्टर और नर्सें भी अधिक तत्पर नहीं रह पाते)। माँ प्राइवेट रूम मे थीं। मेरे एक चाचा, मौसी तथा मेरी नानी माँ की देखभाल के लिए साथ थीं। मेरे पिता के विशेष आग्रह पर डॉ० मुबारक सुबह का नाश्ता व दोपहर का खाना कभी-कभी हमारे साथ ही खाते थे। बर्तन नानी ही माँजती थीं। पहले दिन डाक्टर साहब का नाम सुनकर नानी ने पिताजी से पूछा ''कै भईया ई डाक्टर तो मुसलमान हैं''? पिताजी ने फौरन नानी को आश्वस्त हुये कहा'' नहीं अम्मा डाक्टर मुबारक प्रसाद गुजराती ब्राह्मण हैं। गुजरात मे हिंदुओं के नाम भी मुसलमानी लगते हैं। डॉ० साहब बड़े ऊंचे गुजराती ब्राह्मण हैं। बिचारी जो नानी अपनी बेटी की बीमारी व आसन्न मृत्यु से दुखी रहती थी, ने बड़ी सरलता से उच्च कुलीन गुजराती ब्राह्मण जो अकेला विदेश मे पड़ा था, को अपना लिया।

ज्योतिषी ने माँ का चंद्रमा 'वीक' बताया। हर पूरनमासी को ब्राह्मण जिमाना बताया सो भगवान ने घर बैठे उच्च कुलीन ब्राह्मण भेज दिया था। भगवान की बड़ी कृपा! डाक्टर मुबारक को पूर्णिमा को जिमाया गया। चलते समय जब नानी ने दक्षिणा के बीस आने दिये तो पं० मुबारक ने बड़ी मासूमियत से पूछा'' का अम्मा यू०पी० म बहुत गरीबी है? हमरे गुजरात म तो पंडित क पाँच रुपैया ते कम देब असगुन माना जात है''। ब्राह्मण नाराज न हो इसलिए नानी ने तत्काल ५ रु का नोट पं मुबारक को दिया। पंडित जी ५ रु लेकर नानी के पाँव छू कर चले गए। बाद मे पता चला कि उस पैसे से उन्होंने चाचा के साथ पिक्चर देखी (सन ५८ मे २ रु मे बालकनी का टिकट मिल जाता था।)

वह बड़े ही कठिन दिन थे। माँ को खून की कमी हो गई थी। हर हफ्ते खून चढ़ता था। नानी बूढ़ी थीं। हम दोनों भाई बच्चे थे। चाचा और पिताजी खून दे चुके थे। अब दो महीने तक उनका खून नहीं लिया जा सकता था। अतिरिक्त खून की जरूरत कैसे पूरी हो ? उस समय आज की तरह वालेन्ट्री डोनर्स व एन जी ओ नहीं होते थे और न ही प्रोफेश्नल डोनर्स का ही चलन था। किसी जरूरतमन्द को पैसे देकर

ही खून मिल पाता। चाचा और पिता जी की तंख्वाह भी लंबी छुट्टी की वजह से रुकी थी। ऐसे में डॉ० मुबारक से परिचय दैवी कृपा से कम नहीं थी। मेडिकल कालेज के ब्लड बैंक से एक दो बोतल खून की व्यवस्था हो गई। परंतु बाहर से दिया खून अपने शरीर के खून की तरह प्रभावी नहीं हो सकता। ब्लड देने के दौरान कई बार माँ की तबीयत रिएक्शन की वजह से बिगड़ी। क्रिसमस की छुट्टियों की वजह से डाक्टरों और नर्सों की भी कमी हो गई थी। तब डाक्टर मुबारक ही सहाय हुए। खुद उन्होने ही माँ को आक्सीजन लगाई व इंजेक्शन देकर स्तिथि को काबू किया। खून चढ़ाते वख्त नर्स को ताकीद करते की एनीमिया के मरीज को खून बहुत धीमे चढ़ाना वरना दिल पर लोड पड़ेगा -- आदि आदि।

डॉ० मुबारक हमारे परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य बन गए थे। हम सभी को उनकी आदत सी पड़ गई थी। शायद इसलिए की उनके आने से माहौल कुछ हल्का जाता था। डाक्टर साहब की उपस्थिति से हम लोग कॉन्फिडेंट महसूस करते थे। जिस रोज वह नहीं आ पाते तो मेरा भाई जो कि मुझसे बड़ा था, डाक्टर साहब को हॉस्टल से बुलाने भेजा जाता। एक रोज मुझे उन्हे बुलाने भेजा गया। बताए हॉस्टल व कमरे में नंबर में जब मैं पहुंचा तो उस कमरे की नेम प्लेट पर बड़ा-बड़ा लिखा था -

''डाक्टर मुबारक अली फाइनल इयर एम.बी.बी.एस.''

बालबुद्धि ने तर्क किया कि एकदम अलग नाम होने से शायद गलत नाम लिख गया हो। दरवाजा खोल कर अंदर दाखिल हुआ.... डॉ० मुबारक गोल टोपी पहने नमाज पढ़ रहे थे। नमाज खत्म करके मुझसे बोला ''दुर्गा तुम चलो मेरा आज टेस्ट है मैं शाम को आऊँगा''। मैं चुपचाप लौट आया। पिताजी को डाक्टर साहब के इम्तेहान कि बात बताई। पिताजी से यह राज शेयर करने कि हिम्मत नहीं थी। बाद में चाचा से अकेले मे बताया। चाचा ने कहा" हाँ वह डाक्टर मुबारक अली ही हैं। केवल नानी को समझाने के लिए ही तुम्हारे पिता ने यह नाटक किया है। इसे ऐसे ही चलने दो किसी से कहना मत''। फिर वह दद्दा से बोले "तुम भी तो डाक्टर साहब के हॉस्टल गए थे, पर तुमने यह नोटिस क्यों नहीं किया? देखो छोटा छोटा कितना तेज है "। दद्दा बोले नोटिस तो मैंने भी किया था और समझ गया कि ऐसा क्यों किया गया। इसीलिए मैंने किसी से इसका जिक्र करना ठीक नहीं समझा। अब चाचा ने दद्दा की तारीफ करते मुझसे कहा ''देखो यह कितना समझदार है।'' मैं तो दद्दा की समझदारी का पहले से ही कायल था। शायद इसी समझदारी कि वजह से ही भगवान ने उन्हे मुझसे बड़ा बना कर भेजा था। पर दद्दा ने इतनी सेंशेशनल खबर मुझसे शेयर नही किया इसपर झुंझलाहट

अवश्य हुई।

मेरे पास करने के लिए कुछ भी नहीं था। एकोनोमी कि वजह से अखबार भी नहीं मंगाया जाता था। बहाना था कि पटना कि लोकल न्यूज में कोई इन्ट्रेस्ट नहीं आता। मैं खाली बैठ नहीं सकता था। इसलिए कभी-कभी नानी के साथ बैठ कर किचेन मे बातें करते उनके खाना बनाने मे हाथ बँटाता। कभी माँ के पास बैठ कर उनका दिल बहलाने की कोशिश करता। मेरी बातों पर जब उन्हें ज्यादा हंसी आ जाती तो हँसते-हँसते एकदम से कराह उठतीं और कहतीं ''बेटा हँसाया मत करो दर्द होने लगता है''। उस समय तो नहीं पर कुछ साल बाद कुछ समझदार होने पर रात में कभी-कभी मुझे सपना आता रहा कि माँ अस्पताल की चारपाई पर दोनों हथेलियों पर अधलेटी हैं और पीड़ा भरे स्वर कह रही हैं ''बेटा बहुत दर्द हो रहा है''। मेरी नींद खुल जाती और उसके बाद सोना मुश्किल हो जाता ।

सर्जन ने वकेशन के बाद बाद आकर आपरेशन करने को कहा था, परंतु टाइम, टाइड, और मृत्यु किसी का इंतजार नहीं करते। उन्हें जब आना होता है तब ही आते हैं। माँ के केस मे यह समय ३१ दिसम्बर १९५८ की शाम ६ बजे का मुकर्रर था। ब्लड चढ़ रहा था। शायद तेज चल गया। माँ की सांस उखड़ने लगी। मैं मौजूद था परंतु मैं ''डेथ रेटेल (Death Rattle) आसन्न मृत्यु के समय की सांस की खड़खड़ाहट जिससे डाक्टर बनने पर काफी परिचित हो गया)'' से, उस समय तक परिचित नहीं था। अतः मैं स्थिति की नज़ाकत नहीं जान सका। पर नानी की घबराई आवाज ने मुझे नरसेज रूम की ओर भागने को विवश कर दिया। नर्स आराम से आई, पर माँ की हालत देख वह भी भागी। कोरमीन व आक्सीजन लगाई। पूरी कोशिश की गई ड्यूटी डाक्टर भी आ गया....पर ''वैद्यं श्रीहरिः विष्णुः औषधम गंगोदकम (इस परिस्थिति मे वैद्य भगवान विष्णु और गंगाजल ही औषधि है अर्थात अंत समय है)''। माँ के मुंह मे गंगाजल डाला गया। उन्ही के गले का मंगलसूत्र जिसे वह हमेशा पहने रहतीं थीं, को तोड़ कर तुलसीदल के साथ स्वर्ण कण डालने की परंपरा पूरी करी गई (चिता स्थान को स्वछ करने वाले के निमित्त अंतिम दान)।

डाक्टर मुबारक उस समय कहीं बाहर थे। आने पर उन्हे बहुत अफसोस हुआ। फिर भी हम लोगों को समझाते हुए बोले ''मेरे होने से भी कुछ न होता। मैं केवल आप लोगों को संतोष ही दे सकता था''। मेरी नानी को जीवन पर्यन्त कसक रही। वह कभी-कभी रोकर कहतीं ''अगर डाक्टर मुबारक प्रसाद होते तो हमरी विद्या उस रोज तो बच ही जाती''।

मुझे और मेरे भाई को वहाँ से हटाकर मेरे फूफा जी के एक रिश्तेदार के यहाँ कर दिया गया। उस रात हमलोग वहीं रुके। सुबह पहली जनवरी थी। उस परिवार के लोग नए साल के मूड में थे। किसी छोटी बच्ची ने हम दोनों की ओर इंगित करके पूछा ''क्या इन्ही बच्चों की माँ मर गई है ?'' सबने उसे जल्दी से चुप कराया। हमें एकदम से एहसास हुआ की अब हम ''मातृ-विहीन'' हो चुके थे।

पटना में गंगा उपलब्ध थीं अतएव माँ का संस्कार वहीं कर दिया गया। हम सब लोग तो जान ही रहे थे पर नानी नहीं समझ पा रहीं थीं कि कहने के बाद भी पं० मुबारक प्रसाद ने माँ की अर्थी को कंधा क्यों नहीं दिया। शायद जीवित नानी को पंडित बन कर बहलाने में थोड़ी चुहल-विनोद के साथ ही हमारे परिवार का भला ही था, पर मृतका के साथ वह कोई छल नहीं करना चाहते थे। किसने देखा है अल्लाह जाने हिंदुओं की मान्यता कहीं सच न हो कि ''तुर्क'' के कंधा देने से ब्राह्मणी की सद्गति में बाधा आ जाये। उदारमना डाक्टर ''मुबारक अली'' को यह कतई मंजूर न था। यह डाक्टर साहब के व्यक्तित्व का स्वर्णिम पहलू था।

ऐसे ही उदारमना मुस्लिम बंधुओं के लिए ही लिखा है ''अइसे तुरकन पै कोटिन हिन्दू वारिए''

यही हमारी ''गंगा जमुना संस्कृति है''

(यह सत्यगाथा है। इसके सभी पात्र अलावा लेखक के अब जीवित नहीं हैं। डाक्टर मुबारक अली ने पढ़ाई खत्म करने के बाद बहराइच मे अपनी प्रैक्टिस शुरू की और बहुत जल्दी ही मशहूर हो गए थे। परंतु 80 के दशक के उत्तरार्ध मे ही उनका स्वर्गवास हो गया। हम लोगों के लिए तो डॉ० मुबारक सजीव फरिश्ता थे ही पर, यदि ईश्वर या खुदा है तो उसने डॉ० मुबारक को उनकी मृत्यु के बाद अवश्य ही जन्नत में भी फरिश्ता ही बनाया होगा)

18/378, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016
मो० 9415469561
e-mail: dsumeshdp@rediffmail.com

❍❍❍

अखिल भारतीय
कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा
और
कान्यकुब्ज वाणी

को
होली एवं नवसंवत्सर
की
हार्दिक शुभकामनाएँ

भावना इन्टरप्राइजेज
प्रो0 बालकृष्ण द्विवेदी
मो0 *9415365814*

''जे गुरू चरन रेनु सिर धरई''
गुरू की महिमा

❑ अलका निवेदन

जीवन के सभी क्षेत्रों मे परिश्रम का महत्व असंदिग्ध व निर्विवाद रूप से स्वीकृत है। श्रम-बीज से कुछ अंकुरित हो तथा वह विशाल वृक्ष बन कर फलदायी हो, इस विषय में विवेक पूर्ण ज्ञान के लिए 'गुरू' की बहुत आवश्यक होती है।

हमारे व्यक्तिगत जीवन में, सामाजिक जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में न चाहते हुए भी यदा-कदा अंधकार का साम्राज्य फैला हुआ सा दिखाई देता है। हर्ष व उत्साह, निराशा एवं विषाद के आगे घुटने टेकने लगते हैं, ऐसी स्थिति में अंधकार विनाश कर रचनात्मक ऊर्जा को स्थापित करते हुए 'गुरू' तत्व का प्राकट्य होता है।

स्कन्द पुराण में 'गु' का अर्थ अंधकार और 'रू' का अर्थ विनाश है। गुरू की इसी महानता के प्रभाव से वशीभूत होकर गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैंः-

''जे गुरू चरन रेनु सिर धरई। ते मनु सकल विभव बस करई।''

अर्थात् जो गुरू की चरण रज को शीश पर धारण करता है वह मनुष्य समस्त वैभव अपने वश में कर लेता है।

एक अक्षर का भी ज्ञान जिससे प्राप्त हुआ हो, जिसके एक शब्द, एक वाक्य या एक प्रसंग के द्वारा भी, हमें मार्ग दर्शन मिला उसके उपकार को जीवन भर नहीं भूलना चाहिए।

रामचरित मानस जैसे अद्भुत महाग्रान्थ मे स्थान-स्थान पर गुरू की महिमा का वर्णन तुलसीदास जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। उदाहरण के रूप में लंका कांड ही ले लें, जिसमें श्री राम-रावण में अन्तिम युद्ध चल रहा है, रावण अपनी सारी शक्तियों के बल पर विनाश पर विनाश करता जा रहा है, वो अपने दिव्य रथ पर सवार था परन्तु श्री राम बिना रथ, अस्त्र-शस्त्र व कवच के युद्ध कर रहे थे, ऐसा देखकर विभिषण ने श्री राम के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रकट की-

''रावनु रथी बिरथ रघुबीरा, देखि विभीषण भयऊ अधीरा।
अधिक प्रीति मन भी संदेहा, बन्दि चरन कह सहित सनेहा।।''

(अर्थात् रावण को रथ पर और श्री राम को बिना रथ के देखकर विभीषण अधीर हो गए तथा प्रेम अधिक होने पर उनके मन को सन्देह हुआ कि श्री राम बिना रथ व आयुध के रावण पर विजय कैसे प्राप्त करेंगे।)

''नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना, केहि विधि जितब वीर बलवाना।
सुनहु सखा कह कृपानिधाना, तोहि जय होहि सो स्यंदन आना।।''

(अर्थात् हे प्रभु! न आपके पास रथ है, न तन की रक्षा करने वाला कवच और न

पैरों में जूते, तो उस दुष्ट बलवान रावण को कैसे जीतेंगे। तब श्री राम ने कहा कि हे मित्र! सुनों, मेरा विजय-रथ तो दूसरा ही है, जो अनोखा है और जिससे मेरी विजय निश्चित है।)

''सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका
बल विवेक दम परहित घोरे, छमा कृपा समता रजुजोरे।।''

(यानि मेरे रथ में शौर्य और धैर्य पहिये है, सत्य और सदाचार उसकी मजबूत ध्वजा और पताका है। बल, विवेक, दम व परोपकार ये चार रथ के घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जुते हुए हैं)

''ईस भजन सारथी सुजाना, विरति चर्म सन्तोष कृपाना।''

(ईश्वर का भजन ही रथ का सयाना सारथी है, वैराग्य ढाल और सन्तोष तलवार है)

''दान परस बुद्धि सक्ति प्रचण्उा, बरू विज्ञान कठिन को दण्डा।
अमल अचल मन त्रोन समाना, सम जम नियम सील मुख नाना।।''

(मेरे पास दान रूपी फरसा है, मेरी बुद्धि मेरी प्रचण्ड शक्ति है, मेरे गुरू जनों से प्रदान किया हुआ ज्ञान-विज्ञान रूपी मेरे धनुष हैं, निर्मल, अचल और स्थिर मन तरकश के समान हैं। अहिंसा और मेरे तमाम नियम/मेरे ढेरों बाणों के समान हैं।)

''कवच अभद्रेय विप्र गुरू पूजा, एहि सम विजय उपाय न दूजा।''

(उस अंहकारी, महापापी, दुष्ट राक्षस रावण तथा उसकी तमाम आसुरी शक्तियों से मेरे तन और मन की रक्षा करने के लिए मेरे पास मेरे 'गुरू' का आर्शीवाद है जो एक मजबूत कवच की तरह मेरे प्राणों की रक्षा करेगा; और मेरी विजय निश्चित ही होगी।)

ऐसा धर्मयुक्त रथ और गुरू के आशीष से ओत-प्रोत कवच अहंकारी को जीतने के लिए सक्षम है। भवगान श्री राम ने गुरू की महिमा को हृदय से माना उसे ही अपनी विजय का आधार बनाते हुए विभीषण की समस्त शंकाओं को दूर करते हुए कहा कि 'हे मित्र! जिनके पास अपने गुरूजनों को आशीर्वाद सदैव रहता है, वही क्षृढ़ है', वीर, सक्षम है तथा वही व्यक्ति मृत्यु रूपी कठिन शत्रु पर भी आसानी से विजय प्राप्त का सकता है, तो यह रावण क्या है। माता-पिता हमें जन्म देते हैं हमें उनका जीवन पर्यन्त आभारी रहना चाहिए पर केवल मिट्टी से कोई स्वरूप तब तक नहीं बनता जब तक उसे कोई कुम्हार न मिले। हमारे जीवन को सही दिशा, आकार, सदाचार और पूर्ण ज्ञान केवल गुरू द्वारा ही प्राप्त होता है, उनका आभार हम जन्म-जन्मान्तर तक नहीं भुला सकते, हम उनके जीवन पर्यन्त ऋणी हैं।

❍❍❍

कोख में कत्ल न करो बेटियों को.......

❑ मुकेशानन्द (कवि)
C.B.C.I.D.

कोख मे कत्ल न करो बेटियों को, ये कोख का कर्ज चुकायेगी।
बेटे होंगे जब नाकारा, बेटियाँ बेटे का फर्ज निभायेगी।।
बेटियाँ हमारे हिन्दुस्तान की आन-मान-शान बन जायेंगी।
ये कल्पना चावला बनकर, चाँद पर तिरंगा फहरायेंगी।।
कोख में कत्ल न करो बेटियों को......

जब जन्म लेंगी बेटी घर में जगमग-जगमग दिवाली हो जायेगी।
चले बेटी आंगना में, मारे किलकारी फुलवारी सी खिल जायेगी।।
कसम खाकर मैं कहता हूँ, आने दो बेटियों को दुनिया में।
वार करे जो तुम पर यमराज, बनके सावित्री ये तुम्हें बचायेगी।।
कोख में कत्ल न करो बेटियों को.........

जब तुम हो जाओगे बेसहारा, बेटी सहारा बन जायेगी।
निकलेगा तेरा जनाजा, बेटी आंसू की धारा बन जायेगी।।
मेरी गुज़ारिश है मत रोको बेटी को, आगे कदम बढ़ाने से।
पी०टी० ऊषा उड़नपरी बनके, ये गगन में तिरंगा लहरायेगंगी।।
कोख में कत्ल न करो बेटियों को.......

पढ़ लिखकर बेटियाँ घर की रोशनी बन जायेंगी।
आयेंगे जब गर्दिश के दिन, ये खुशियाँ वापस ले आयेंगी।।
दुनिया वालों डंके की चोट पर, मैं कलमतोड़ लिखता हूँ।
पड़े जब राष्ट्र संकट बनके झांसी की रानी, ये तलवार चलायेंगी।।
कोख में कत्ल न करो बेटियों को...........

बेटी बहिन नहीं होगी तो, माँ की आवाज कहाँ से आयेगी।
जन्मेगी बेटी घर में तो, हर रिश्तों की आवाज़ सुनायेगी।।
कहे मुकेशानन्द दुनियाँ वालों मत मारो दहेज के कारण बेटी को।
ये भारत की शान लता सुरैया महादेवी मल्लेश्वरी बन जायेंगी।।
कोख में कत्ल न करो बेटियों को.............

हे०क्वा० : लखनऊ
मो०: 9453817477

❍❍❍

नर्सरी से इण्टर तक पंजीकरण/प्रवेश सभी कक्षाओं हेतु प्रारम्भ

सा विद्या या विमुक्तये

माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त

गौरव शाली तीस वर्ष

दयानन्द इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

विद्यालय वैशिष्ठ्य

- नर्सरी से इण्टरमीडिएट तक मानविकी, वैज्ञानिक, वाणिज्य वर्गों में सह-शिक्षण की उत्तम व्यवस्था
- शत प्रतिशत परीक्षा-फल, अनुशासन एवं भारतीय संस्कारों का अभिनव केन्द्र।
- ज्ञानार्जन हेतु समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था।
- गृह विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर की सुसज्जित व स्तरीय प्रयोगशालाएँ।
- खेल-कूद, रेडक्रास, स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की पूरी व्यवस्था।
- नैतिक मूल्यों के संवर्धन की पूर्ण व्यवस्था के साथ Spoken English के अभ्यास की पूर्ण व्यवस्था।
- स्वास्थ्य, आवागमन/यातायात की समुचित व्यवस्था।
- योग्य, अनुभवी, कर्मठ शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा ही सभी कार्य सम्पन्न किये जाते है।

रामउजागिर शुक्ल
प्राधानाचार्य

अन्य संस्थाएँ

१. श्रीमती उमा शुक्ला कन्या विद्यालय, जियामऊ लखनऊ
२. जगपती शीतला प्रसाद ट्रेनिग कालेज, (बी.टी.सी.) सुल्तानपुर।
३. रामखेलावन मेमोरियल, डिग्री कालेज, सुल्तानपुर।
४. रामखेलावन मेमोरियल पब्लिक स्कूल, सुल्तानपुर।

सुभाष श्रीवास्तव
अध्यक्ष

प्रवेश फार्म उपलब्ध यथा शीघ्र सम्पर्क करें

संतुलन ही स्वास्थ्य है

❑ आचार्य बलवंत

संतुलित जीवन में सौम्यता, सद्भावना, सदाचार एवं सद्वृत्ति जैसे सद्गुणों का प्रादुर्भाव होता है। वहीं असंतुलन की स्थिति में दुर्भावना, दुराचार एवं दुष्प्रवृत्ति जैसे दुर्गुण जन्म लेते हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है किन्तु संतुलित एवं सातत्यपूर्ण परिवर्तन ही शुभ एवं कल्याणकारी होते हैं। असंतुलित एवं सातत्यविहीन परिवर्तन अशुभ, अमांगलिक एवं विध्वन्सकारी होते हैं। कलियों का खिलना, पक्षियों का कलरव करना, शिशुओं का किलकना (किलकारी मारना) नदियों का अपने प्रवाह में निमग्न होना, आराधक की अपने आराध्य के प्रति चातक भाव से एकनिष्ठता एवं साधक द्वारा आत्मलीन होना, सबके-सब संतुलन के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

संतुलन की क्रिया शैशवावस्था से शुरू होती है। शैशवावस्था में शिशु जितना सचेष्ट होता है, बाल्यावस्था, किशोरावस्था या प्रौढ़ावस्था में उतना नहीं रह पाता। घुटनों के बल चलने वाला शिशु जब खड़ा होने की चेष्टा करता है तो उसकी भाव-भंगिमा देखते बनती है। शरीर और मन का सातत्यपूर्ण समन्वय इस अवस्था के उपरान्त फिर कहाँ देखने को मिले। घुटनों के बल चलनेवाला शिशु उठ खड़े होने की चेष्टा में समग्रतापूर्वक अपने मन को संयोजित कर देता है, किन्तु बाल्यावस्था की दहलीज पर पाँव रखते ही उसकी एकनिष्ठता क्षीण होने लगती है। क्रमशः वह सांसारिक लोभ लिप्सा से घिरने लगता है। अन्ततः उम्र के चौथे या पांचवें पड़ाव पर आते-आते उसे यह स्मृति नहीं रह पाती कि उसने शैशवावस्था में स्वयं को उठाने में किस समग्रता का निवेश (इन्वेस्टमेन्ट) किया था। उस समग्रता की ओर आँखें उठाकर नहीं देखता जो उसके सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार की जननी है, उत्प्रेरिका है। उसका सारा जीवन अनायास सा प्रतीत होने लगता है। चलना-फिरना, बोलना-बैठना सब कुछ आदत की आवृत्ति जैसा लगने लगता है।

मैं उपरोक्त कथन के आलोक में शैशव संरक्षण पर सवाल नहीं उठा रहा हूँ। इसलिए कि यह बीमारी आज की नहीं, पीढ़ियों पुरानी लगती है। कोई भी माँ बाप अपनी संतान को वही देता है, जो उसके पास है। हस्तांतरण का यही सिलसिला किसी क्रांतिकारी परिवर्तन के होने तक पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है।

क्या कारण है कि वह जो कभी अत्यन्त प्रफुल्लित एवं हर्षातिरेक से भरा था, आज वयस्क के रूप में द्वन्द एवं दुविधा के बीच थक हारकर अकर्मण्य सा हाथ पर हाथ धरे बैठा है? 'सफलता एवं आनन्दोल्लास का सूत्र कब और कहाँ खो गया' की स्मृति होती तो शायद खोजने का प्रयत्न भी करता। प्रौढ़ावस्था, जिसे परिपक्वता की

अवधि के रूप में जाना जाता है, व्यक्ति उस अवस्था के पूर्व ही उद्विग्नता, कुंठा एवं निराशा का शिकार हो चुका होता है। आधुनिकता की अंधी दौड़ का यह भयावह सच हम सबके सामने प्रश्नचिन्ह के रूप में खड़ा है। आज हम बच्चों को खिलौने देकर शीघ्रातिशीघ्र खड़ा करने की कोशिश में लगे हुए हैं ताकि अंधी एवं निरुद्देश्य प्रतियोगिता में वे शामिल (सम्मिलित) हो सकें।

समय की माँग है कि शैशवावस्था में उन्हें खड़े होने के लिए खिलौने न देकर बार-बार उठने-गिरने दें ताकि वे अपने पैरों पर खड़ा होने की हिम्मत जुटा सकें। आपा-धापी के व्यवस्ततापूर्ण वातावरण में माँ-बाप अपने बच्चों को येन केन प्रकारेण उनके पैरों पर खड़ा करने की भूखी-प्यासी आतुरता लिए कमर कसे खड़े हैं, भले ही उनकी संतान जीवन के दो-चार कदम चलने से पहले ही लुढ़क जाये या चारों खाने चित्त हो जाये।

संपर्कः विभागाध्यक्ष हिंदी कमला कॉलेज
ऑफ मैनेजमेंट एण्ड स्टडीज
450, ओ.टी.सी. रोड, कॉटनपेट, बेंगलूर-560053
मो. 91-9844558064
E-mail: balwant.acharya@gmail.com

❍❍❍

बनी रहे

करिये न ऐसे बर्ताव और काम आप। जिससे सदैव अपनों में ठनी रहे।।
त्यागिये कुटिलता और मन में रहे मगन। बोले जो वाणी माधुर्य से सनी रहे।।
आचरण ऐसा शालीनता से ओत-प्रोत।। बसुधैव कुटुम्बता विचार में घनी रहे।।
उठते बैठते रहें तत्पर पर सेवा में। सदाचरण ऐसी बात अपनी बनी रहे।।
जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें दृढ़ता से। रस्ता चाहे जितनी ही कंटक सनी रहे।।
कठिन परिश्रम और दूर दृष्टि पूर्ण हो। आंधी के सम्मुख भी छाती तनी रहे।।
पूरित प्राण-पण से सफलता को प्राप्त करें। क्षीण हो कृतघ्नता कृतज्ञता धनी रहे।।
होंगे प्रसन्न अपने जीवन में आप तभी। विरोधियों में भी बात अपनी बनी रहे।

सत्यवान अवस्थी,
एडवोकेट

एक संस्मरण

❑ डॉ० आर.के. मिश्र,
अस्थि-रोग विशेषज्ञ

देवी के ५१ के शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ विंध्याचल मिर्जापुर में है। यह नैसर्गिक रूप से अत्यन्त सुन्दर एवं दर्शनीय है। यहाँ के पठार और छोटी-छोटी पहाड़ियाँ अत्यन्त रमणीक एवं मनोहारी हैं। मिर्जापुर का दक्षिणाँचल जो अब अलग जिला बन गया है। प्राकृतिक रूप से (सोनभद्र) बहुत ही सुन्दर है।

माँ विन्ध्यवासिनी के दर्शनों की बहुत से लोगों की इच्छा रहती है। मुझे भी मिर्जापुर जाने का जैसे ही अवसर मिला मैं एक सप्ताह का अवकाश लेकर तुरन्त चल पड़ा। माँ विन्ध्यवासिनी के दर्शन तथा चुनार एवं विजयगढ़ के किले भी देखे। चुनार का किला गंगा जी के किनारे स्थित है। यहाँ पर गंगा जी दक्षिणवर्ती हो जाती हैं। यह किला राजा भर्तृहरि से लेकर शेरशाह सूरी और अकबर तक का साक्षी रहा है। अब यह पुलिस का भर्ती प्रशिक्षण केन्द्र है। विजयगढ़ का किला अत्यन्त ऊंचाई पर है और इसके अन्दर चन्द्रकाँता सन्तति उपन्यास में वर्णित तालाब अभी भी है। अब यहाँ पर नक्सलियों का आवागमन अधिक रहता है।

यहाँ के भ्रमण के बाद मैं तत्कालीन पुलिस अधीक्षक के निवास पर जब पहुँचा तो मेरा परिचय एक योगी श्री राजबली मिश्र से कराया गया। वह अत्यंत साधारण से लग रहे थे पर उन पर एक दिव्यता भी झलक रही थी। योगी जी पुलिस लाइन में जवानों एवं रिक्रूटों को योगाभ्यास कराते थे।

उनके बारे में मुझे बताया गया कि योगी जी अपनी श्वास और धड़कन काफी देर तक रोक सकते हैं। मुझसे परीक्षण करने को भी कहा गया। मैं भी कौतूहलवश तैयार तो गया पर मन में कुछ-कुछ डर सा लग रहा था। योगी जी आराम से पद्मासन लगा कर बैठे और अपनी श्वास तथा धड़कन रोक दी। पहले तो मैने नाड़ी परीक्षण किया, नाड़ी नहीं मिली तब आला लगाकर हृदय का परीक्षण किया। दिल की धड़कन भी नहीं थी। मैं काफी घबड़ा गया और योगी जी से चेतनावस्था में आने को कहा। योगी जी चेतनावस्था में आने को कहा। योगी जी चेतनावस्था में आकर शांत होकर लेट गए। बताने लगे। बहुत से योगी अपनी योग शक्ति से अपने ऊपर से भारी वाहन निकलवा देते हैं तथा भारी से भारी वाहन को वह रोक सकते हैं।

इसी क्रम में उन्होंने अपनी एक घटना बतायी जब उन्होंने एडमंड हिलेरी की दो जेट बोट्स एकसाथ बनारस में गंगा के तट पर रोकी थी।

एडमंड हिलेरी अपने सहयोगियों के साथ 'सागर से आकाश तक' के अभियान पर भारत आए थे। वह राजकीय अतिथि थे। उनका हर जगह राजकीय स्वागत किया गया था। उसी क्रम में जब वह बनारस पहुंचे वहाँ पर भी उनका स्वागत पुलिस महानिरीक्षक एवं मण्डला ने किया।

एडमंड हिलेरी ने उन लोगों से भारत के योगियों, श्रृषियों, मुनियों की भी चर्चा

की और ऐसे किसी व्यक्ति से मिलने की इच्छा जाहिर की। पुलिस वालों ने श्री राजबली मिश्र को उनसे मिलवाया और श्री मिश्र ने गंगा के तट पर उनकी जेट बोट्स को अपनी कमर में रस्सी से बाँधा और स्टार्ट करने को कहा। वह जेट बोट्स स्टार्ट तो हो गई लेकिन आगे नहीं बढ़ पायी। एडमंड हिलेरी और उनके सहयोगी योगी श्री राज बली मिश्र के आगे नतमस्तक हो गए क्योंकि उन्हें अपनी जेट बोट्स पर विश्वास था कि बहुत शक्ति शाली है।

जब हिलेरी महोदय नतमस्तक हुए तो अधिकारियों ने श्री मिश्र जी से अनुरोध किया कि महाराज इन्हें आशीर्वाद दीजिए कि उनका अभियान सफल हो। श्री मिश्र का उत्तर था कि माँ के पुत्र अनेक होते हैं। सभी का स्थान वक्षस्थल तक है। यदि कोई मस्तक पर चढ़ने का प्रयास करेगा तो अन्य उसे नीचे उतार देंगें।

(इस घटना के प्रमाण स्वरूप उन्होंने (श्री मिश्र जी) एक एल्बम दिखाया जिसमें सारे चित्र मौजूद थे और बाद के हिलेरी के कुछ पत्र भी दिखलाए)

सुनने में आता है कि एडमंड हिलेरी और उनके सहयोगी गंगा जी में जेट बोट्स से गंगा जी के लिए प्रस्थान तो किए परन्तु उनकी जेट बोट्स ऋषिकेश से आगे नहीं बढ़ पायी। ऋषिकेश से सड़क मार्ग से बद्रीनाथ तक गए और वहाँ पर कुबेर पर्वत पर चढ़ने के दौरान वह बेहोश हो गए और उनके दल को हेलीकाप्टर के द्वारा वापस लाया गया और वह बिना अभियान पूरा किए अपने देश को लौट गए।

इधर श्री मिश्र जी की ख्याति बढ़ गई थी। इस घटना से पहले उन्हें शायद ही कोई जानता हो। कुछ वर्षों के उपरान्त इन्दिरा जी विंध्याचल आयीं। उस समय श्री मिश्र जी से अनुरोध किया गया कि वह इन्दिरा जी की पूजा सम्पन्न करवा दें। परन्तु श्री मिश्र जी ने विनम्रतापूर्वक वह अनुरोध अस्वीकार कर दिया और कहा कि वह केवल योगी हैं। पूजा कराने वाले पुरोहित या पण्डे नहीं। आज के युग में प्रधानमन्त्री की निकटता को कौन नहीं चाहेगा।

ऐसे थे श्री राज बली मिश्र जिनसे मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

धन्य है हमारी धरती, हमारी भारत माता जहाँ ऐसे योगी, तपस्वी भरे पड़े हैं परन्तु वह अकारण सामने नहीं आते। ऐसे में मुझे एक साधु की बात याद आती है जो उन्होंने कामदगिरि (भगवान कामता नाथ मन्दिर में) के बारे में कही थी कि यह पर्वत असंख्य मणियों, हीरों, जवाहरातों से भरा पड़ा हैं, पर यह सामान्य जन को पत्थर नज़र आते हैं, केवल तपस्वियों और योगियों को यह माणिक दिखते तो हैं लेकिन उनके लिए यह पत्थर ही हैं।

धन्य है भारत भूमि

जय हिन्द !

उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय कान्यकुब्ज
प्रतिनिधि सभा

❍❍❍

मन की बात

❑ तिलक शुक्ल, रायबरेली

वह उम्र के उस पड़ाव पर था जिस पर हर चीज झूम के आती है। नींद आती है तो इतनी कि कभी-कभी पूरी बाल्टी पानी डालने पर ही खुलती। जिसमें धीरे से चला ही नहीं जाता। इसलिए वह हमेशा दौड़ कर ही चलता था। उसकी चाल के झोंके से एक दो चीजों का गिरना तय था। बुजुर्ग उसे हालाडोला (भूकंप) पुकारने लगे थे। यदि कभी चारा काटने की मशीन पे लग जाता तो दो मजदूरों के बराबर वह अकेला चारा काट डालता। कभी खाने पर आता तो दो चार आदमियों की खुराक कम पड़ जाती। माँ कहती ''अब बस कर नहीं नजर लग जाएगी।'' कभी दुलार में माँ के पास सट कर बैठता तो माँ उसका हाथ थाम कर कहती ''बबुआ तोहार हाथ इत्ता गरम काहे है।'' बेटा कहता यह मेरे खून की गर्मी है। बड़े होने के बाद लोग भूल जाते हैं कि कभी उन पर भी जवानी चढ़ी थी।

उसके तन में अजब सी अकड़न, बेचैनी और कसमसाहट थी। इस बेचैनी के चलते उसे बछड़ों को सिर से पकड़ कर धकेलने में मजा आता था। वह बछड़े जिनके अभी-अभी सींग निकलने शुरू हुए थे, उनको भी इस जोर आजमाइश में आनंद आता था। एक रोज वह पछाहीं गाय जिसकी देहयष्टि कुछ सांड जैसी थी के बछड़े से भिड़ गया। बछड़े की भी चढ़ती जवानी थी, वह अन्य देसी बछड़ों से ज़्यादा ताकतवर निकला। वह पट्ठा हमारे नायक को धकेल कर दीवार तक ले गया और रगेदने लगा। लोगों ने देख लिया तो नायक बच गया। बछड़े ने उसे यौवन की पहली सीख दी.... भिड़ने के पहले प्रतिद्वंदी को तोल लेना चाहिए।

हमारा यह किशोर नायक ऐसे सुदूर ग्रामीण इलाके का निवासी था जहाँ अभी तक दूरदर्शन नहीं पहुंचा था। वहाँ मोदी जी कि 'मन कि बात' स्थानीय पंचायत घर, स्कूल, या चौपाल में सुना जाता है। सभी लोग प्रधानमंत्री की मन की बात सुनते। कुछ सहमत होते कुछ असहमत। जरूरी नहीं कि स्वाती की हर बूंद सीपी में गिर कर मोती ही बने। विषधर के मुंह में तो वह बूंद गरल ही बनेगी। कुछ ऐसे भी हैं जो न तो सीपी होते हैं न ही भुजंग। हमारा नायक भी मोदी जी की मन की बात सुनता। उसके मन में भी बहुत सी बातें थीं, जिन्हें वह किसी को बताना चाहता था। वह बातें उसके दिल में तब और उफान मारतीं जब वह अकेला होता। उसको अपने चारों ओर नर ही नर दिखाई देते थे जिनसे मन की बात शेयर करने में उसकी तनिक भी रुचि नहीं थी।

मन की बातों का उफान पूनम के ज्वार की तरह उसके दिल और दिमाग को तहस-नहस करे इसके पहले ही ईश्वर की कृपा से उसे मन का मीत दिख गया। पड़ोस की एक कन्या जो उससे एक आध साल छोटी या बड़ी होगी (लड़कियों की उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल है)। छोटी.... या बड़ी....? के चक्कर में न पड़ कर उसने समवयस्क मान कर समझौता कर लिया। हमारे नायक की निगाहों मे चढ़ी यह मुहल्ले की एकमात्र कन्या की एक आँख में टेंटर था और बारहोंमासी नजले की वजह से बिचारी की हमेशा थोड़ी-थोड़ी नाक बहती रहती थी, जिसे वह बार-बार सुड़क कर

कंट्रोल में रखती। आप ऐसी लड़की को सुंदर न माने तो यह आपकी ''नजरों का कुसूर''। नायक को तो वह हर हाल में 'कामिनी' ही लगती थी। नायक ने अपनी मन की बात के लिए इसी सुंदरी का संधान किया। उसका सदैव यही प्रयत्न में रहता कि मन की बात की गोष्ठी में वह 'कामिनी' के पास ही बैठे। हालांकि की उसकी लगातार नाक सुड़कने की ध्वनि से मोदी जी की बात सुनने में व्यवधान पड़ता था, किन्तु आजकल तो उसके हृदय में अपने मन की बात ही डेरा डाले थी। लगता था की वह बड़ी तन्मयता से प्रधानमंत्री का भाषण सुन रहा है, जबकि वास्तविकता में उसका ध्यान नाक की सुड़सुड़ पर केन्द्रित होता, और कनखियों से कन्या दर्शन चालू रहता।

'अल निनों' की मारी सावन की दोपहर को सुहानी पुरवइया की जगह गरम हवा और चटक धूप का कहर था। सारा मोहल्ला भाँय-भाँय कर रहा था। सभी लोग गर्मी से बचने के लिए घरों में दुबके थे। ऐसी एक दोपहर को व्यथित मन से वह घर से बाहर निकला। उसने आँखों के ऊपर हांथ की छाया करके देखा कि कोई मानवाकृति भरी दोपहर में घर वापस आ रही थी। आकृति के पास आते ही उसकी बांछे खिल गईं, वह सुड़-सुड़ सुंदरी थी। हाथ में लोटा देख कर उसे इतनी गर्मी में कन्या के 'वन गमन' आशय समझ में आ गया। उसने मन ही मन सरकार को धन्यवाद दिया कि मोदी की बातों में आकर अभी हर घर में 'स्वच्छालय' का निर्माण नहीं कराया। वरना ऐसा स्वर्णिम एकान्त अवसर उसे कैसे मिलता!

उस गर्म दोपहर की बेला में मात्र गलियों के कुछ कुत्ते किसी मदमाती सुरभि का पीछा करते हाँफते घूम रहे थे। कामिनी सामने के घने पीपल की छाँह में कुछ सुस्ताने को रुकी कि, वह भी लपक कर उसके पास पहुँच गया। कामिनी उसके एकाएक प्रकट होने से चौंक कर संभली ही थी कि नायक ने उसके बाएँ हाथ को 'अवायड' करते हुए दाहिना हाथ अपने हाथ में लेकर इतने दिनों से उफनती मन की बात उगल दी। नायक को लगा कि वह लड़की अब उसे अपनी टेंटर वाली आँख से देखने लगी। उसकी सुड़-सुड़ एकदम बंद हो गई....नतीजा ऊपर के होठ पर आने लगा। नायक की आशा के विपरीत उसका चेहरा अजब ढंग से टेढ़ा हुआ और वह जोरों से चीखती हुई लोटा वहीं फेक कर घर भाग गई।

यह सब स्लोमोशन में होने के बजाय इतनी द्रुति-गति में घटित हुआ कि हमारा अनुभवहीन नायक हतप्रभ हो गया....और....और फिर थोड़ी देर में 'हँगामा हो गया'। पिता और ताऊ डांट कम रहे थे, मार ज़्यादा रहे थे। यह भी सत्य कि हर लात और घूंसा पड़ने पर उसके मुंह से 'हुंह' की आवाज तो आती पर, उस समय नायक की मनोदशा कुछ ऐसी थी कि उसे पिटने का दर्द महसूस नहीं हो रहा था। लात-घूंसे के बाद जब पिता ने छड़ी उठाई। आठ दस प्रहारों के बाद ताऊ ने रोका ''अरे, अब क्या लड़के को मार ही डालोगे?'' तब कहीं हमारा नायक बचा। माँ उसे घसीट कर अंदर ले जाने लगी तो ताऊ ने आश्चर्य से कहा ''ताज्जुब है। इतना पिटने के बाद भी यह रोया नहीं, बल्कि इसकी देह तो और फूल गई''

ताऊ क्या जाने कि इस उम्र में 'मर्द को दर्द नहीं होता'

इस दर्द भरी अनुभूति के बाद कुछ दिन चित्त शांत रहने के बाद फिर से उसके

अन्दर मन की बात घुमड़ने लगी। नतीजा.... एक दिन उसकी नींद ब्रह्म-मुहूर्त में ही खुल गई। सब सो रहे थे। वह धीरे से मुख्यद्वार खोलकर बाहर आ गया। पूरब की ओर के ढाल पर जहां निरंतर मूत्र विसर्जन से गीली सूखी वैतरणी बन चुकी थी. उसने जलत्याग किया। पास में बंधे गाय-भैंस जग कर पागुर कर रहे थे। मानव विसर्जन और पशु विसर्जन की मिली जुली गंध सुबह की मलय वायु में घुल रही थी। मक्खियाँ जो गोबर और मानवबर में कोई भेद नहीं करती, का आगमन इस वेला तक नहीं हुआ था। सो नायक उघरे बदन कुएं की जगत पर अनमने भाव से बैठा था। होनी देखिये, अपनी टेंटर सुंदरी की आँख भी उसी समय खुली, वह भी ताजी हवा खाने बाहर निकली। उसकी निगाह नायक के खुले धड़ पर पड़ती है। पीठ पर छड़ी के लाल नीले निशान पर दृष्टि पड़ते ही उसका कोमल हृदय द्रवित हो उठा। वह पिछले कई दिनों से अपने किये पर पछता रही थी। पछताना भी चाहिये। उसकी जैसी सुंदरी के लिये भगवान ने एक कद्रदान भेजा, उसने ही मौका गवां दिया। वह यंत्रचालित सी नायक के पास पहुंची। उसने बड़ी नरमी से पीठ के निशान को छुआ। उसके कोमल स्पर्श से एक तरफ नायक के पूरे शरीर में बिजली सी दौड़ गई, वहीं पूरे सहन में भूचाल आ गया।

हुआ यह कि सूड़-सुड़ सुंदरी के साथ ही नायक की ताई भी बाहर निकली। उन्होंने देखा कि नायक तो निर्लिप्त भाव से बैठा है, और वह लड़की उसके शरीर को सहला रही है। ताई बाज की तेजाई से आईं और चीखते हुए लड़की का हाथ पकड़ कर घसीटते हुए उसके घर उलाहना लेकर पहुँच गईं। एक बार फिर हँगामा हुआ। अबकी बार हँगामा कन्या के घर पर था। पिट कन्या रही थी, चोट नायक को लग रही थी।

नायक के परिवार ने एक मत से तय किया कि फूस को आग से अलग कर दिया जाए। नायक को भाई के पास शहर पढ़ने भेज दिया जाय। पर...केवल एक ही परेशानी थी अपना नायक उस डिवीजन में हाईस्कूल पास हुआ था जिसे पहले 'गांधी डिवीजन' और आजकल एसी I विद II टियर कहा जाता है। फिर भी भाई इन्कमटैक्स में बाबू था, सो नायक को शहर में अच्छे कालेज में दाखिला मिल गया।

कालेज की ड्रेस बन गई। मुसीबत केवल जूता पहनने पर आई। स्वतन्त्रता के आदी पैर जूते की बंदिश के विरुद्ध विद्रोह कर उठे। धीरे-धीरे जब पैर आदी हो गए तो अच्छी 'साइत' विचार कर वह कालेज ड्रेस में सजा वह कालेज पहुंचा। लगता था किसी कलारासी अरबी घोड़े की जीन किसी टट्टू पर कस दी गई। गेट पर पुराने गीतों के शौकीन चौकीदार के मोबाइल पर गाना बज रहा था "साला मैं तो साहब बन गया।"

क्लास में प्रवेश करते ही सब बच्चे स्वतः हंसने लगे। टीचर के जोर से घूरने पर बच्चे चुप हुए। टीचर ने पूछा ''क्या नाम है। अभिभावक क्या करते हैं?''

नायक प्रसन्न हो गया इस का उत्तर उसे रटा कर कर भेजा गया थाः ''सर, मेरा नाम ...... पुत्र ..... यहाँ अपने भाई के साथ रहता हूँ।" वाक्य पूरा कर उसने राहत की सांस ली। उसे मालूम ही नहीं था कि शिक्षिका को मैडम कह कर संबोधित करते हैं. सर नहीं।

उसकी वेषभूषा देख कर शिक्षिका ने अगला प्रश्न किया ''तुम्हारे भाई क्या करते हैं?''

''इन्कमटैक्स में बाबू हैं।''

इन्कमटैक्स शब्द का जैसा प्रभाव होना चाहिए, वैसा ही हुआ।

टीचर का स्वर मुलायम हो गया। उसको सबसे आगे की दरवाजे के पास वाली सीट मिल गई। टीचर व उसके पति मशहूर कोचिंग चलाते थे, जिसे इन्कमटैक्स का नोटिस मिल चुका था।

कहावत है 'जाकी जैसी भावना, वाहि वही मिलि जाय'। टीचर को इन्कमटैक्स में पकड़ और ग्रामीण नायक को विपरीत परिस्थितियों में एक सहारा मिल चुका था। विज्ञान में इसी को सिम्बायसिस या सहअस्तित्व कहते हैं।

गाँव से आया नायक शहर की प्रत्येक नई चीज को परख रहा था। इन सब बातों से थोड़ा बहुत अभ्यस्त होने पर उसकी ड्रेस उसकी काया के अनुरूप लगने लगी थी। उसने अपने आस पास के वातावरण पर ध्यान देना प्रारम्भ किया। निष्कर्ष....शहरी कन्याएँ ग्रामीण बालाओं से अधिक आकर्षक होती हैं।

एक दिन कक्षा में अंग्रेजी की क्लास चल रही थी। परकटी टीचर सिर हिला-हिला कर पढ़ा रही थी। नायक का ध्यान विषय पर न होकर टीचर की देहयष्टि पर था। उसने मन ही मन अपने से काफी बड़ी टीचर की तुलना गाँव की टेंटर सुंदरी से करी तो, उसको अपने ऊपर हंसी आ गई। हंसी हल्की सी आवाज के साथ चेहरे पर भी आ गई। टीचर ने ताड़ लिया कि नायक भटक रहा है। इस टीचर को इन्कमटैक्स विभाग से कोई नोटिस नहीं मिला था। सो नायक को सारे पीरियड खड़े रहना पड़ा.....उसने दूसरी सीख ग्रहण की सुंदर टीचर को निहारते समय कभी कभी श्यामपट 'ब्लैकबोर्ड' पर भी निगाह डाल लेनी चाहिये।

गेम्स का पीरियड, कन्याएँ फील्ड में गेंद खेल रहीं थीं। लड़के अपनी जिम्मेदारी पूरी मुस्तैदी से निबाह रहे थे। वे पूरे मनोयोग से लड़कियों पर ध्यान रख रहे थे। मजाल है कि कोई ऐक्शन जिसमे जरा सा भी अंगप्रदर्शन हो, उनकी आँखों से चूक जाय। हर लड़का ऐसे क्षण को कैद करने में लगा था। जिस प्रकार फिल्मों के कुछ चुने हुए दृश्यों के स्टिल फोटोग्राफ बना कर पोस्टर पर चस्पा कर दिये जाते है, वैसा ही प्रयास करने में सभी व्यस्त थे। हमारा नायक भी इसी व्यापार में व्यस्त था। लो, अचानक एक बाला द्वारा फेंकी गेंद फील्ड के एक पेड़ पर अटक गई। खेल रुक गया। बालकों को भी रुकावट के लिए खेद था। कन्याएँ दुखी हो गईं। सभी लड़के निष्क्रिय बने रहे। केवल हमारा नायक 'परित्राणाय' के परोपकारी भाव से, चपला को चकित करने वाली गति से पेड़ पर चढ़, कर पक्षिराज को लजाने वाली स्पीड से गेंद उतार कर कन्यायों के सामने खड़ा हो गया। कन्याएँ उस धन्यवाद दे रहीं थीं। उसका यह कृत्य लड़कों को ऐसा लग रहा था जैसे नायक कालियदह से गेंद ले आया हो। क्लास का एक दादा जिसका भाव मोदी राज के प्याज के भांति ऊंचा और तासीर सहपाठियों की आँख में आँसू लाने वाली थी। वह भी इस घटना को घटित होते देख रहा था। दादा के मुंह से दिलजली आवाज में निकला ''साला गोपियों के बीच बांसुरी बजा रहा है।'' चमचों ने जान लिया की अब नायक पिटने वाला है। कहानी में खलनायक का प्रवेश हो

चुका था।

अगले दिन खलनायक ने फील्ड में अंजान बनते हुए एक लड़की को धक्का दे दिया। लड़की की किताबें बिखर गईं। पीछे से आता हुआ नायक किताबें उठा कर लड़की को वापस कर ही रहा था की उसके हाथ पर किसी ने जोर से प्रहार किया। किताबें हाथ से छुट गईं। नायक ने घूम कर देखा, खलनायक के आँखों से शोले निकल रहे थेः ''साला, हीरो बनता है'' कहने के साथ उसने एक मुक्का नायक के सीने पर जड़ दिया। फिर क्या था नायक पर घूंसों की वर्षा होने लगी। फिल्मों की फेंदूफुल हीरोइनों से उलट वह लड़की तत्काल ही झंझट स्थल से खिसक ली....लड़कियां वाकई में बहुत प्रैक्टिकल होती हैं। चौकीदार के मोबाइल पर गाना चल रहा थाा 'दे दनादन'

१०-१२ घूंसे खाने के बाद नायक को समझ में आया की हिंसा का जवाब हिंसा से देना अब उसका कर्तव्य बनता है। पीटने वाले उसके दाहिने हाथ से तो सावधान थे। पर वह भूल गए थे कि हमारा नायक लबड़हत्था या लेफ्टी था। उसका बायाँ हाथ उठा एक लड़का धूल चाट गया। दाहिने हाथ ने दूसरे को सितारे दिखा दिये। बाएं हाथ को दोबारा मौका ही नहीं मिला। सारा मैदान खाली खाली था। विलेन एंड पार्टी गधे के सिर पर सींग के मानिंद ओझल थी।

नायक ने सिकंदर महान की तरह कक्षा में प्रवेश किया। कन्याओं तालियों से स्वागत किया। हमारा नायक कन्याओं का हीरो बन चुका था।

आगे की कथा जानने के लिए कालेज में मंचित एक अँग्रेजी के नाटक का जिक्र आवश्यक है। इस नाटक में एक पात्र अपने एक घुटने पर बैठ अपनी महिला मित्र का हाथ थाम कर अपने दिल की बात कहता है। इस दृश्य ने हमारे नायक को विशेष रूप से प्रभावित करने के साथ ही गाइड भी किया। उसने इस रूमानी दृश्य को अपने मस्तिष्क में 'नोटेड फार फ्यूचर' का ठप्पा लगा कर गृहण कर लिया।

एक रविवार को मोदी जी की 'मन कि बात' गोष्ठी के बाद चौकीदार का मोबाइल में 'दिल से दिल की बात कही ना जाय' बज रहा था नायक के दिल में भी मन की बात घुमड़ रही थी, जिसे दबाने के लिए उसने पानी पीने की ठानी। वह कूलर से पानी पी कर वह पलटा ही था कि उसे अपनी एक सहपाठी कूलर की ओर आती दृष्टिगोचर हुई। मन में मन की बात और दिमाग में नाटक के घुटने पर बैठे उस पात्र के अलावा वह सब कुछ भूल गया। वह एक घुटने पर बैठने की जगह दोनों घुटनों पर बैठ गया। फिर नाटक के ही अंदाज में, गीले हाथों से ही कन्या का हाथ पकड़ कर उसने अपनी पूरी बात कन्या पर उड़ेल दी। मन हल्का होते ही नायक को गाँव का वाकया की याद आ गई। उसने घबरा कर कन्या की ओर देखा....कन्या मुस्का रही थी.....नायक का दिल उछल कर उसके मुंह में आ गया। उसे विश्वास हो गया कि अब 'मन कि बात' के बाद 'चाय पर चर्चा' का चांस है।

❍❍❍

From selifes to groupies

The craze of clicking selfies is on full boom. Everywhere people are clicking pictures posing in unique forms which remind us about their melodious moments which they enjoyed with each others company.

However, the big question is that day-by-day we are becoming so nuclear with each other that we don't have even one person to click our pictures. This also applies in practical lives. These days' people are confined in their limited space. Nobody even bothers to tell us what is right or wrong and it applies with friends, relatives and family circles.

This is a bitter truth but we all are moving away from each other and I personally feel, our life is beyond selifes.

Now, time has come that we are should unite and join hands with each other and shape a unique India. With no vested interests we will have to save the Brahmin community for better future of our coming generations.

It's my humble request with all the Brahmins to unite and act as a groupie so that we can enhance our share in government, jobs and education sector.

If we missed the chance in next two decades our future generations will curse on us that we had not done anything for them.

Most of the time it is seen that we all have different opinions but I personally feel that we must forget our personal differences and act as a groupie so that we can create a unique and supportive community for our generations.

Thanks

Yatendra Kumar Dixit
Hindustan, Delh
9818434377

❍❍❍

Rituals to be followed daily for balanced life

1. **Getting up early: -** It is very good habit to rise with ray of Sun. Best part of doing mental work is between 4 AM to 6AM. If you are late riser PLEASE do not start with bang. Try to get up half an hour earlier for two weeks. Then gradually you would be able to get up with rays of Sun. this habit will synchronize your body to biological clock
2. **Solitude:-** 10 to 15 minutes of silence daily, will rejuvenate your mind & body. It can be done anywhere anytime of day. But best result will be if done at same place at same time. When you approach the place for solitude brain will automatically go in solitude mood.

   In India it is known as Dhyan
3. **Physicality:-** exercise in what ever form be it walking, jogging, gym or yoga. You may miss a meal not exercise
4. **Vibrant nutrition:-** Fresh food & fruits, avoid canned & preserved food, milk & milk products. BE VEGETARIAN.

   Meals should be taken at regular time. Last meal should be 2hrs before you go to bed. Ten minutes before you sleep & 10 mts after you wake up, you have positive thoughts only. It keeps sleep & whole day in positive mood.

   MINIMUM 7 HOURS SLEEP IS MUST
5. **Breathing:-** Breathe through abdomen only. This is called diaphragmatic respiration. Practice it at least 4 to 5 minutes daily for two minutes daily. This is very famous, effective, stress buster. When stressed lie down or recline in you chair put both hands over abdomen & breathe deeply. With each inspiration abdomen should move forward.
6. **Reading: -** Inculcate habit of reading for 30 minutes at least. It can be any thing informative (news paper not

included, as nowadays it is full of negative reporting). It can be scripture or motivating book. You can read it repeatedly till you have imbibed it fully.

7. **Power spoken words:-** In India power of enchanting ofmantras is well known. It is nothing but self talk to remind self of your goals. Gayatri mantra is good example. But you should know the meaning of mantras for them to be effective. Or you repeat you wish in your mother tongue. Even that will do. For example you repeatedly say I am healthy, I am able, I am calm. See effect in 6 weeks

8. **Character:-** Includes- Industry, compassion, humility, patience, honesty, courage, & of course - forgiveness.

9. **Simplicity:-** Does not mean not having comfort. It only suggest avoid being extravagant.

Last but not the least

10. **MUSIC:-** Not loud & noisy but soft & melodious. It improves the mood when tense or depressed, & is soothing to nerves. It is most effective when going to bed & in early morning

HAPPY & GOOD LIVING

❍❍❍

Rate of Advertisement in Kanya Kubj Vaani

Website www.kanyakubj.org

Coloured Full Page	*Rs. 4000/-*
Coloured Half Page	*Rs. 2000/-*
Black and White Full Page	*Rs. 2000/-*
Black and White Half Page	*Rs. 1000/-*

आधुनिक फरहाद या मगध का चाणक्य
महानशिल्पी दशरथ मांझी
(1934–17 अगस्त 2007)

हीर-रांझा, लैला मजनू, शीरीं-फरहाद की कहानी हर जवां होते दिल में मचलती रहतीं हैं। वह कशिश, इंतज़ार, तड़प महसूस करने का मौका शायद हर किसी को नहीं मिलता। पर.... काश मिल जाता....., यह ख़्वाहिश सबके दिल में रहती है। हर युवा दिल तारे तोड़ लाने का जज़्बा रखता है। परंतु मौका पड़ने पर बहुत कम लोग ही तन कर खड़े रह पाते हैं।

हमारी कथा का नायक युवा तो है पर शायद ही उसने कभी फरहाद का नाम भी सुना हो। शायद ही उसकी शीरीं अप्रतिम सौन्दर्य की स्वामिनी रही हो। हाँ वह रूमानी उपन्यासों के नायकों की तरह गरीब अवश्य था। प्राचीन मगध (आज का बिहार) की मिट्‌टी में पला इसलिए शायद उसमें फरहाद के साथ कुछ गुण चाणक्य के भी थे।

बिहार के गया जिले के गहलौर नामक ग्राम में दशरथ मांझी नाम का व्यक्ति अपने परिवार के साथ रहता था। संपत्ति के नाम पर झोपड़ी और शारीरिक श्रम ही उसकी पूंजी थी। गहलौर ग्राम सभी सुविधाओं से कटा था। गाँव में एक पहाड़ी थी जिसकी वजह से निकटतम अस्पताल या अन्य सुविधाओं के लिए पहाड़ का चक्कर लगा कर जाने में ८० किलोमीटर का सफर तय करना पड़ता था। गाँव का एक मात्र जल-स्रोत भी पहाड़ी पर स्थित था। पहाड़ी पर चढ़ कर पानी लाते वक्त, दशरथ की पत्नी पहाड़ी से फिसल कर गिर गई। उनका मिट्‌टी का घड़ा फूट गया, इतनी मेहनत से लाया पानी बह गया। वह खाली हाथ ही घर पहुंची। कहते हैं मेहनत करने से शरीर के साथ ही दिल भी कठोर हो जाता है। पर दशरथ इसके अपवाद थे। पत्नी की आँखों में विषाद के आँसू देख कर उसके दिल में वैसा ही दर्द हुआ जैसा चाणक्य को पैरों में कुशा घुसने पर हुआ होगा। चाणक्य की भांति उन्होंने भी दुःख-दाता को पराभूत करने की ठानी। चाणक्य को तो मात्र कुशा घास को ही निर्मूल करना था, पर दशरथ ने दानव की भांति खड़े पहाड़ को ही काट डालने का 'भागीरथ-संकल्प कर डाला। अगले दिन से ही वह छेनी-हथौड़ी लेकर पहाड़ को तिल-तिल काटने निकाल पड़े। लोगों ने समझा मांझी पागल हो गए। समय के साथ पागलपन भी खत्म हो जाएगा; परंतु लगनशील लोगों में समय के साथ उद्देश्य पूर्ति का जुनून बढ़ता है। ऐसा ही दशरथ मांझी के साथ हुआ।

समय और अथक परिश्रम ने विषाद शांत किया। मस्तिष्क सक्रिय हुआ। समझ आया की अकेले इस जीवन में पूरा पहाड़ नहीं काटा जा सकता। अतः उसने पहाड़ को काट कर एक रास्ता बनाने का संकल्प किया।

दिन प्रतिदिन उनकी छेनी हथौड़ी चलती रही। लोग जब समझाने में असफल रहे तो सबने मिलकर मन से या बेमन ही उनके भोजन आदि का प्रबंध व छुट-पुट सहायता करना प्रारम्भ कर दिया। गाँव में छेनी की खट-खट सुनाई पड़ती रही, पहाड़ तिल-तिल कटता रहा। २२ वर्ष (१९६२ से १९८२ तक) ८०३६ दिन की अथक परिश्रम के बाद लोगों ने देखा-जहां अदम्य पर्वत था वहाँ दशरथ की छेनी ने ३६० फिट

लंबा, ३० ऊँचा, २५ फीट चौड़ा पहाड़ का हिस्सा काट कर एक रास्ता बना दिया था।

यदि साधारण गणित लगाई जाय तो पता चलेगा कि इस 'भगीरथ' ने प्रति दिन ३३ घन फीट पहाड़ काटा; जो कि अपने आप में एक महान कृत्य है। एक आदमी द्वारा बगैर डायनामाइट अथवा अन्य किसी विस्फोटक या मशीनरी की सहायता के बिना, मात्र छेनी हथौड़ी से इतना दुष्कर कार्य कर जाना 'क्रियां सिद्धिः सत्त्वे भवति, महतां न उपकरणे' की उक्ति को चरितार्थ किया। ऐसा अकेले मनुष्य द्वारा किये गये कर्म की मिसाल दुनियों में नहीं मिलेगी।

दशरथ को एक तरफ पहाड़ काटने का संतोष तो था पर कष्ट इस बात का था कि जिस 'फगुनी' (पत्नी) के लिए उसने इतना साहसी कदम उठाया वह उसे पूरा होते नहीं देख सकीं।

पहाड़ काट कर रास्ता बनाने का समाचार जब पूरे प्रांत और देश में फैला तो प्रशासन ने पथरीले मार्ग पर एक पक्की सड़क का निर्माण करा दिया–

बिहार के मुख्य मंत्री नितीश कुमार ने दशरथ मांझी को बुलाकर उनका स्वागत किया और उन्हें मुख्य-मंत्री के आसन पर बैठाया। एक परोपकारी, लगनशील श्रमजीवी के लिए यह सम्मान उचित ही था। मुख्य मंत्री ने ५ बीघा ज़मीन भी मांझी को दी।

परंतु दशरथ का कृत्य किसी अनुदान का मोहताज नहीं था। पत्नी के आंसुओं ने उसे यह सार्वजनिक कार्य करने को उत्प्रेरित किया था। उसका कोई निज स्वार्थ नहीं था। अतः उस महमानव ने वह ज़मीन गाँव में अस्पताल बनाने के लिए दान कर दी। वर्तमान में अस्पताल उसी ज़मीन पर निर्माणाधीन है।

इन २२ वर्षों की तंद्रा बाद जब दशरथ को होश आया तब तक समय-प्रपात में काफी समय गुज़र चुका था। फगुनी नहीं रही, बच्चे युवा हो चुके थे, खुद उसका शरीर भी युवा नहीं रहा। पूरी दुनियाँ ही बदल चुकी थी। हाँ गहलौर अब उतना दुर्गम नहीं रह गया था। उसके इस अतिमानवीय श्रम से बनाए रास्ते से गया जिले के अत्री और वजीरगंज ब्लाक कि ७६ कि.मी. कि दूरी घट कर मात्र ३ किलोमीटर रह गई। लोग आराम से आ जा सकते थे। गाँव में ही चिकित्सालय भी बन रहा था। उसे और क्या चाहिए था। भले कार्य के लिए विधाता किसी न किसी को माध्यम तो बनाता ही है। यह सौभाग्य भगवान ने मुझे दिया ऐसा दशरथ मांझी का सोचना था।

..........पर काल चिरईया चुग रही, चुनचुन आयू खेत'; जाना तो सभी को पड़ता है केवल बहाने की प्रतीक्षा रहती है। दशरथ के लिए बुलावे का यह बहाना जुलाई २००७ में कैंसर के रूप में आया। बिहार राज्य की ओर से उसका 'आल इंण्डिया इंस्टीट्यूट' दिल्ली में उसका इलाज हुआ। पर इलाज मर्ज का होता है, मृत्यु का नहीं। जीवन में मृत्यु ही शाश्वत है। सो कैंसर के बहाने दशरथ महा-प्रयाण कर गए।

नश्वर शरीर का राजकीय सम्मान के साथ उनके गाँव गहलौर में ही अंतिम संस्कार किया गया। वह रास्ता जिसे दशरथ ने पहाड़ काट कर बनाया था का नाम 'दशरथ मांझी मार्ग' रख दिया गया।

❍❍❍

छपते-छपते

‘टी-कोशिका द्वारा’ असाध्य कैंसर के उपचार में सफलता

(शब्द-परिचय)- टी-कोशिकाएं (टी-सेल्स)- यह मानव शरीर के प्रतिरोधी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन्हें शरीर की ‘प्राक्रतिक मारक कोशिकाएं’ भी कहा जाता है। यह शरीर के लिए हानिकारकतत्व यथा- बैक्टीरिया, वाइरस अथवा कैंसर कोशिका को तत्काल नष्ट करने में सक्षम हैं।

हमारे शरीर तमाम प्रकार की कैंसर कोशिकाएं अपने आप जन्म लेती रहती हैं। यह कैंसर कोशिकाएं शरीर के प्रतिरोधक तंत्र द्वारा प्रारम्भिक अवस्था में ही नष्ट कर दी जाती हैं। परंतु कैंसर एक आतंकवादी की भांति इस प्रतिरोधक तंत्र को धोखा देने में निष्णात होता है। कभी-कभी यह कपटी कैंसर कोशिकाएं इस तंत्र को जब धोखा देने देने में जब सफल हो जाता है, तभी शरीर में कैंसर पनपता है। अस्थि-मज्जा के कैंसर-ल्युकीमियां व गांठों के कैंसर लिंफोमा कहलाते हैं। आम तौर पर यह कैंसर आधुनिक उपचार से अधिसंख्य रोगियों में पूरी रूप से ठीक हो जाते हैं। कुछ मरीजों में यह इलाज से भी ठीक नहीं हो पाते। ऐसी अवस्था में मर्ज लाइलाज हो जाता मरीज की मृत्यु निश्चित हो जाती है।इस दिशा में अभी-अभी चिकित्सकों को टी-कोशिकाओं द्वारा असाध्य ‘मज्जा कैसर’ के उपचार में बड़ी सफलता मिली है। ***देखें चित्र***- स्वयं मरीज की टी- कोशिकाएं शरीर से निकाल कर प्रयोगशाला में कैंसर कोशिकाओं का नाश करने के लिए विशेष रूप से इंजीनियर की जाती हैं।

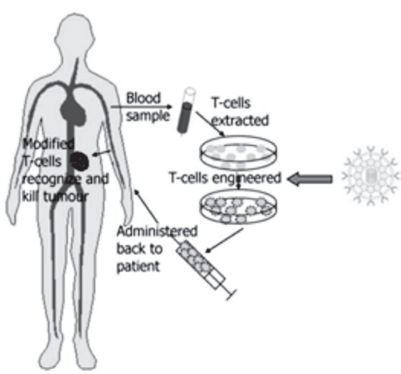

इसके उपरांत इन कोशिकाओं को तेजी से विभाजित कराया जाता है। एक निश्चित संख्या पहुँचने के बाद इन टी कोशिकाओं को फिर से मरीज के शरीर में नस के द्वारा पहुंचा दिया जाता है। शरीर में पहुँच कर तकनीक से अभिमंत्रित यह टी-कोशिकाएं कैंसर को पूरी तरह से नष्ट कर देती है और मरीज पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो जाता है।

अभी तक के प्रयोगों में लगभग **80%** मरीज पूर्ण रूप से रोगमुक्त होगए। यदि यह प्रक्रिया भविष्य में कैंसर उपचार हेतु खरी उतरती है, तो कैंसर असाध्य नहीं रह जायेगा और बगैर सर्जरी या विषाक्त (टाक्सिक) ओषधियों के ही ठीक किया जा सकेगा।

शेष मरीजों में इस उपचार के अप्रिय रिएक्शन (एडवर्स रिएक्शन) हो जाने के कारण उपचार स्थगित करना पड़ता हैं।

अप्रिय (एडवर्स) रिएक्शनः-

1. बहुत एडवांस कैंसर में कैंसर कोशिकाओं का लोड बहुत ज्यादा होता है। टी-कोशिकाओं द्वारा अत्यधिक संख्या में कैंसर कोशिकाओं के मरने से बहुत अधिक मात्र में 'साइटोकाइन' मुक्त होता है। इस साइटोकाइन की अत्यधिक मात्रा शरीर के लिए हानिकारक हो जाती है। जिससे शरीर पर गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं।
2. कैंसर कोशिकाओं के विनाश के लिए प्रशिक्षित टी-कोशिकायों द्वारा कभी-कभी मज्जा की साधारण रक्त निर्माण करने वाली कोशिकाएं भी समाप्त हो जाती है जिससे रोगो को 'एप्लास्टिक एनीमियाँ' (मरीज में रक्त निर्माण की प्रक्रिया समाप्त होना) जाती है।

अतएव इस विधा पर अभी और कार्य होना बाकी है।

❍❍❍

ईश्वर और माँ

गर्भस्थ दो जुड़वाँ शिशु आपस में विमर्श कर रहे थे। एक का कहना था की हम माँ के अंश से अनुप्राणित हैं और पोषित हैं। दूसरा जो सबल था तर्क करता था ''क्या तुमने माँ को देखा है? नहीं! मेरा मानना है कि माँ नाम के तत्व का कोई अस्तित्व नहीं, वह मात्र तुम्हारी भीरुता-जनित कल्पना है''। पहला तर्क करने का व्यर्थ प्रयास करते हुए ''क्यों माँ से ही तो हम पोषित हैं क्या हुआ यदि वह हम उसे देख नहीं सकते।''

ऐसा ही कुछ तर्क-वितर्क ईश्वर के अस्तित्व पर भी होते हैं। 'प्रसू' का मतलब जन्म देने वाला। यह शब्द माँ और ईश्वर दोनों ही के लिए प्रयोग किया जाता है। ईश्वर का एक नाम प्रणव भी है। उसका भी मतलब जीवन देने वाला ही है। माँ और ईश्वर में इतनी साम्यता...! जिस प्रकार हम माँ का अस्तित्व चाह कर भी नहीं नकार सकते क्या हम ईश्वर को नकार सकते हैं...?

Courtsey- **Gaurav Shukla**
Ahamdabad

श्रद्धांजली

पदम भूषण
श्री राम कृष्ण त्रिवेदी
डी०लिट० एवं
एलएल० डी० (मानव)

आई०ए०एस० (अ०प्रा०)
पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त
एवं राज्यपाल गुजरात

जीवन वृतान्त

श्री रामकृष्ण त्रिवेदी जी का जन्म मूलरूप से त्रिवेदीगंज (जनपद बाराबंकी) के निवासी गृहस्थ संत स्व० पं० महावीर प्रसाद त्रिवेदी के यहाँ मिन्जियान (बर्मा) में १ जनवरी १९२१ को हुआ था। इन्होंने रंगून से मैट्रीक्यूलेशन तथा लखनऊ विश्वविद्यालय की बी०ए० (आनर्स) एवं एम०ए० (दर्शनशास्त्र) की परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

जुलाई १९४३ में सिविल सेवा में प्रवेश के बाद वह कानपुर एवं इलाहाबाद जैसे महत्वपूर्ण जनपदों के जिलाधिकारी तथा इलाहाबाद मण्डलायुक्त रहने के अतिरिक्त प्रदेश सरकार में चिकित्सा एवं स्वास्थ, ऊर्जा, वित्त तथा गृह विभागों के सचिव रहे। वर्ष १९६८ तथा १९७० में उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन के समय वह राज्यपाल की सलाहकार समिति के सदस्य भी बनाए गये।

तत्पश्चात केन्द्र सरकार में नवसृजित आपूर्ति विभाग तथा योजना आयोग के प्रभारी अपर सचिव के रूप में कार्य करने के उपरान्त इन्हें वर्ष १९७५ में कार्मिक प्रशासन के उच्चतम पद, सचिव कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग नियुक्त किया गया जहाँ इन्होंने केन्द्र तथा राज्यों के स्तर पर प्रशासनिक सुधार के लिये अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए।

राज्य एवं केन्द्र सरकार के अन्तर्गत नियोजन एवं विकास, वित्तीय प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शिक्षा एवं सार्वजनिक उपक्रमों के क्षेत्र में विशिष्ठ सेवाओं के उपरान्त वर्ष १९७९ में शासकीय सेवा से निवृत्त हुए।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश के अपर शिक्षा निदेशक एवं अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान में कार्य करने के उपरान्त दिल्ली में आई०ए०एस० प्रशिक्षण स्कूल के उप प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए मसूरी में राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी के रूप में स्थापित किये जाने की योजना बनाने एवं उसका क्रियान्वयन कराके प्रशिक्षण विशेषज्ञ एवं झाँसी विश्व विद्यालय के कुलपति के रूप में इनका विशिष्ठ योगदान स्मरणीय रहेगा।

सार्वजनिक उपक्रमों के क्षेत्र में अध्यक्ष, उ०प्र० विद्युत परिषद द्वारा इनके कुशल नेतृत्व में प्रदेश में विद्युत आपूर्ति में सुधार हेतु कई कल्पनाशील योजनाएं प्रारम्भ की

गई। बाद में अध्यक्ष, राज्य वस्त्र निगम तथा सहकारी कताई मिलों एवं तदुपरान्त १४ सहकारी बड़ी औद्योगिक इकाइयों वाली ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन (बी०आई०सी०) के अध्यक्ष के रूप में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा।

शासकीय कार्य में व्यस्तता के बाद भी श्री त्रिवेदी विभिन्न सार्वजनिक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं वह उ०प्र० संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष एवं कला भारती, लखनऊ के कुलपति तथा उ०प्र० योजना आयोग के तथा युनाटिडनेशन्स को संस्था ESCAP के क्वालालम्पुर में विकास प्रबन्धन केन्द्र के सलाहकार मण्डल के सदस्य रहे हैं और भारतीय लोक प्रशासन संस्थान दिल्ली के उपाध्यक्ष रहे हैं।

अक्टूबर १९८० में उन्हें केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त नियुक्त किया गया जहाँ अल्प समय में इनके द्वारा सार्वजनिक सेवाओं तथा विशेषरूप से सार्वजनिक उपक्रमों में भ्रष्टाचार नियंत्रण हेतु कई नए कदम उठाए गए।

जून १९८२ में इन्हें भारत का मुख्य आयुक्त नियुक्त किया गया। इनके कार्यकाल में १९८४ का लोक सभा के लिये सामान्य निर्वाचन के अतिरिक्त विषम परिस्थितियों में पंजाब तथा आसाम राज्यों सहित कई राज्यों में चुनाव कराए गये। इनके द्वारा किये गये कई महत्वपूर्ण चुनाव सम्बन्धी सुधारों पर अर्थपूर्ण राष्ट्रीय बहस प्रारम्भ हुई।

१९८६ के गणतंत्र दिवस पर उन्हें राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। फरवरी १९८६ से अप्रैल १९९० तक वह गुजरात राज्य के राज्यपाल रहे हैं। जहाँ उनकी ग्रीनिंग ऑफ गुजरात नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई। उन्हें वर्ष १९९५ में लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा डी०लिट० तथा वर्ष १९९७ में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा एलएल०डी० की मानद उपाधियों द्वारा सम्मानित किया गया। अपने जीवनकाल में वह दो बार विश्व परिक्रमा करके २७ देशों का भ्रमण कर चुके है।

❍❍❍

खर्राटे ?

खर्राटे नैजोफैरिंक्स (नाक और गले के बीच का भाग) में अवरोध की वजह से आते हैं। बच्चों में एडिनायड्स, और बड़ों में हाइपो-थायरायड अथवा नैजो-फैरिंक्स की मांसपेशियों के ढीले होने से आते हैं। खर्राटे लेने वाले की नींद पूरी नहीं होती इसलिये अनिंद्रा जनित चिड़चिड़ाहट, उत्तेजना, व इसके कारण मोटापा, ब्लडप्रेशर, डायबिटीज होने की संभावना बढ़ जाती है। चरम अवस्था में खर्राटे आकस्मिक मृत्यु का कारण भी हो सकते हैं। देखा गया है की नियमित रूप से दिन में दो बार 'शंख' बजाने से दो तीन दिन में ही खर्राटों की तीव्रता में 60% तक की कमी आ जाती है। एडिनायड्स के लिए मात्र सर्जरी ही विकल्प है।

श्रद्धांजली

उर्मिला मिश्रा

एक दृंढ़ व्यक्तित्व

एक ज़िदगी में जितने उतार चढ़ाव उर्मिला मिश्रा जी ने देखें, शायद ही किसी और ने देखे होंगे। उन्नाव के मूर्धन्य प्रतिष्ठित परिवार में जन्म, परिवार की सबसे छोटी संतान होने के कारण सबसे अधिक लाड, प्यार, हर हठ पूरा होता, अच्छे परिवार में विवाह, सुंदर, समर्पित पति, मुंबई में निवास....कुल मिला कर वह हर खुशी जो एक युवती सोंच सकती है, उन्हें उपलब्ध थी। मगर किसी के भी जीवन में हमेशा सुख ही सुख नहीं रह सकता। इतने सुखों के बाद जब दुखों की बाढ़ आई तो..दुखों का पारावार नहीं रहा। पति से विछोह, नवजात पुत्र की प्रसव में ही मृत्यु, देखभाल के लिए न कोई ससुराल से न मायके से। देखभाल के लिए उनकी बहन का बेटा जो मेडिकल कालेज में इंटर्नशिप कर रहा था। एक ही रात में छः बोतल खून, बारह ग्ल्यूकोज़ चढ़ने के बाद किसी तरह जान बची तो किडनी जवाब दे गई। पैर की नस काट कर जीवन रक्षक दवाईयाँ चढ़ने के कारण स्किन गैंगरीन.....नतीजा जिंदगी भर का लंगड़ापा। कुछ समय बाद जब पति से मिलने का समय आया तो पति की आकस्मिक मृत्यु। पति की मृत्यु के बाद बड़े भाई और भाभी ने सहारा दिया। मगर जिस भाई के यहाँ वह हमेशा प्रेम से रहीं वहाँ ऐसी (असहाय) परिस्थिति में रहना उनके स्वाभिमानी स्वभाव के अनुकूल नहीं था। पुराने ज़माने की शिक्षा (विद्या-विनोदिनी, विशारद) आज के युग में कोई मूल्य नहीं रखते थे, सो दोबारा प्राइवेट हाईस्कूल पास कर मातृ एवं शिशु कल्याण विभाग में ए.एन.एम. के पद पर काम किया। वेतन मात्र *1200=00* रु. प्रतिमास। इतने कम वेतन में रहना खाना संभव नहीं था। सो अपने कुछ गहनों को बेच उस राशि को फिक्सड कराकर उसके ब्याज से काम चलाना प्रारम्भ किया। विभाग के भ्रष्टाचार से अत्यंत दुखी होती थी। कभी-कभी उन्हें भी 'जज़िया' देना पड़ता था। परंतु किसी प्रकार वह स्वयं कमल की भांति निष्कलुष रहीं। अकेलेपन से घबराकर छुट्टियों में रिश्तेदारों के यहाँ घूम अवश्य आती थीं। अति-संवेदनशील होने की वजह से किसी को भारू न लगें कहीं भी दो चार दिन से अधिक प्रवास नहीं करतीं। आज भी उनके कष्टों को स्मरण करके परिचित विचलित हो जाते हैं। मगर जैसे उन्होंने सुख भोगे वैसे ही निरपेक्षता से दुखों को भी सहा। कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया।

एक बार वह कान्यकुब्ज सभा के होली-मिलन समारोह में आई गरीब छात्राओं के निमित्त बहुत मना करने पर भी रु. *500=00* कन्याओं हेतु दान कर गई।

उनके परिवार में कैंसर का इतिहास रहा है। उनकी माँ व दो बड़ी बहनें कैंसर से ही गई थीं। सो उन्हें कैंसर हुआ और मात्र दो महीने की अवधि में उन्होंने संसार छोड़ दिया।

At times death is great relief

स्मृति में

डॉ० डी.एस. शुक्ल

❍❍❍

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for life membership of Kanyakubj Sabha & / or Kanyakubj Vaani magazine

1. **Name of Member :** ....
2. **Age :** ....
3. **Gotra :** ....
4. **Father's/Husband's Name :** ....
5. **Address :** ....
   ....
6. **Landline/Mobile No.:** ....
7. **Email :** ....
8. **Name of spouse / Father's Name :** ....
9 **Education :** ....

10. **Occupation (Post / Designation):**

Unmarried Children **Name** **Age** **Education** **Job**

a) ....

b) ....

c) ....

11. **Any other information :**

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani** and willing to pay Rs..................................in Cash/Cheque No. .... Name of Bank .... favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow" payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing :** ....

Date : (Signature)

......✂......................................✂......................................✂......

Reciept

Received with thanks Rs. .... in Cash / Cheque No. .... Name of Bank .... from .... who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani.**

(Signature)

1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha** is **Rs.500/- (ac. No.20038640960, IFSC Code-ALLA0210062 Alahabad bank main branch, hazratganj, Lucknow). Form with this cheque to be sent to shri upendra Mishra 4/53 vishal khand gomti nagar lucknow-226010**
2. Contribution for life membership of **Kanyakubja Vaani** is **Rs.1100/- (Ac.No. 710601010023908, IFSC Code-VJB0007106,vijaya bank, hazratganj branch Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi Haider Mirza Lane, Golaganj Lucknow**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani** is **Rs.40/- + postage charges**.

ॐ श्री गुरु देवाय नमः

With best Compliments from:...............

SHREE GURU KRIPA ASSOCIATES

Designing & Construction
Labour Rate with Material

Contact for :
9415580950
7754929415

Add.: Near Krishna Vihar Colony Gate,
Raibareli Road, Lucknow.

मेघदूत
अब मधुमेह की
वजह से जिन्दगी के
साथ समझौता नहीं!
मधुशून्य चूर्ण
आयुर्वेदिक औषधि
✓ मधुमेह को कन्ट्रोल करने में सहायक।
✓ शरीर को नवस्फूर्ति प्रदान करता है।
✓ हृदय दुर्बलता को नियन्त्रित करता है।
*Dosage as directed by the physician
मेघदूत
Madhu
Shoonya
POWDER
मधुमेह को नियन्त्रित करने की आयुर्वेदिक औषधि
करेला
तुलसी
अश्वगन्धा
विजयसार
नीम
जामुन
गुणमार
शिलाजीत
9235623142
info@meghdootherbal.com
/meghdootherbal